जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 23 प्रभात कोटा, बुधवार 6 नवम्बर, 2024 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

23 नवम्बर को वायनाड की संसदीय सीट के चुनाव बाद नये संतुलन बनेंगे लोकसभा में?

जैसी की उम्मीद है, प्रियंका गांधी जीतेंगी तथा कांग्रेस में दो टीम उभरेंगी लोकसभा में, राहुल गांधी की टीम व प्रियंका गांधी की टीम

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। ऐसी आशा की जा रही है कि अगर 23 नवम्बर को प्रियंका गांधी वायनाड से लोकसभा के लिए निर्वाचित हो जाती हैं तो कांग्रेस पार्टी के अन्दर तथा संसद में सत्ता के संतुलन में एक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

संसद का शीतकालीन सत्र 25 नवम्बर को शुरू होगा तथा इस सत्र के दौरान, लोकसभा और राज्यसभा में गांधी परिवार के तीन सदस्य पहली बार दिखाई देंगे।

जहां पार्टी के दो ताकतवर नेता सोनिया गांधी तथा मल्लिकार्जुन खड़गे राज्यसभा में होंगे, वहीं सबकी निगाहें लोकसभा पर लगी होंगी, जहां राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी मौजूद होंगे।

लोकसभा में ही सत्ता की असली राजनीति दिखाई देगी।

- राहुल व प्रियंका की राजनीतिक स्टाइल में काफी अन्तर है। राहुल गांधी ज्यादा समय सदन में गुजारने में विश्वास नहीं रखते, और हर समय प्रतिद्वंदी पार्टी से हर मौके पर पंजा लड़ाने में रुचि नहीं रखते।
- पर प्रियंका गांधी ''हैण्ड्स ऑन'' राजनीतिज्ञ हैं, तथा सदन में सत्ता पक्ष से भिड़ने का कोई मौका गंवाना नहीं चाहतीं, और चाहेंगी कि उनकी महिला ब्रिगेड व समर्थकों की जमात उनके बगल में खड़ी रहे, सत्तापक्ष से लोहा लेने के लिए। अतः शीघ्र ही प्रियंका गांधी अपना एक और नया ''पावर सेन्टर'' खड़ा कर लेंगी।
- इसी प्रकार प्रियंका गांधी संगठन में भी सक्रिय होंगी, तथा अपने टीम के लोगों को और पद दिलाना चाहेंगी, अतः देखना यह है कि प्रियंका कितनी बड़ी व शक्तिशाली टीम बना पाती हैं।
- यह देखना काफी रोचक रहेगा कि कांग्रेस का कौन सा नेता किस टीम से जुड़ने का प्रयास कर रहा है।

प्रियंका ने अपने लिए किस प्रकार की भूमिका सोच रखी है इस बारे में काफी अटकलें चल रही हैं।

राहुल गांधी हर मौके पर नज़र आने वाले राजनेता नहीं हैं तथा वे सदन में बहुत ज्यादा समय गुजारने में विश्वास नहीं रखते।

ऐसी आशा की जा रही है कि प्रियंका लोकसभा में हमेशा नज़र आने वाली नेता के रूप में अपनी पूरी ''फार्म'' में रहेंगी तथा पार्टी के बहुत सारे सांसद, जिनमें पार्टी की महिला ब्रिगेड भी शामिल है, हर वक्त उनके साथ खड़े दिखाई देंगे।

राहुल गांधी की टीम को यह भी आशंका है कि चुनावी राजनीति में प्रियंका गांधी के प्रवेश से पार्टी में सत्ता का एक नया ढांचा अस्तित्व में आयेगा। यही कारण है कि राहुल गांधी, प्रियंका के चुनावी राजनीति में आगमन बहुत ज्यादा उत्कंठित नहीं थे।

राहुल गांधी के दायें हाथ माने जाने वाले के. सी. वेणुगोपाल वायनाड में पूरा समय दे रहे हैं क्योंकि वे प्रियंका गांधी के साथ ''वर्किंग रिलेशनशिप'' बनाना चाहते हैं। दरअसल, ऐसा माना जा रहा है कि नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा पद से हटाने में अब प्रियंका गांधी की ज्यादा चलेगी।

सभी लोगों की नज़रें इन भाई-बहिन पर हैं कि इनमें से कौन किस दिशा में जाता है तथा प्रियंका गांधी अपने सहयोग के लिए कितने ज्यादा सक्षम एवं समर्पित लोग तैयार कर सकती हैं।

अब ऐसी आशा की जा रही है कि अब प्रियंका संगठन में स्वयं को ज्यादा मजबूत एवं प्रबल बनायेंगी तथा अपने कुछ विश्वस्त लोगों को संगठन में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'यूपी मदरसा एक्ट संवैधानिक रूप से वैध है'

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। सर्वोच्च न्यायालय ने मंगलवार को ''यू.पी. मदरसा एजूकेशन एक्ट, 2004'' के संवैधानिक वैधता का समर्थन करते

- सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट का आदेश रद्द किया, जिसमें यूपी मदरसा एक्ट को असंवैधानिक बताया गया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

''जे.एम.एम.'' यानि ''जमकर मलाई मारो''

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवंबर। मंगलवार को झारखण्ड के हटिया और लोकर

- केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने झारखंड की एक चुनावी सभा में झारखंड मुक्ति मोर्चा पर भारी भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए टिप्पणी की।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के बाद भारी हिंसा होगी ?

आशंका इसलिए है, क्योंकि, मतदान सर्वेक्षकों का मानना है कि, दोनों उम्मीदवारों में से कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं जीत पाएगा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। अमेरिका में अनियमितता के माहौल और इन खबरों के बीच मतदान हुआ है कि चुनाव नतीजे आने के बाद राजनैतिक असंतोष व हिंसा हो सकती है। देश भर के मतदान केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है खास तौर से उन स्टेट्स में जहां मुकाबला बेहद कड़ा है। राजनैतिक विशेषज्ञों का अनुमान है कि 6 जनवरी 2020 को ट्रम्प के हारने के बाद कैपिटल हिल के जो हिंसा व तोड़फोड़ हुई थी वही स्थिति फिर से पैदा हो सकती है।

चैट जी पीटी द्वारा सृजित नॉस्ट्रडैमस के ए.आई. संस्करण ने भविष्यवाणी की है कि दोनों में से कोई भी प्रत्याशी पूरी तरह से नहीं जीतेगा। इसने चुनाव नतीजे के बाद अराजकता पैदा होने की बात कही है। नॉस्ट्रडैमस 16वीं सदी के फ्रैंच भविष्यवक्ता भौतिक शास्त्री तथा संत थे उनके लेखन में भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणियां निहित हैं, जिनमें युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं और राजनैतिक हस्तियों का उदय प्रमुख हैं।

ए.आई. की भविष्यवाणी के अनुसार ''अंतिम क्षणों के एक ट्विस्ट हो सकता है और कोई भी कुर्सी पर दावा करने की स्थिति में नहीं होगा।'' इसका अर्थ है ट्रम्प और हैरिस दोनों में से किसी को भी स्पष्ट जीत नहीं मिलेगी। अगर ऐसा हुआ तो अमेरिकन संविधान के बारहवे संशोधन के अनुसार हाउस ऑफ रिप्रैजैंटेटिव्स प्रतिनिधि सभा, विजेता का निर्णय करेगा। ऐसी स्थिति में एक प्रत्याशी को जीतने के लिए सदन का बहुमत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सोलहवीं शताब्दी के भविष्य वक्ता नॉस्ट्रडेमस के, चैट जी.पी.टी. द्वारा तैयार ए.आई. संस्करण की भविष्यवाणी भी यह ही जता रही है कि, ट्रम्प व हैरिस दोनों राष्ट्रपति का चुनाव नहीं जीत पायेंगे।
- इसका मतलब यह लगाया जा रहा है कि न तो ट्रम्प और न ही हैरिस साफ-सुथरी स्पष्ट जीत हासिल कर पायेंगे।
- अगर ऐसा हुआ तो हाउस ऑफ रिप्रज़ैन्टेटिव ही बहुमत से निर्णय लेगा कि किसे राष्ट्रपति बनाया जाये।
- इस अनिश्चितता की स्थिति में ए.आई. का मानना है कि तनाव बढ़ेगा, तथा हिंसा फैलेगी।
- हिंसा की आशंका के कारण, पोलिंग स्टेशन्स पर सुरक्षा सुदृढ़ की गई है।
- सर्वे के अनुसार केवल 29 प्रतिशत अमेरिकी मानते हैं कि, ट्रम्प अपनी हार आसानी से, शांति से स्वीकार कर लेंगे।
- मजे की बात यह भी है कि, 20 प्रतिशत अमेरिकी मन से हिंसा का समर्थन करते हैं, उनका मानना है कि हिंसा आवश्यक है देश के हालात सही करने के लिए, देश को सही दिशा में ले जाने के लिए।

सत्यमेव जयते
Government of Rajasthan
RISING™ RAJASTHAN

एजुकेशन प्री-समिट

दिनांक: 6 नवम्बर 2024

मुख्य अतिथि: माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा

कार्यक्रम स्थल: होटल इंटरकॉन्टिनेंटल, टोंक रोड, जयपुर

नई शिक्षा नीति: शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य की नई संभावनाएं (कौशल और डिजिटल तकनीक)

ज्ञान संकल्प पोर्टल
राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद्
FICCI

विचार बिन्दु

धन ना भी हो तो आरोग्य, विद्वता सज्जन-मैत्री तथा स्वाधीनता मनुष्य के महान ऐश्वर्य हैं। –अज्ञात

स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण के खतरों को समझने की जरूरत

इंडियन मेडिकल एसोशिएशन (आईएमए) के अध्यक्ष डॉ. आर. वी. अशोकन ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर अपनी पोस्ट में लिखा है कि कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में जो हुआ, उसने देश के मेडिकल कॉलेजों में फैली सड़ांध को सामने ला दिया है। चिकित्सकों के सर्वोच्च संगठन का अध्यक्ष यदि ऐसा कहता है तो उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। बाद में एक भेंटवार्ता में उन्होंने अपनी इस टिप्पणी को व्याख्यायित भी किया है। किसी को अच्छा लगे या न लगे, डॉ. अशोकन देश में मेडिकल क्षेत्र में आई गिरावट के लिये उसके निजीकरण को मानते हैं। वे कहते हैं कि इसकी शुरुआत सरकार द्वारा लोगों की स्वास्थ्य सेवा संबंधी जरूरतों को निजी हाथों में सौंपने से हुई है। खुद सरकार के आंकड़ों का विश्लेषण भी यही बताता है। जैसे देश में स्वास्थ्य सेवा पर कुल खर्च जीडीपी का करीब 3.9 प्रतिशत है, जिसमें सरकार का योगदान 1.1 प्रतिशत है और निजी क्षेत्र का योगदान 2.8 प्रतिशत है।

इसका मतलब है कि निजी क्षेत्र स्वास्थ्य सेवा पर सार्वजनिक क्षेत्र से दो गुना ज्यादा खटच करता है। यह बहुत स्पष्ट है कि स्वास्थ्य सेवाओं से अपना पल्ला झाड़ते हुए सरकार ने निजीकरण की जो राह पकड़ी है उसका असर मेडिकल के किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि सर्वत्र हुआ है। सरकारी नीति परिवर्तन से सार्वजनिक क्षेत्र में नये पदों का सृजन लगभग बंद हो गया। मेडिकल अधिकारियों की भर्ती पिछली बार कब हुई किसी को याद नहीं। नई नीतियों के चलते बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में मेडिकल अधिकारियों की संख्या नहीं बढ़ी है और स्वास्थ्य व्यवस्था अंदर से खोखली होती चली गई है। सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था में भी तदर्थ नियुक्तियों का चलन आम हो गया है। परंपरागत व्यवस्था को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की समानांतर व्यवस्था बना दी गई है। ऐसा सार्वजनिक निवेश की कमी और स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा को निजी क्षेत्र को सौंपने के कारण हुआ है। चूंकि एमबीबीएस डॉक्टरों में बहुत अधिक बेरोजगारी है, इसलिए पोस्ट-ग्रेजुएशन करने के अलावा उनके सामने कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि जब तक उनके पास विशेषज्ञता न हो, हर एमबीबीएस स्नातक अपने को बेकार महसूस करता है। दूसरी तरफ हर साल, एक लाख दस हजार छात्र एमबीबीएस पास करते हैं, लेकिन केवल 65,000 पोस्ट ग्रेजुएट सीटें हैं। इसलिए, हर साल, 45,000 एमबीबीएस स्नातकों को पोस्ट-ग्रेजुएशन के लिए प्रवेश नहीं मिलता है। वे इसे छोड़ने या कुछ और करने से पहले कम से कम तीन प्रयास करते हैं। फिर उन एमबीबीएस स्नातकों की संख्या की भी गणना करें जो कोचिंग सेंटरों में रह जाते हैं! तो, डेढ़ लाख छात्र अपना समय कोचिंग सेंटरों में बिताते हैं क्योंकि उनके पास भी और कोई विकल्प नहीं है। एक तरफ सरकार मेडिकल अधिकारियों की भर्ती नहीं कर रही है, और दूसरी तरफ सिर्फ़ एमबीबीएस की डिग्री लेकर कोई अपनी क्लिनिक नहीं खोल सकता। हम पाते हैं कि एमबीबीएस किए हुए युवाओं को दिहाड़ी मज़दूरी पर रात की नौकरी करनी पड़ती है।

क्या पश्चिम बंगाल के अस्पताल में हुई दुभाग्यपूर्ण घटना जैसी सारी समस्याएं तब शुरू हुईं जब सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा से हटकर इसे निजी क्षेत्र को दे दिया? इस सवाल के जवाब में डॉ. अशोकन कहते हैं कि कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में जो हुआ, वह कोई अकेली घटना नहीं थी। अभी स्थिति ऐसी है कि इस तरह की घटनाएं पूरे देश में होती रहेंगी। बंगाल को क्यों दोष दें? हर राज्य में यही स्थिति है। हर मेडिकल कॉलेज में यही स्थिति है। हर मेडिकल विभाग में यही स्थिति है। अधिक शौचालय बनाने और सीसीटीवी लगाने से यह नहीं बदलेगा। ऐसी हिंसा की घटनाएं स्वास्थ्य में निवेश की कमी के कारण है। अब हालात ऐसे बन गये हैं कि एक तरफ सरकारी संस्थानों में निवेश और मानव संसाधन की कमी है और दूसरी तरफ निजी क्षेत्र के अस्पताल उद्योग बन गये हैं। तो गरीब लोग लोग स्वास्थ्य सेवा के लिए कहां जाएंगे? इसी वजह से लोगों में गुस्सा है और डॉक्टर आसान निशाना बन रहे हैं क्योंकि वे मरीज के करीब होते हैं। डॉक्टर स्वास्थ्य व्यवस्था का चेहरा होते हैं, खासकर रेजिडेंट डॉक्टर और ड्यूटी डॉक्टर जो आपात स्थिति और हताहतों की देखभाल करते हैं। स्वाभाविक रूप से वे निशाने पर होते हैं। डॉक्टर भी उस तरह से प्रतिक्रिया नहीं कर सकते जिस तरह से एक आम आदमी सड़क पर प्रतिक्रिया करता है। इसके लिये डॉ. अशोकन कहते हैं: वे भी इंसान हैं...इसलिए पश्चिम बंगाल में जो हुआ, वह थमने का नाम नहीं ले रहा है। और इसका कारण स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सड़न है। आपको समझना चाहिए कि जो हम वहां देख रहे हैं, वह बीमारी नहीं है; यह केवल लक्षण है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को कैसे चलाया जाना चाहिए, इस मामले में तमिलनाडु सबसे आगे है। उनके चुनिंदा प्राथमिक केंद्रों में सीजेरियन भी होते हैं, और वे 24 घंटे खुले रहते हैं। केरल में, उनके पास दो ओपीडी हैं, एक सुबह और एक शाम को। इन दोनों राज्यों में मधुमेह और उच्च रक्तचाप के लिए घर-घर जाकर दवाई दी जाती है। डॉक्टरों की अगुआई वाली टीमें घर-घर जाकर ब्लड ग्लूकोज और ब्लड प्रेशर की जांच करती हैं और एक महीने की दवाई देती हैं। राजस्थान में ऐसा क्यों नहीं हो सकता!

डाक्टरों पर हिंसा की घटनाएं तब होती है जब लोग निराश हो जाते हैं। जब समाज के विशेषाधिकार प्राप्त लोगों अच्छा चिकित्सा उपचार मिलता है जबकि दूसरे लोग असहाय महसूस करते हैं। इसका कारण हैं सार्वजनिक क्षेत्र में चिकित्सा के बुनियादी ढांचे और मानव संसाधनों में निवेश की कमी, और उसके साथ 39;लाभ के लिए39; कॉर्पोरेट स्वास्थ्य सेवा की अवधारणा। सिद्धांत रूप में, स्वास्थ्य सेवा में लाभ के लिए उद्योग को लाना सही नहीं कहा जा सकता है। लाभ के लिए बीमा एजेंसियों द्वारा लाभ के लिए अस्पताल चलाए जाने का मॉडल अमरीका से आयातित है जहां सकल घरेलू उत्पाद का 15 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवा में जाता है, लेकिन 20 प्रतिशत अमेरिकियों को देखभाल नहीं मिलती है। यहां डॉक्टर से तुरंत मिला जा सकता है, जबकि यू.के., यू.एस., ऑस्ट्रेलिया, कनाडा या न्यूजीलैंड में ऐसा नहीं है।

यह सवाल पूछा जाना उचित ही है कि क्या हमारे नीति निर्माता देश को उस राह पर ले जाना चाहते हैं? भारत में अस्पतालों का जिस प्रकार निगमीकरण हो रहा है उसमें सभी जगह छोटे और मध्यम निजी अस्पताल बंद हो रहे हैं। आजकल कोई भी नया डॉक्टर छोटा अस्पताल नहीं खोलता। ऐसी हालत समाज के लिए नुकसानदेह है। आज, चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा आधिकारिक तौर पर एक उद्योग बन गई है। ऐसे में हाल ही में आई इस खबर पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि विलासिता वाले आवास बनाने वाली एक कंपनी भी अपना विस्तार करते हुए अब स्वास्थ्य सेवा के बाज़ार में कूद पड़ी है और अस्पताल खोल रही है।

विलासिता वाले कॉर्पोरेट अस्पतालों को मेडिकल टूरिज़्म के नाम पर बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार केवल बीमा को प्रोत्साहित कर रही है क्योंकि वह स्वयं लोगों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने से अपना पिंड छुड़ा रही है। ऐसे में अधिक से अधिक डॉक्टर स्वतंत्र रूप से प्रेक्टिस करने के बजाय इन बड़े मुनाफे वाले अस्पतालों के कर्मचारी बन रहे हैं। व्यवस्था को ठीक करने की बजाय कानून और नीति निर्माता पलायन की राह पकड़ रहे हैं और बाज़ार की ताकतों के हाथों में खेल रहे हैं। पिछले दशक में, 2012 में, 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए, डॉ. श्रीनाथ रेड्डी की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समूह ने जो दस्तावेज़ बना कर दिया था उसमें सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा की सिफारिश की गई थी, जिसका मतलब था कि बुनियादी स्वास्थ्य कवर सरकार द्वारा बिना किसी बीमा के, बिना किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के सुनिश्चित किया जाय, तथा स्वास्थ्य सेवा में रिश्ता रोगी और सरकार के बीच हो। मगर अब नीति आयोग हाथ खड़े कर रहा है और कह रहा है कि दस साल के समय में सरकार सभी के लिए स्वास्थ्य कवर प्रदान नहीं कर सकती है। इसका अर्थ हुआ कि 92 करोड़ लोगों के लिए, जिनके पास कोई स्वास्थ्य कवर नहीं है, सरकार उन्हें निजी बीमा उद्योग को सौंप देंगी। बड़े प्राइवेट अस्पताल भरपूर विज्ञापन कर रहे हैं और कमा रहे हैं, जबकि मरीज आसमान छूती चिकित्सा कीमतों के कारण लुट रहा है। बाजार खुश है कि भारतीय स्वास्थ्य सेवा बाजार, जिसका मूल्य 2016 में 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, अब 2025 तक 638 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने जा रहा है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र, 2024 तक, भारत के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है, जो कुल 7.5 मिलियन लोगों को रोजगार देता है। निजीकरण के चलते राजस्व और रोजगार दोनों के मामले में स्वास्थ्य सेवा भारत के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक बन गई है। स्वास्थ्य सेवा में अस्पताल, चिकित्सा उपकरण, नैदानिक परीक्षण, आउटसोर्सिंग, टेलीमेडिसिन, चिकित्सा पर्यटन, स्वास्थ्य बीमा और चिकित्सा उपकरण शामिल हैं। नीतिगत रूप से दिशा बदल कर सरकार को स्वास्थ्य सेवा का मुख्य प्रदाता बनना होगा और उसे उसमें अधिक धन लगाना होगा। स्वास्थ्य सेवा को निजी उद्योग के हाथों में नहीं सौंपना चाहिए। जन स्वास्थ्य संविधान की राज्य सूची में है इसलिए यह अपेक्षा राजस्थान सरकार से है कि वह केरल और तमिलनाडु से सीखे जहां सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र को कड़ी टक्कर देता है। बीस साल पहले, इन दोनों राज्यों में दो तिहाई प्रसव निजी क्षेत्र में हो रहे थे। आज, दो तिहाई प्रसव सार्वजनिक क्षेत्र में हो रहे हैं।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को कैसे चलाया जाना चाहिए, इस मामले में तमिलनाडु सबसे आगे है। उनके चुनिंदा प्राथमिक केंद्रों में सीजेरियन भी होते हैं, और वे 24 घंटे खुले रहते हैं। केरल में, उनके पास दो ओपीडी हैं, एक सुबह और एक शाम को। इन दोनों राज्यों में मधुमेह और उच्च रक्तचाप के लिए घर-घर जाकर दवाई दी जाती है। डॉक्टरों की अगुआई वाली टीमें घर-घर जाकर ब्लड ग्लूकोज और ब्लड प्रेशर की जांच करती हैं और एक महीने की दवाई देती हैं। राजस्थान में ऐसा क्यों नहीं हो सकता!

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

40 वर्ष तक की युवा महिलाओं में स्तन कैंसर का बढ़ता जोखिम

डॉ. अनुभा जैन

बैंगलूरू के अस्पतालों ने चिंता व्यक्त करते हुये बताया कि पिछले पांच वर्षों में 20 से 40 वर्ष उम्र की महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के मामलों में सौ प्रतिशत वृद्वि दर्ज की गयी है। स्तन कैंसर सबसे अधिक 40-60 वर्ष की आयु की महिलाओं को प्रभावित करता है, जबकि आज 40 वर्ष से कम उम्र की युवा महिलाओं में भी इसका डाइगनोसिस तेजी से हो रहा है।

कर्नाटका के साथ तमिलनाडु, नई दिल्ली, तेलंगाना भारत के उन चार राज्यों में शामिल है जहां महिला स्तन या ब्रेस्ट कैंसर के मामले सर्वाधिक संख्या में दर्ज किये जा रहे हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई.सी.एम.आर) - नेशनल सेंटर फॉर डिसीस इंफोरमेटिक्स एंड रिसर्च (एन.सी.डी.आई.आर) स्टडी के अनुसार महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर प्राथमिक कारण है भारत में होने वाली महिला मृत्यु दर का जिसमें 13.5 प्रतिशत नये कैंसर के मामले और 10.6 प्रतिशत सभी कैंसर से होने वाली मौतों के लिये जिम्मेदार हैं। डॉ. मधुप्रिया, वरिष्ठ सलाहकार - सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, अपोलो कैंसर सेंटर, वनागरम, चेन्नई ने कहा कि भारत में हर 4 मिनट में महिलाओं में स्तन कैंसर का निदान किया जा रहा है - जागरूकता बढ़ाना और समय रहते इसका पता लगाने को प्रोत्साहित करना समय की मांग है, जिससे अनगिनत लोगों की जान बच सकती है।

डॉ. गीता कडायप्रथ, सीनियर कंसलटेंट, ब्रेस्ट सर्जरी, अपोलो कैंसर सेंटर (दिल्ली) ने साक्षात्कार के दौरान डॉ.अनुभा जैन से बात करते हुये बताया कि अस्पतालों में 40 साल से कम उम्र के नए स्तन कैंसर के युवा मरीजों की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ रही है। यह एक कॉम्पलैक्स इंटरप्ले है जिसमें महिलाओं की लाइफस्टाइल, जेनेटिक्स और एनवाइरनमैंट शामिल है। ब्रेस्ट कैंसर के बढ़ते केसज पर बात करते हुये डॉ. गीता ने कहा कि स्तन कैंसर की घटनाएं बढ़ रही हैं मुख्य रूप से जीवनशैली में बदलाव के कारण। उन्होने कहा कैंसर से डर होना मनुष्य की एक सामान्य अवधारणा है।

आंकडों के अनुसार लगभग 10 प्रतिशत स्तन कैंसर जेनेटिक होते हैं, लेकिन जीवनशैली से जुड़े कारक जैसे कि साझा आहार संबंधी आदतें, परिवारों में निष्क्रियता, बच्चे के जन्म में देरी, स्तनपान में कमी, निष्क्रिय आदतें, मोटापा और खराब आहार वे कारक हैं जो जीन की तुलना में युवा महिलाओं में स्तन कैंसर के मामलों में वृद्धि में योगदान दे रहे हैं। साथ ही बांझपन के लिए हार्मोनल थेरेपी और रजोनिवृत्ति के बाद के उपचार भी स्तन कैंसर के जोखिम को बढ़ा रहे हैं।

डॉ. गीता के अनुसार समय के साथ कैंसर के ईलाज में नई तकनीकों के आने से कैंसर सर्वाइवल रेट में सुधार भी हुआ है। यंग महिलाओं में स्तन कैंसर का होना भारत में जहां यह अनुपात दुगना यानि 15-20 प्रतिशत है वहीं पश्चिमी देशों में इसका आधा महज 7 प्रतिशत ही है। लाइफस्टाइल में परिवर्तन जिसमें शारीरिक गतिविधियां, सही फूड का चयन सही सोर्स के साथ होना चाहिये क्योंकि आज पेस्टीसाइडस का बेहद उपयोग हो रहा है जो कि हमारे खाने में सर्व हो जाते हैं। डॉ.गीता ने चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि दुर्भाग्य से भारत में आज एडवांस कैंसर स्टेज 1 और स्टेज 2 के कुल 60 प्रतिशत केसेज दर्ज किये गये हैं जो एक चिंता का विषय है। भारत की बढ़ती जनसंख्या, अवेयरनेस की कमी और ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग के प्रोटोकॉल नहीं होने के कारण यह संख्या बढ़ती ही जा रही है।

अस्पतालों के आंकडों के अनुसार 40 वर्ष से कम आयु की महिलाओं में प्रति माह 50 स्तन कैंसर के मामले देखे जा रहे हैं, जो पांच साल पहले 25 मामलों से अधिक है। सर्जिकल ऑन्कोलॉजी फोर्टिस अस्पताल के कंसल्टेंट डॉ. भरत जी ने कहा कि वे 20-40 वर्ष की आयु की महिलाओं में हर महीने 20-25 स्तन कैंसर के मामले देखते हैं, जबकि पांच साल पहले यह संख्या 10 थी। अधिकांश निदान तब होते हैं जब रोगी लक्षणों के साथ उपस्थित होते हैं। भारत में चरण चार के मामलों की व्यापकता पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक हो सकती है। यह स्तन कैंसर की मूक प्रकृति को उजागर करता है, क्योंकि कई महिलाएँ निदान में देरी करती हैं क्योंकि उन्हें दर्द या दिखाई देने वाले लक्षण महसूस नहीं होते हैं।

डॉ.गीता का मानना है कि महिलाओं को असामान्यताओं की जल्दी पहचान करने के लिए 21 वर्ष की आयु में स्वयं स्तन जांच शुरू कर देनी चाहिए। उनका कहना है कि 40 वर्ष की आयु से शुरू करके, वार्षिक जांच, अल्ट्रासाउंड और मैमोग्राम गांठ बनने से पहले ही जल्दी पता लगाने के लिए आवश्यक हैं। महिलाओं को अपने जीवन में स्तन कैंसर की जांच को प्राथमिकता देने, समय रहते इसका पता लगाने और इस कारण का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चेन्नई में अपोलो कैंसर सेंटर ने मेन इन पिंक वॉकथॉन आयोजन किया।

डॉ. गीता

स्तन कैंसर महिलाओं में कैंसर से संबंधित मौतों का प्रमुख कारण बन गया है, जिसने सर्वाइकल कैंसर को पीछे छोड़ दिया है। फिर भी, कई जागरूकता प्रयासों के बावजूद, लगभग 90 प्रतिशत महिलाएं आज भी अपने स्तन स्वास्थ्य पर काम करने में झिझकती हैं।

अंत में डॉ.गीता ने कहा, "मैंने ऐसी स्टेज 4 की महिलाओं का ईलाज किया जिनके बचने की संभावना बेहद क्षीण थीं। पर 18 साल पहले जिनकी मैने सर्जरी की, जिनके ब्रेस्ट कम्पलीट ट्यूमर की जकड में थे वे आज एकदम स्वस्थ हैं। इमेजिंग करके देखा गया तो ईलाज से ट्यूमर पूरी तरह गायब हो चुका था। उनके शरीर ने सर्जरी व मेडिकेशन का सही तरह रिसपांड किया क्योंकि वे खुद आशावादी थीं।"

-डॉ. अनुभा जैन,
वरिष्ठ पत्रकार

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज, उदयपुर की एम.बी.बी.एस. पाठ्यक्रम की 100 सीट बढ़ाने पर रोक लगाई

एम.बी.बी.एस. की 150 से 250 सीट करने के आदेश पर राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर ने रोक लगाई

जयपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर की खण्डपीठ के न्यायाधीश चन्द्रशेखर एवं न्यायाधीश रेखा बोराना द्वारा नेशनल मेडिकल कमीशन द्वारा दायर अपील पर बहस सुनकर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज, उदयपुर को एम.बी.बी.एस. की 150 से 250 सीट करने के आदेश पर रोक लगा दी है।

एनएमसी की ओर से उपस्थित हुए एडिशनल सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने न्यायालय को बताया कि पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर को पूर्व में एम.बी.बी.एस. की 150 सीट आवंटित की गई थी परन्तु आधारभूत संरचना एवं उचित फेकल्टी ना होने के कारण सीट घटाने का नोटिस दिया गया जिस पर सुनवाई करते हुए पहले से ही अध्ययनरत विद्यार्थियों के भविष्य को देखते हुए सीट कम ना करके 6 लाख रूपयों का दण्ड पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर पर लगाया गया। इसी बीच पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर ने एम.बी.बी.एस. की 150 सीटों से बढ़ाकर 250 सीट आवंटित करने हेतु आवेदन पत्र दिया जिस पर पूर्ण विचार कर एनएमसी द्वारा उसे निरस्त कर दिया गया, जिसके विरूद्ध पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर द्वारा अपील भी दायर की गई और अपील के लम्बित रहने के दौरान ही राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर की एकल पीठ के समक्ष रिट याचिका दायर की गई। इसी बीच पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर की अपील भी एनएमसी द्वारा खारिज कर दी गई।

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर ने उच्च न्यायालय की एकल पीठ के समक्ष यह तर्क दिया कि उनके पास 250 सीट के हिसाब से पूरी आधारभूत संरचना एवं फैकल्टी है परन्तु एनएमसी द्वारा आवेदन पत्र को गलत रूप से निरस्त कर दिया और अपील भी बिना किसी कारण के निरस्त कर दी गई। राजस्थान उच्च न्यायालय की एकल पीठ के न्यायाधीश दिनेश मेहता ने रिट याचिका मंजूर करते हुए एनएमसी को यह आदेश दिया कि पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर को एम.बी.बी.एस. की 100 सीटे और आवंटित की जावे। एनएमसी की ओर से इस आदेश दिनांक 8.10.2024 के विरूद्ध राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर की खण्डपीठ के समक्ष अपील प्रस्तुत की गई।

अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने अपील पर बहस करते हुए न्यायालय को बताया कि एनएमसी का निर्णय पूर्णतया सही एवं तथ्यों पर आधारित है और जब कॉलेज का निरीक्षण किया गया तब फेकल्टी एवं अन्य आधारभूत संरचनाऐं नियमों से कम पाई गई। श्री रस्तोगी ने सुप्रीम कोर्ट के बहुत सारे निर्णयों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि ऐसे विशेष पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु एनएमसी जैसी विशिष्ठ संस्था का निर्णय ही अन्तिम होता है और न्यायालय को सामान्यतया उस निर्णय को तथ्यों के आधार पर नहीं बदलना चाहिए और सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में न्यायिक पुनरीक्षण का अधिकार काफी कम हद तक होता है। उनके द्वारा यह भी कहा गया कि जब कॉलेज के पास 150 विद्यार्थियों को शिक्षा देने हेतु नियमानुसार फेकल्टी एवं संरचना उपलब्ध नही है तब उस दशा में किसी भी प्रकार से 100 ओर सीटें बढ़ाने का औचित्य नहीं था। रस्तोगी ने यह भी तर्क दिया मेडिकल शिक्षा एक विशिष्ट स्थान रखती है और सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न निर्णयों के अनुसार ऐसी विशिष्ठ शिक्षा के क्षेत्र में सामान्यतया न्यायालय को दखल नहीं देना चाहिए। उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने मामले पर विस्तृत सुनवाई कर और दोनों पक्षों को सुनकर उच्च न्यायालय जोधपुर की एकलपीठ के निर्णय के उस निर्णय पर रोक लगा दी जिसके द्वारा पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर की एम.बी.बी.एस. की सीट 150 से बढ़ाकर 250 कर दी गई थी। इस आदेश से एन.एम.सी. को बहुत बड़ी राहत मिली है।

बेटे ने मां की अंतिम इच्छा पूरी की, जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की

अजमेर, (कासं)। वैशाली नगर में रहने वाले एक बेटे ने अपनी मां की अंतिम इच्छा पूरा करते हुए उनके निधन के बाद उनकी देह का दान किया। उनकी मां प्रसंन कंवर का सोमवार देर रात निधन हो गया था, उनकी अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए मंगलवार सुबह जेएलएन मेडिकल कॉलेज प्रबंधन को देह का दान किया गया।

वैशाली नगर निवासी बिंदु भंडारी की मां प्रसन कंवर भंडारी का पार्थिव देह परिजन एवं रिश्तेदार मेडिकल कॉलेज लेकर पहुंचे। मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया और निश्चेतन विभाग के विभागाध्यक्ष सहित अन्य चिकित्सकों की मौजूगी में देहदान की गई। अब उनकी पार्थिव देह मेडिकल विद्यार्थी अध्ययन, शोध और चिकित्सा के उपयोग कर सकेंगे।

बेटे बिंदु भंडारी ने बताया कि उनकी मां हमेशा से ही समाज सेवा सक्रिय रहीं। उनकी आखिरी इच्छा थी कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी देह को मेडिकल कॉलेज में देहदान कर दी जाए। उन्होंने बताया कि सोमवार देर रात उनका निधन हो गया था, इसके बाद उन्होंने महावीर इंटरनेशनल संस्थान के सहयोग से उनकी मां की अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की गई।

देह को मेडिकल कॉलेज प्रबंधन को सौंपते हुए तथा मां की फाइल फोटो।

- **महावीर इंटरनेशनल संस्थान के सहयोग से मां की अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की**

जेएलएन मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर अनिल सामरिया ने बताया कि चिकित्सा के क्षेत्र में रिसर्च के लिए देहदान जरूरी है।

राशिफल बुधवार 6 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र दिन 11:00 तक, सुकर्मा योग दिन 10:50 तक, बव करण दिन 12:29 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 11:00 तक है। कुमार योग दिन 11:00 तक रहेगा। रवियोग प्रात: 8:47 से दिन 11:00 तक है। आज शुक्र मूल धनु में रात्रि 3:31 से प्रवेश करेगा। आज सौभाग्य पंचमी व्रत, पांडव और लाभ पंचमी, ज्ञान पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:27 तक, शुभ 10:44 से 12:10 तक, चर 2:54 से 4:15 तक, लाभ 4:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:44, सूर्यास्त 5:37

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कन्या
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। जीवनसाथी से वाद-विवाद हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

'आबकारी एमनेस्टी योजना में बकायादारों के लिए बकाया ब्याज की शत-प्रतिशत माफी का लाभ'

कोटा, (निसं)। राज्य सरकार द्वारा आबकारी विभाग की पुरानी बाकीयात को निपटाने के लिए आबकारी एमनेस्टी योजना-2024 प्रारंभ की है जिसके तहत बकायादारों को बकाया राशि जमा करवाने पर बकाया ब्याज की शत-प्रतिशत माफी का लाभ प्रदान किया जा रहा है।

जिला आबकारी अधिकारी भंवरलाल जनागल ने बताया कि आबकारी विभाग के बकायादारों के लिए आबकारी एमनेस्टी योजना-2024 पुरानी बकाया को निपटाने का सुगम अवसर है। उक्त योजना के तहत बकायादारों द्वारा बकाया राशि जमा करवाने पर बकाया ब्याज की शत-प्रतिशत माफी के साथ ही मूल बकाया राशि में भी छूट का प्रावधान किया गया है। यह योजना 31 दिसम्बर 2024 तक प्रभावी है।

इस योजना का लाभ लेकर पुरानी बकाया राशि का भुगतान कर अनावश्यक सम्पत्तियों की नीलामी, कुर्की, वादकरण से बचा जा सकता है। इस संबंध में जानकारी एवं बकाया प्रकरणों के निपटारे के लिए अतिरिक्त आबकारी आयुक्त जोन, जिला आबकारी अधिकारी एवं आबकारी निरीक्षक से सम्पर्क किया जा सकता है।

कोटा में आबकारी विभाग द्वारा कार्रवाई की गयी है।

उन्होंने बताया कि योजना के तहत राशि नही जमा करवाने पर बकायादारों एवं उनके जमानतियों की चल-अचल सम्पत्तियों की कुर्की की जाकर भू-राजस्व अधिनियम के अन्तर्गत प्रचार-प्रसार कर नीलामी एवं आवश्यक होने पर बकायादारों के विरूद्ध सिविल, फौजदारी मुकदमें दर्ज करवाने की कार्यवाही भी की जा सकती है।

बकायादारों पर की कार्रवाई:- जिला आबकारी अधिकारी ने बताया कि आबकारी विभाग ने एमनेस्टी योजना के तहत छूट देने के बाद भी बकाया जमा नहीं करवाने वाले बकायादारों पर कार्रवाई की गई। मंगलवार को ग्राम डोलिया में कार्रवाई के दौरान एक खेत को कुर्क किया गया है। उन्होंने बताया कि ग्राम डोलिया के राजेन्द्र सिंह के तीन खसरों की 1.52 हैक्टेयर भूमि में से बकायादार की हिस्सा भूमि को राजस्व पटवारी की उपस्थिति में कुर्क किया गया है। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी ग्राम कुराड तहसील कनवास के एक बकायादार की 2.43 हैक्टेयर जमीन को कुर्क किया जा चुका है।

उन्होंने बताया कि एमनेस्टी योजना 2024 के तहत बकायादारों को राज्य सरकार की ओर से काफी छूट दी गई है। इसमें वर्ष 2018 से पूर्व की मूल बकाया पर 75 प्रतिषत राशि तथा ब्याज माफ किया गया है। वर्ष 2018 से वर्ष 2022 तक के बकायादारों को मूल राशि का 50 प्रतिशत तथा ब्याज माफ किया गया है। वर्ष 2022 से मार्च 2024 तक बकायादारों को मूल राशि जमा कराये जाने पर ब्याज माफ किया गया है।

जिला आबकारी अधिकारी ने बताया कि विभाग से निर्धारित नियमों के तहत शुल्क जमा करवाकर मदिरा दुकानें लेने वाले ठेकेदारों द्वारा पूर्ण गारंटी आपूर्ति नहीं करने पर अनुज्ञाधारी को बकायादार घोषित किया जाता है। जिले में गत वर्षों के 318 प्रकरणों में कुल 13011.22 लाख रुपये बकाया रही। इसमें वृत कोटा उत्तर में 83 प्रकरणों की बकाया राशि 2697.28 लाख रुपये, वृत कोटा दक्षिण के 156 प्रकरणों की बकाया राशि 8327.43 लाख रुपये व वृत रामगंजमंडी के 79 प्रकरणों की बकाया राशि 1986.51 लाख रुपये।

जिले में 35 बकाया प्रकरणों में माननीय न्यायालय से स्थगन आदेश प्राप्त किया हुआ है जिसकी बकाया राशि 4111.58 लाख रुपये है। इनमें से आबकारी विभाग ने 33 प्रकरणों की 35.74 लाख रुपये वसूली कर राजकोष में जमा करवा दिये गये है। जिले में 112 बकायादारों की चल-अचल (जमीन,वाहन,बैंक खाते) सम्पत्तियों को ट्रेस किया जा चुका है जिन में से 77 बकायादारों की सम्पत्तियों के कुर्की वारन्ट जारी किये जा चुके हैं।

हैड कांस्टेबल की संदिग्ध मौत

कोटा, (निसं)। ग्रामीण एडिशनल एसपी ऑफिस में तैनात हेड कॉंस्टेबल ग्रामीण पुलिस लाईन क्वार्टर में अचेत मिला जिसको उपचार के लिए एमबीएस अस्पताल लाया गया, जहां पर चिकित्सक ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया सूचना पर बोरखेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची। बोरखेड़ा थाने के एएसआई करतार सिंह ने बताया कि मृतक हेड कांस्टेबल लालाराम (50) मूल रूप से जोधपुर का रहने वाले थे जो पत्नी और बेटे साथ ग्रामीण पुलिस लाईन में सरकारी क्वार्टर में रह रहे थे पत्नी और बेटा कोटा से बाहर गए हुए थे सोमवार शाम को बेटे ने पिता के मोबाईल पर फोन किया फोन नहीं उठाने पर बेटे ने पड़ोसी मोमराज के मोबाईल पर फोन किया जिस पर पड़ोसी लालाराम के घर पर पहुंचा जहां पर हेड कांस्टेबल लालाराम अचेत अवस्था मे मिला जिस पर पड़ोसी उसे उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे जहां पर डॉक्टर ने जांच के बाद हेड कांस्टेबल को मृत घोषित कर दिया इसकी सूचना कोटा से बाहर गए हुए लालाराम के बेटे और पत्नी को दी गई मंगलवार को बेटे व पत्नी के कोटा पहुंचने के बाद मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया बोरखेड़ा थाने के एएसआई करतार सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मृत्यु के कारण का पता चल पाएगा मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

सार-समाचार

रेलवे कर्मचारी की संदिग्ध मौत

कोटा, (निसं)। रेलवे कर्मचारी की मंगलवार तड़के संदिग्ध मौत हो गई मृतक रेलवे वर्कशॉप में कार्यरत था रेलवे कॉलोनी थाने के एएसआई जगदीश प्रसाद ने बताया कि पूनम कॉलोनी निवासी रामेश्वर प्रसाद (56) परिवार के साथ घर पर सो रहा था मंगलवार तड़के 4.00 बजे करीब रामेश्वर पलंग से नीचे गिर गया रामेश्वर के पलंग से नीचे गिरने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी और बेटा जाग गएं जिस पर रामेश्वर ने उनसे कहा कि मैंने कोई गोली खाई थी जिससे उसको बेचैनी हो रही है पत्नी और बेटा रामेश्वर को लेकर कोटा के निजी अस्पताल पहुंचे जहां ईलाज के दौरान रामेश्वर की मौत हो गई मृतक के शव को एमबीएस अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम लाया गया रेलवे कॉलोनी थाने के एएसआई जगदीश प्रसाद ने बताया कि सूचना पर अस्पताल पहुंचे और मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

भाजपा कार्यकर्ता कोटा से उनियारा पहुंचे

कोटा, (निसं)। देवली-उनियारा विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के लोकप्रिय प्रत्याशी राजेंद्र गुर्जर को आने वाले चुनाव में अधिक से अधिक मत से विजय प्राप्त हो इस लिए उनियारा क्षेत्र में सभी भाजपा कार्यकर्ताओं से मिलकर आमजन का जुड़ाव और बड़े एवं सभी आमजनों की समस्याओं को सुनकर निस्तारण करने का आश्वासन दिलाया स ऊर्जा मंत्री हीरालाल नगर के नेतृत्व में कोटा से भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता उनियारा विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार करने पहुंचे इसमें नेता प्रतिपक्ष विवेक राजवंशी, शहर उपाध्यक्ष सत्य प्रकाश शर्मा, बीजेपी व्यवसायिक प्रकोष्ठ के जिला संयोजक अनिल तिवारी, व्यवसाय प्रकोष्ठ के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अशोक बादल, पूर्व पार्षद महावीर सुवालका, युवा मोर्चा महामंत्री नरेंद्र मेघवाल, राजेंद्र केवट, रोहित सिंह चंदेलसहित कई भाजपा कार्यकर्ता शामिल रहे।

कैंसर के प्रति जागरुक किया

कोटा, (निसं)। एनीमिया मुक्त राजस्थान अभियान के तहत मंगलवार को आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य केन्द्रों/स्कूलों में शक्ति दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में लक्षित बच्चे, किशोर-किशोरी, धात्री माताएं, गर्भवती व प्रजनन उम्र की लाभार्थी महिलाओं में एनीमिया नियंत्रण को लेकर स्क्रीनिंग की गई। हीमोग्लोबिन की जांच कर आईएफए (आयरन फोलिक एसिड) की दवाई नि:शुल्क दी गई। साथ ही एनीमिया रोग के लक्षण, बचाव, उपचार की जानकारी दी। पौटिष्क, आयरनयुक्त फल-सब्जी, संतुलित आहार लेने की हिदायत दी। 30 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को ब्रेस्ट व सर्वाइकल कैंसर के लक्षण, उपचार के बारे में बताया।

सार-समाचार

त्यौहार में कोटा से पटना के बीच एक ट्रिप स्पेशल ट्रेन का संचालन

कोटा, (निसं)। छठ महापर्व को देखते हुए त्यौहार में अतिरिक्त यात्री भीड़ को क्लीयर करने के उद्देश्य से गाड़ी सं 03219/03220 पटना-कोटा-पटना के मध्य स्पेशल ट्रेन को चलाने का निर्णय लिया गया है। इस गाड़ी में 2 वातानूकुलित टू टियर कोच, 2 वातानुकूलित ट्री टियर कोच, 2 वातानुकूलित थर्ड एसी इकोनॉमी कोच, 10 स्लीपर, 2 सामान्य श्रेणी, 2 जनरेटरकार तथा 01 एसएलआरडी सहित कुल 20 कोच होंगे। जिससे कोटा से उत्तरप्रदेश एवं बिहार जाने वाले यात्रियों को भीड़ से राहत मिलेगा। गाड़ी संख्या 03219/03220 पटना-कोटा-पटना के मध्य पूजा स्पेशल एक ट्रिप शनिवार दिनांक 09 नवम्बर पटना से और रविवार दिनाँक 10 नवम्बर कोटा से चलेगी। गाड़ी सं 03219 पटना से कोटा के लिए प्रस्थान अपने प्रारम्भिक स्टेशन से रात 22.10 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 20.00 बजे कोटा पहुंचेगी और वापसी गाड़ी संख्या 03220 कोटा से प्रस्थान रात 22.00 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 23.15 बजे पटना पहुंचेगी। यह गाड़ी दोनों दिशाओं में पटना-कोटा-पटना के मध्य दानापुर, आरा, बक्सर, पं दीन दयाल उपाध्याय, वाराणसी, प्रयागराज, कानपुर सेन्ट्रल, टूण्डला, आगरा फोर्ट, बयाना एवं सवाई माधोपुर स्टेशनों पर रुकेगी। इस संबंध में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/जनसम्पर्क अधिकारी कोटा रोहित मालवीय ने बताया कि ट्रेन ऑन डिमांड के तहत इस पूजा स्पेशल ट्रेन को चलाया जा रहा है। इस संबंध में सर्व-संबधित स्टेशनों और कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेन की उचित स्थिति की जानकारी स्टेशन, एनटीईएस, रेल मदद 139 एवं ऑनलाइन प्राप्त कर यात्रा करें।

दीपावली स्नेह मिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह आज

कोटा, (निसं)। हाड़ौती हलवाई केटरर्स एसोसिएशन कोटा का दीपावली स्नेह मिलन समारोह बोरखेड़ा स्थित निजी रिसोर्ट में सायं 5 बजे से आयोजित किया जाएगा। एसोसिएशन के अध्यक्ष अन्नू अग्रवाल एवं सचिव सचिन माहेश्वरी ने बताया कि स्नेह मिलन समारोह के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला होंगे। विशिष्ट अतिथि राजस्थान रेडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष राजेश बिरला, उपभोक्ता होलसेल भण्डार के अध्यक्ष हरिकृष्ण बिरला, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, लाड़पुरा विधायक कल्पना देवी, कोटा उत्तर विधायक शांति धारीवाल, कोटा व्यापार महासंघ के अध्यक्ष क्रांति जैन, महामंत्री अशोक माहेश्वरी, वरिष्ठ भाजपा नेता पंकज मेहता, पूर्व विधायक चन्द्रकांता मेघवाल, महिला कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष राखी गौतम, भाजपा शहर अध्यक्ष राकेश जैन, शहर कांग्रेस अध्यक्ष रविन्द्र त्यागी, जयपुर कैटरिंग डीलर समिति के अध्यक्ष मनोज सेवानी, फेडरेशन ऑल इंडिया केटर्स सुनील सोखियां रहेंगे। अध्यक्ष अन्नू अग्रवाल एवं सचिव सचिन माहेश्वरी ने बताया कि समारोह से पूर्व कुकिंग क्वीन कम्पीटीशन भी आयोजित होगा। इस दौरान सांस्कृतिक संध्या एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का भी आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में देश के विख्यात केटर्स को आमंत्रित किया गया है, जो समारोह के दौरान लजीज व्यंजनों की प्रदर्शनी भी लगाएंगे।

तीन दिवसीय तबला कार्यशाला 12 से

कोटा, (निसं)। केशव कला मंडल की ओर से 12 नवम्बर से किशोर सागर तालाब स्थित कला-दीर्घा पर तीन दिवसीय तबला कार्यशाला आयोजित की जाएगी। कार्यशाला संयोजक रविंद्र गौतम ने बताया कि वर्कशॉप में देश के जाने-माने गुरू पंडित किशनराम दोहकर के द्वारा तबला वादन की बनारस घराना शैली और निकास की बारीकियों के टिप्स दिए जाएंगे। इसमें इंटरमीडियट और एडवांस तबला विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। वर्कशॉप के लिए 10 नवंबर तक पंजीयन कराए जा सकते हैं।

पत्र लिखकर सिर्फ औपचारिकता न करें अधिकारी : जिला कलेक्टर

कोटा, (निसं)। अंतर विभागीय समन्वय समिति की बैठक मंगलवार को कलेक्टर डॉ.रविंद्र गोस्वामी की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय के कक्ष में आयोजित की गई।

इस बैठक में शहरी क्षेत्र के विभिन्न विभागों के कार्यों और उनकी प्रगति पर गहन समीक्षा की गई। कलेक्टर डॉ. गोस्वामी ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.जगदीश सोनी से शहरी क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के निर्माण कार्यों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया कि वह शीघ्र ही संबंधित विभागों को साइट प्लान एवं जी शेड्यूल उपलब्ध कराए, ताकि निर्माण कार्यों की प्रभावी निगरानी की जा सकें।

बैठक में कलक्टर ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में प्रसव सेवाओं की स्थिति पर भी चर्चा की गई। डॉ.गोस्वामी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में ओपीडी और आईपीडी सेवाओं का जायजा लेते हुए निर्देश दिए कि शहरी क्षेत्रों में मरीजों को अनावश्यक रूप से रेफर न किया जाए और उन्हें आईपीडी सेवाओं का लाभ भी प्राप्त हो सके। इसके साथ ही, उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के नर्सिंग स्टॉफ को प्रसव सेवाओं के लिए प्रशिक्षित करने पर जोर दिया ताकि यहां भी प्रसव की सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। कलेक्टर ने रामपुरा, दादाबाड़ी, भीमगंजमंडी, कुन्हाड़ी और विज्ञान नगर जैसे क्षेत्रों में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी भी विस्तार से ली।

एमबीएस अस्पताल में विभिन्न छोटे-मोटे निर्माण कार्यों के लिए लोक निर्माण विभाग को निर्देश दिए गए कि नियमानुसार वार्षिक टेंडर प्रक्रिया अपनाई जाए। उन्होंने एमबीएस अस्पताल के अधीक्षक डॉ.धर्मराज मीणा को कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए) और लोक निर्माण विभाग के साथ समन्वय कर कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर करवाने के निर्देश दिए। राज्य स्तर पर आवश्यक कार्रवाई के लिए कलेक्टर ने सभी विभागों से संबंधित पत्रावलियों की प्रति उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

स्वच्छता व्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, उन्होंने जिला खेल अधिकारी को हॉस्टल में नियमित रूप से सफाई कार्य करवाने के निर्देश दिए। साथ ही सभी विभागों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि केवल पत्राचार के माध्यम से औपचारिकता निभाने की बजाय कार्यों का स्वयं के स्तर पर फॉलोअप किया जाए और उन्हें धरातल पर उतारा जाए। उन्होंने कहा कि पत्र लिखकर जिम्मेदारी को समाप्त कर देने का रवैया अस्वीकार्य है और अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की जाएगी। इसके अलावा, नगर निगम के अधिकारियों से स्वच्छता और पूर्व में चल रहे कार्यों की प्रगति पर जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए गए। कोटा विकास प्राधिकरण के सचिव कुशल कोठारी को एमबीएस अस्पताल में नियोजित योजनाओं के तहत कार्य संपन्न करने के निर्देश दिए। इस बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग कृष्णा शुक्ला, जिला शिक्षा अधिकारी के.के. शर्मा, नगर निगम आयुक्त उत्तर अशोक त्यागी, नगर निगम आयुक्त दक्षिण अनुराग भार्गव सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

मुंह के बल गिरा अधेड़, मौत

कोटा, (निसं)। भैया दूज का त्यौहार बनकर परिवार सहित वापस घर जाते समय कोटा प्लेटफॉर्म के बाहर मुंह के बल गिरने से अधेड़ की मौत हो गई प्राप्त जानकारी के अनुसार जयपुर के चौमू निवासी सुरेंद्र अग्रवाल परिवार सहित त्यौहार बनाने के लिए शुक्रवार को अपने ससुराल कैथून आये थे। भैया दूज करके सोमवार रात्रि को जयपुर जाने के लिए कोटा प्लेटफॉर्म पर पहुंचे सुरेंद्र के साथ उसकी पत्नी बच्ची भी थी प्लेटफार्म के बाहर बैग की बेल्ट में पैर फंसने से सुरेंद्र अग्रवाल मुंह के बल नीचे गिरकर बेहोश हो गया जिसे अचेत अवस्था मे उपचार के लिए अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सक ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पक्षकार श्रीमती मिथलेश बैरागी द्वारा अपने स्वामित्व के आवास संख्या 19-D न्यू कालोनी बून्दी पैमायशी 1250 वर्गफुट को टाटा केपिटल हाउसिंग फाइनेन्स लि. में रहन रखकर ऋण प्राप्त कर रहे है। उक्त आवास श्रीमती मिथलेश बैरागी ने श्री गजेन्द्र शंकर मेहता से जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 01.12.08 को क्रय की है। जिसके विक्रय पत्र का पंजीयन कार्यालय उप पंजीयक कोटा में दिनांक 01.12.08 को हो रहा है।

यह कि उक्त सम्पत्ति को रहन कर ऋण देने के संबंध में यदि किसी भी व्यक्ति, बैंक, संस्था या अन्य को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वह अधोहस्ताक्षरकर्ता को 5 दिवस के भीतर सूचित कर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

कमल गुप्ता, एडवोकेट
मो. 9414288889

पश्चिम मध्य रेल

निविदा सूचना यांत्रिक विभाग
दिनांक 30.10.2024

मंडल रेल प्रबंधक (यांत्रिक) पश्चिम मध्य रेलवे/कोटा द्वारा टर्न की के आधार पर निम्नलिखित कार्य के लिये निर्धारित प्रपत्र पर खुली निविदा (सिंगल पैकेट सिस्टम में) भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से पर्याप्त अनुभवी एवं वित्तीय क्षमता रखने वाली प्रतिष्ठित फर्म/कम्पनी से IREPS पोर्टल पर आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र IREPS पोर्टल पर दिनांक 21.11.2024 को 15.00 बजे बंद हो जायेगी तथा उसी दिन 15.30 बजे पर खोली जायेगी। **टेंडर नं.:** वरि. मं.या.अभि/प.म.रे/कोटा/17-24-25, **कार्य का विवरण:** सोगरिया स्टेशन पर SCADA आधारित त्वरित जल व्यवस्था के प्रावधान का कार्य।, **अनुमानित लागत:** 10108529.00, **बयाना राशि:** 200600.00, **कम्प्लीशन पीरियड:** 6 माह, **निविदा खुलने की दिनांक एवं समय:** 21.11.2024 समय 15.30। रेलवे वेबसाईट www.ireps.gov.in पर डाली गई ई-निविदा सूचना में सम्पूर्ण विवरण उपलब्ध है। सम्पूर्ण निविदा प्रपत्र उपरोक्त वेबसाईट से उतारा जा सकता है।

मंडल रेल प्रबंधक (यांत्रिक), पमरे, कोटा

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

जेईई-एडवांस्ड में अब तीन अटेम्प्ट, लगातार तीन साल दे सकेंगे परीक्षा

- जेईई-एडवांस्ड 2025 की वेबसाइट लांच, आईआईटी कानपुर को मिली जिम्मेदारी
- परीक्षा में पहली बार आयु सीमा तय की गई

कोटा, (निसं)। देश की सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-एडवांस्ड 2025 की वेबसाइट मंगलवार को जारी कर दी गई। इस वर्ष यह परीक्षा आईआईटी कानपुर द्वारा करवाई जाएगी।

जारी सूचना में सबसे बड़ा अपडेट ये है कि अब एक विद्यार्थी तीन वर्ष में तीन बार जेईई-एडवांस्ड परीक्षा में शामिल हो सकेगा।

अब तक जेईई-एडवांस्ड देने के अवसरों की संख्या अधिकतम दो प्रयास हुआ करती थी। इससे बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स को आईआईटी में प्रवेश के लिए एक और प्रयास करने का अवसर मिलेगा।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि उल्लेखनीय है कि पिछले 14 वर्षों के आंकड़ों के आकलन के आधार पर हर 6 वर्ष बाद रोटेशन में आईआईटी को परीक्षा आयोजन की जिम्मेदारी दी जाती है।

वर्ष 2018 में इस परीक्षा के आयोजन की जिम्मेदारी आईआईटी कानपुर को ही मिली थी।

दिल्ली, बॉम्बे, खड़गपुर, कानपुर, मद्रास, रूड़की व गुवाहाटी ने अब तक जेईई-एडवांस्ड परीक्षा आयोजित करवाई है।

जेईई-मेन के आधार पर श्रेष्ठ 2.50 लाख विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। इसमें 10 प्रतिशत जरनल-ईडब्ल्यूएस, 27 प्रतिशत ओबीसी-एनसीएल, 15 प्रतिशत एससी, 7.5 प्रतिशत एसटी और 40.5 प्रतिशत ओपन कैटेगिरी की सीट्स होंगी। वर्ष 2025 में हो रही जेईई-एडवांस्ड में वर्ष 2023, 2024 और 2025 में कक्षा 12 की परीक्षा देने वाले विद्यार्थी शामिल हो सकेंगे। वर्ष 2022 या इससे पहले 12वीं या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षा में शामिल होने योग्य नहीं होंगे।

ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने पूर्व में आईआईटी में जोसा काउंसलिंग के दौरान प्रवेश ले रखा है वे विद्यार्थी जेईई-एडवांस्ड परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगे, जबकि जेईई-मेन क्वालीफाई कर एनआईटी में प्रवेश ले चुके विद्यार्थी जेईई-एडवांस्ड परीक्षा दे सकेंगे। जेईई-एडवांस्ड परीक्षा 26 मई या 2 जून 2025 को संभावित है।

आयु सीमा तय:- इस वर्ष जेईई-एडवांस्ड परीक्षा के लिए आयु सीमा भी तय की गई है। ऐसे विद्यार्थी जिनका जन्म 1 अक्टूबर 2000 के बाद का है वे ही परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। एससी-एसटी, पीडब्ल्यूडी विद्यार्थियों को इस आयु सीमा में 5 वर्ष की रियायत दी गई है, यानी इस वर्ग के विद्यार्थी 1 अक्टूबर 1995 के बाद जन्म लेने वाले विद्यार्थी परीक्षा के योग्य होंगे।

बुनकर पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए समिति की बैठक आयोजित

कोटा, (निसं)। जिला स्तरीय बुनकर पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए गठित समिति की बैठक अतिरिक्त जिला कलक्टर सीलिंग कृष्णा शुक्ला की अध्यक्षता में मंगलवार को आयोजित की गई। जिसमें बुनकर सेवा केन्द्र जयपुर के प्रतिनिधि, महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र कोटा एवं अन्य समिति सदस्य उपस्थित रहे। महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र हरिमोहन शर्मा ने बताया कि समिति द्वारा प्राप्त कलाकृतियों का अवलोकन कर बुनकरों की कलाकृतियों का चयन किया गया। जिसमें प्रथम पुरूस्कार के लिए कैथून निवासी शबनम बानो, द्वितीय पुरूस्कार के लिए गुलिस्ता बानो, तृतीय पुरूस्कार के लिए इफ्तेसाम जिया, सांत्वना पुरूकार के लिए नसीम बानो एवं अज्रूद्दीन अंसारी का चयन किया गया। चयनित किए गए बुनकरों को प्रथम पुरस्कार 5 हजार 100 रूपये, द्वितीय पुरूस्कार 3 हजार 100 रूपये, तृतीय पुरूस्कार 2 हजार 100 रूपये तथा सांत्वना पुरूस्कार प्रत्येक को एक हजार 100 रूपये का बैंक खाते में भुगतान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिला स्तर पर चयनित प्रथम एवं द्वितीय कलाकृतियों को राज्य स्तर पर चयन के लिए जयपुर भिजवाया जाएगा।

राजस्व अधिकारियों की बैठक 11 को

बूंदी (निसं)। जिले के राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक 11 नवंबर को सुबह 11 बजे जिला कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित होगी। बैठक की अध्यक्षता जिला कलेक्टर करेंगे। जिसमें राजस्व विभाग के अधिकारी रहेंगे।

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांक:-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2024/12372 दिनांक: 5.11.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सविता जैन पत्नी स्व. श्री जम्बू कुमार जैन निवासी भूखंड संख्या सी-243 तलवण्डी कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या सी-243 तलवण्डी कोटा क्षेत्रफल 2278.5 वर्गफुट का स्वामित्व स्वयं के नाम हस्तांतरण करने का निवेदन किया है। भूखंड संख्या सी-243 तलवण्डी कोटा क्षेत्रफल 2278.5 वर्गफुट का पंजीयन कार्यालय नगर विकास न्यास कोटा द्वारा पत्र क्रमांक 20 दिनांक 01.05.1995 से श्री जम्बू कुमार जैन पुत्र श्री हुकमचन्द जैन के नाम करवाया गया। श्री जम्बू कुमार जैन का देहावसान दिनांक 31.03.2013 को हो जाने के उपरांत श्री जम्बू कुमार जैन के विधिक वारिसान श्री अर्पित जैन एवं श्री पुलकित जैन पिसरान स्व. श्री जम्बू कुमार जैन ने जर्ये रजिस्टर्ड हक त्याग पत्र दिनांक 13.06.2023 से उक्त भूखंड में से स्वयं का हक श्रीमती सविता जैन पत्नी स्व. श्री जम्बू कुमार जैन के पक्ष में त्याग दिया है। श्रीमती सविता जैन द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

'तुलसी' का श्रेष्ठ पाण्डुलिपियों में चयन

कोटा, (निसं)। राजस्थान सिन्धी अकादमी प्रशासक एवं जयपुर संभागीय आयुक्त रश्मि गुप्ता ने बताया कि अकादमी की पाण्डुलिपि प्रकाशन सहयोग योजना में राज्यभर के साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपियों में से 6 श्रेष्ठ पाण्डुलिपियों का चयन किया गया है इसमें कोटा के वरिष्ठ साहित्यकार किशन रतनानी का कहानी संग्रह तुलसी भी शामिल है। तुलसी कहानी संग्रह रतनानी की नई 11 सिंधी कहानियों का संग्रह है। उल्लेखनीय है कि कोटा के किशन रतनानी भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और प्रधानमंत्री कार्यालय में पूर्व निदेशक के पदस्थापित रहे हैं। किशन रतनानी के अब तक कुल 15 कहानी व एकांकी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिसमें से चार पुस्तकों पर उन्हें राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। अटलानी की पाण्डुलिपि "दहशत", अजमेर की डॉ.कमला गोकलानी की पाण्डुलिपि "मेरी नजर में", अजमेर के डॉ.सुरेश बबलानी की पाण्डुलिपि "सिन्धी बोली ऐं लिपिअ जो इतिहास", अजमेर के डॉ. प्रताप पिंजानी की पाण्डुलिपि "विक्रम उर्वशी" एवं अजमेर के ही प्रकाश तेजवानी की पाण्डुलिपि "सिन्धी व्याकरण" सम्मिलित हैं।

गोयल और दाऊदयाल के पीछे हुजूम उमड़ता था मोबाईल ने सीमित कर दिया : राजावत

कोटा, (निसं)। भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व विधायक भवानीसिंह राजावत ने वल्लभबाड़ी स्थित कार्यालय पर दीपावली मिलन समारोह में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि दिवंगत कृष्णकुमार गोयल, दाऊदयाल जोशी, ललित किशोर चतुर्वेदी, रघुवीर सिंह कौशल, हरिकुमार औदिच्य के समय दीपावली व होली मिलन के अवसर पर कार्यकर्ताओं का हुजूम उमड़ता था लेकिन अब मोबाईल ने इस मिलन को सीमित कर दिया।

राजावत ने बताया कि 35-40 वर्ष पूर्व ये दिवंगत नेता दीपावली पर प्रमुख बाजारों मे राम-राम करने निकलते थे तो लोगों का जनसैलाब उमड़ता था और होली मिलन समारोह पर कैथूनीपोल, टिपटा होते हुए रामपुरा पीपल के पेड़ के नीचे बैठ कर हजारों लोगों के साथ दिनभर होली खेलते थे लेकिन अब घरों पर बैठे कार्यकर्ता केवल मोबाईल पर राम-राम करते हैं उन्होनें कहा कि हजारों कार्यकर्ता प्रदेशभर से बधाई देते हैं लेकिन कोटा मे बैठे कार्यकर्ता बधाई देना चाहते हैं वे उनको साफ मना करते हैं।

कोटा में पूर्व विधायक भवानी सिंह राजावत ने दीपावली मिलन समारोह में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया है।

राजावत ने कार्यकर्ताओं को संघर्ष की प्रवृत्ति छोड़ने पर तंज कसते हुए कहा कि राज कैसा भी हो प्रशासन से टकराने की संघर्ष की प्रवृत्ति नहीं छोड़ना चाहिए रीको व कलेक्टर कोटा ने गाड़ियां लुहारों का जेके के सामने रीको की भूमि पर बसाने के लिए उनसे मना किया लेकिन उन्होंने इनको चुनौती देते हुए कहा कि ये भूमि करोड़ों की हो लेकिन गरीब आदमी कहा जाएगा और नि:शुल्क उनको आवंटित करवा दी जिस पर लगभग गरीब परिवार आज भी रह रहे हैं। रंगबाड़ी, अजय आहूजा नगर, क्रेशर बस्ती अनेकों गरीबों को उन्होनें बसाया हैं। कार्यकर्ता भी संघर्ष की प्रवृत्ति रखकर राज कैसा भी हो प्रशासन से टकराना सीखें।

समारोह मे सेवानिवृत्त तहसीलदार भवानीसिंह चौहान, लाड़पुरा की पूर्व प्रधान अनुराधा मीणा, मण्डल अध्यक्ष हुकमचन्द शर्मा, नेमीचन्द नागर, कोटा स्टोन एसोसिएशन के महामंत्री विकास जोशी, व्यापार प्रकोष्ठ के सुरेश मित्तल, गाड़ियां लुहार समाज के प्रदेश मंत्री घासी लुहार, युवा मोर्चा के जयराज सिंह हाड़ा, पूर्व मण्डल अध्यक्ष राजकुमार नन्दवाना, सुरेश गुर्जर, मनीष गालव, कानसिंह सोनगरा, पूर्व मण्डल महामंत्री सतीश भारद्वाज, किसान मोर्चा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष हुसैन देशवाली, महावीर सुमन भी उपस्थित रहे।

AU SMALL FINANCE BANK

Registered Office : 19-A Dhuleshwar Garden, Jaipur, Rajasthan, India, 302001.
www.aubank.in

LOAN AGAINST GOLD - AUCTION NOTICE ON "AS IS WHERE IS" BASIS

The below mentioned borrower/s have been issued notices to pay their outstanding amounts towards the loan against gold facilities availed from AU Small Finance Bank Limited ("Bank"). Since the borrower/s has/have failed to repay his/their dues, we are constrained to conduct an auction of pledged gold items/articles on **11 Nov 2024 between 11:00 AM - 3:00 PM (Time)** at below mentioned branches according to the mode specified therein. In the case of deceased borrowers, all conditions will be applicable to legal heirs. Please note that in the event of failure of the above auction, the bank reserves its right to conduct another auction without prior intimation.

E-Auction Branch Details (E-auction will be conducted by using Weblink https://gold.samil.in)

BANSWARA - 24660000124704 24660000234757 24660000259930 | **BHILWARA** - 24660000167973 | **CHITTORGARGH** - 24660000201280 24660000213767 24660000354681 24660000862994 | **JAIPUR - QUEENS ROAD** - 24660000181625 24660000234817 24660000263032 24660000284872 24660000298315 24660000895652 | **JAIPUR-TRIVENI NAGAR** - 24660000278624 | **JHALAWAR** - 24660000270138 | **JODHPUR ITI CIRCLE** - 24660000191206 | **KOTA -GHODE WALA CIRCLE** - 24660000167673 24660000185878 24660000202728 24660000206331 24660000218208 24660000263512 | **LAXMANGARH** - 24660000291428 |

Note: The auction is subject to certain terms and conditions mentioned in the bid form, which is made available before the commencement of auction.

Sd/-
Manager
AU Small Finance Bank Limited

ब्यावर कलेक्टर ने की अवैध खनन कर रही फर्म पर कार्रवाई, 38 करोड़ का जुर्माना लगाया

रायपुर उपखंड क्षेत्र के ग्राम अमरगढ़ में करणी कृपा ग्रेनाइट फर्म ने लीज क्षेत्र से बाहर 1.30 लाख टन से ज्यादा अवैध खनन और अतिक्रमण कर रखा था

- जांच में अवैध खनन क्षेत्र कुल 5571 वर्ग मीटर एवं अवैध अतिक्रमण क्षेत्र 22274 वर्ग मीटर पाया गया
- उपखंड अधिकारी की मौजूदगी में जब खनिज विभाग की टीम ने मौके पर नाप-जोख की तो इस फर्म द्वारा तय क्षेत्र से ज्यादा जगह पर अवैध खनन किए जाने की पोल खुली

जयपुर/ब्यावर, (कासं)। ब्यावर जिला कलेक्टर डॉ. महेंद्र खड़गावत के आदेश पर रायपुर उपखंड अधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन, पुलिस और खनिज विभाग की टीम ने मंगलवार को अवैध खनन के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। रायपुर क्षेत्र की चांग तहसील के ग्राम अमरगढ़ में करणी कृपा ग्रेनाइट फर्म द्वारा लीज क्षेत्र से बाहर अवैध खनन करते हुए पाए जाने पर नाप-जोख किया। खनिज विभाग की जांच में 1 लाख 30 हजार 110.96 टन अवैध खनन सामने आया। इस पर पेनल्टी राशि रॉयल्टी का 10 गुना वसूली योग्य मानते हुए 37 करोड़ 73 लाख 21 हजार रु. जुर्माना लगाया। जांच में अवैध खनन क्षेत्र कुल 5571 वर्ग मीटर एवं अवैध अतिक्रमण क्षेत्र 22274 वर्ग मीटर पाया गया ।

ब्यावर कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत के आदेश पर रायपुर उपखंड अधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन, पुलिस और खनिज विभाग की टीम ने अवैध खनन के विरुद्ध कार्रवाई की।

कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत ने बताया कि इस फर्म के द्वारा अवैध खनन और अतिक्रमण की लगातार ग्रामवासियों द्वारा शिकायत की जा रही थी। इस पर शिकायतों की जांच और सत्यापन कराया तो यह पूरा कारनामा सामने आया। इस पर उपखंड अधिकारी रायपुर को संयुक्त दल के साथ मौके पर पहुंचकर जांच करने और शिकायत सही होने पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इस पर मंगलवार को उपखंड अधिकारी, तहसीलदार, पटवारी हल्का चांग व खनिज व पुलिस टीमें ग्राम अमरगढ़ के खसरा नंबर 84 पर मौके पर पहुंची। जांच दल को मौके पर लीज होल्डर उपस्थित नहीं मिले।

जांच करने पर माइनिंग लीज एम.एल. 39/02 का राजस्व रिकॉर्ड में अंकन नहीं होना पाया गया। खनिज विभाग के अनुसार खसरा नंबर 84 में एम.एल. 39/02 में क्षेत्रफल 4 हैक्टेयर लीज क्षेत्र स्वीकृत है। मौके पर खनिज विभाग ने इस लीज के दो सीमा चिन्ह ए व डी बताए गए जो मौके पर पाए गए। शेष दो सीमा चिन्ह मौके पर न तो पाये गए न हीं खनिज विभाग द्वारा बताए गए । मौके पर राजस्व विभाग व खनिज विभाग द्वारा संयुक्त रूप से खनन क्षेत्र एम.एल. 39/02 क्षेत्रफल 4 हैक्टेयर का सीमांकन किया गया। लीज होल्डर द्वारा लीज क्षेत्र से अधिक क्षेत्र व सिवायचक भूमि में अवैध खनन करना व मैटेरियल डालकर अतिक्रमण करना पाया गया। इस पर दोषी फर्म पर कार्रवाई करते हुए लगभग 38 करोड़ की राशि का जुर्माना लगाया। इस कार्रवाई में उपखंड अधिकारी गुलाब सिंह, तहसीलदार रायपुर, खनिज अभियंता जगदीश मेहरावत सहित प्रशासन, पुलिस व खनिज विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

पांच हजार की रिश्वत लेते बाबू को पकड़ा

- स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर के कार्यालय में कार का बिल बनाने की एवज में रिश्वत मांगी

जोधपुर, (कासं)। एसीबी ने कार्रवाई कर चिकित्सा विभाग के बाबू नरेंद्र भारती को पकड़ा है। जोधपुर की एसीबी टीम ने बिल बनाने की एवज में रिश्वत राशि लेते चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर ऑफिस के कार्यालय कर्मचारी को रंगे हाथों ट्रैप किया है। उससे पांच हजार की रिश्वत राशि बरामद की गई। फिलहाल उसके मकान और अन्य ठिकानों पर एसीबी की ओर से सर्च की कार्रवाई को अंजाम भी दिया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार इसको लेकर पूर्व में परिवादी की ओर से शिकायत दी गई थी। इसके बाद से ही एसीबी की टीम एक्टिव थी। फिलहाल इस पूरे रिश्वत के मामले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। एसीबी के उप अधीक्षक गोवर्धन राम ने बताया कि 24 अक्टूबर को एसीबी की स्पेशल यूनिट में परिवादी ने लिखित रिपोर्ट पेश की। बताया कि स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर के कार्यालय में उनकी एक कार लगी हुई थी। जिसका बिल बनाने की एवज में कार्यालय में कार्यरत बाबू नरेंद्र भारती की ओर से रिश्वत राशि की मांग की जा रही है। शिकायत मिलने के बाद 24 अक्टूबर को एसीबी की टीम ने वेरिफिकेशन करवाया और ट्रैप की कार्रवाई को अंजाम दिया गया। दीपावली के अवकाश खत्म होने के बाद आज ऑफिस के बाबू ने परिवादी से 5 हजार रुपए जैसे ही लिए। रंगे हाथों एसीबी टीम ने उसे ट्रैप कर लिया। फिलहाल बाबू को हिरासत में लिया गया है। उसके शिकारगढ़ स्थित मकान पर भी सर्च किया जा रहा है। एसीबी इस रिश्वत के खेल में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच कर रही है।

25 हजार का इनामी गिरफ्तार

मासलपुर/करौली, (निसं) । मासलपुर थाना पुलिस ने नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के मामले में एक वर्ष से फरार चल रहे 25 हजार रुपए के इनामी बदमाश को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। मासलपुर थानाधिकारी नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के मामले में एक साल से फरार चल रहे गोविंद गुर्जर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मामले में पुलिस एक आरोपी को पूर्व में गिरफ्तार कर चुकी है। थानाधिकारी बताया कि गत 24 सितंबर 2023 को मासलपुर थाने में एक नाबालिग के पिता ने अपनी पुत्री के अपहरण कि एफआईआर दर्ज कराई।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने राजेन्द्र भांबू को जीताने की अपील की

झुंझुनू। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि झुंझुनू विधानसभा में जनता को झूठ के अलावा कुछ नहीं मिला। दिया कुमारी चावों सती मंदिर हॉल, बगड़ में एक सभा को संबोधित कर रही थी। दिया कुमारी ने देश के सैन्य इतिहास में झुंझुनू के बलिदान को याद करते हुए कहा कि एक सैनिक की बेटी के रूप में शेखावाटी के वीर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान में विकास के नये आयाम स्थापित करने के लिए तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं और राइजिंग राजस्थान के माध्यम से राज्य में 15000 करोड़ के निवेश किये जायेंगे, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी होगी। दिया कुमारी ने कहा कि शेखावाटी की पर्यटन के क्षेत्र में विशेष पहचान है और भाजपा की जीत यहाँ विकास के नये आयाम स्थापित करेगी।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी का झुंझुनू पहुँचने पर भाजपा के कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया।

इस अवसर पर मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, मंत्री अविनाश गहलोत, सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर, जिलाध्यक्ष बनवारी लाल सैनी, नवलगढ़ विधायक विक्रम सिंह जाखल, कोलायत विधायक अंशुमान भाटी, पूर्व विधायक रणवीर सिंह गुढा, बगड चेयरमैन गोविंद सिंह, पूर्व चेयरमैन विक्रम सिंह, विजेंद्र सिंह, जिला उपाध्यक्ष शेरसिंह, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष रतन सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष राजीव सिंह, पार्षद अजय सिंह, कीर्ति सिंह, दशरथ सिंह पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उपमुख्यमंत्री के झुंझुनू पहुँचने पर भाजपा के कार्यकर्ताओं ने नवलगढ़ और झुंझुनूं शहर की सीमा पर स्वागत किया। डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने परमवीर चक्र विजेता शहीद पीरु सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। देर शाम दिया कुमारी झुंझुनू स्थित चुनाव कार्यालय पहुँची जहां उन्होंने कार्यकर्ताओं से बातचीत की और उनका उत्साहवर्धन किया।

प्रदेश में सात सीटों पर हो रहे विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने ताकत झोंकी

- रामगढ़ में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन, गृह राज्यमंत्री जवाहर बेढम ने भाजपा के समर्थन में मतदान की अपील की
- मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा से जवाहर सिंह बेढम ने गुर्जर समाज के लोगों से फ़ोन पर बात कराई

जयपुर। प्रदेश में सात सीटों पर हो रहे विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने पूरी ताकत झोंक रखी है। भाजपा के मंत्री, विधायक और संगठन के लोग सभी समाजों तक पहुंचकर भाजपा के पक्ष में वोट डालने की अपील कर रहे हैं और सभी समाजों को अपनी और आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार मंगलवार को भाजपा प्रत्याशी सुखवंत सिंह के समर्थन में गुर्जर समाज का दीपावली मिलन समारोह रामगढ़ में आयोजित किया गया जिसमें रामगढ़ विधानसभा के गुर्जर समाज के लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, पूर्व कैबिनेट मंत्री हेम सिंह भड़ाना, गंगापुर सिटी विधायक मानसिंह गुर्जर ने समाज के लोगों से रामगढ़ सीट को भाजपा की झोली में डालने की अपील की। गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह मैडम ने फोन पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से भी समाज के लोगों की बात कराई। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लोगों से रामा श्यामा की और भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में वोट डलवाने की अपील की। इस दौरान भाजपा नेता राजेंद्र कसाना, जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता, सुदेश खम्बरा, बर्ह्मा मुनि,महेंद्र कुमावत मौजूद रहे।

भाजपा टोंक द्वारा देवली उनियारा विधानसभा चुनावों को लेकर उनियारा में मीडिया सेंटर का उद्घाटन भीलवाड़ा सांसद एवं विधानसभा चुनाव प्रभारी दामोदर अग्रवाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर मीडिया को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा प्रत्याशी की चुनावी सभाओं में उमड़ रहा जन सैलाब चुनाव परिणामों की दिशा बता रहा है और हम बूथ मैनेजमेंट पर ध्यान दे रहे हैं और अधिक से अधिक मतदान हो यही हमारा लक्ष्य है। वहीं खींवसर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी रेवन्तराम डांगा ने मंगलवार को आचीणा, करणू, शिवनाड़ा, साटिका, पाचौड़ी, हनुमान सागर, भोजास, खटौड़ा, झाड़ेली, बिरलोका, मोतीनाथरापुरा, जसनाथपुरा, पाबुसर, हेमपुरा में जनसंपर्क कर अपने पक्ष में समर्थन मांगा। इस मौक़े पर पूर्व सांसद ज्योति मिर्धा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपका एक एक मत खींवसर के विकास के लिए आगामी वर्षों की दशा और दिशा तय करेगा।

उप चुनाव को लेकर विधानसभा के चुनावी दौरे पर आई राजस्थान सरकार की उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि कांग्रेस ने ज़िले सहित शेखावाटी को यमुना नदी के पानी के नाम पर हमेशा धोखा देकर वोट की राजनीति की है जबकि भाजपा जो कहती है वो करती है। अब जल्द ही झुंझुनू ज़िले के लोगो को यमुना का पानी पेयजल व सिंचाई के रूप में मिलेगा। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार में राजेंद्र भांबू के विजय होने से विधानसभा क्षेत्र में बहुत विकास कार्य होंगे व एक लहलहाता झुंझुनूं आपको तोहफ़े में मिलेगा। चौरासी सीट पर कारीलाल ननोमा ने झोथरी मंडल में जनसंपर्क किया और चौकी, माल, बावड़ी खेड़ा, सुराता, बेड़ा, नगरिया, पंचेला में घर-घर जाकर प्रचार-प्रसार किया। सलूम्बर सीट से भाजपा प्रत्याशी शांता देवी ने कहा कि विकसित राजस्थान के साथ सलूम्बर को समृद्ध बनाने के लिए भाजपा को वोट देकर भजनलाल सरकार को मजबूत बनाना है। भाजपा प्रत्याशी शांता देवी ने मल्लाडा मंडल में गांव गांव जाकर जनसंपर्क किया।

सर्राफा व्यवसायी के घर जेवर सहित नगदी चोरी

चोरी की वारदात के बाद मकान में पुलिस ने जांच की।

- सात किलो चांदी, सोने के जेवरात सहित एक लाख की नकदी चोरी

नारायणपुर, (निसं)। कस्बे के पुराने बाजार में एक सर्राफा व्यापारी के घर से लाखों रुपए के सोने-चांदी के आभूषण और नकदी चोरी हो गए। ज्वैलर्स दीपावली मनाने के लिए अपने परिवार के साथ जयपुर गया हुआ था और पीछे से चोर सूने घर से लाखों रुपए के आभूषण और नकदी लेकर फरार हो गए।

ज्वैलर्स राकेश कुमार सोनी ने बताया कि धनतेरस के दिन वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जयपुर अपने माता-पिता के पास दीपावली मनाने गया था। राकेश सोनी नारायणपुर के सीएचसी में एकाउंटेंट के पद पर कार्यरत हैं, पार्ट-टाइम में वह अपने घर पर स्वर्णकार का काम करता है। उन्होंने बताया कि सोमवार शाम करीब सात बजे जब वह नारायणपुर स्थित अपने घर पहुंचा तो घर के मुख्य दरवाजे का ताला खोला, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। उन्होंने पड़ोसियों को बुलाया और दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। इसके बाद वह दूसरे मकान की छत से घर के अंदर गया, जहां सीढ़ियों का दरवाजा खुला हुआ था। घर के अंदर जाने पर उन्होंने देखा कि सभी कमरे का सामान बिखरा पड़ा था और अलमारी टूटी थी।

जांच करने पर पता चला कि सोने-चांदी के सभी आभूषण गायब थे। राकेश सोनी ने बताया कि करीब 7 किलो चांदी, सोने की चैन, सोने की 2 अंगूठी, सोने की झुमकी, सोने का पेंडल, 8 नग सोने की नोज पिन, बच्चों की और पत्नी की चांदी की पायजेब सहित लगभग एक लाख रुपए की नकदी चोरी हो गई। उन्होंने बताया कि ज्वेलरी का काम करने के साथ-साथ वह चांदी की सप्लाई का भी काम करता हैं। चोर उनके घर से लगभग10-12लाख रुपए का सामान लेकर फरार हो गए। घटना की सूचना पुलिस को दी गई,जिस पर थानाधिकारी शिम्भुदयाल मीणा मय जाप्ते के मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली। पुलिस ने चोरी का मुकदमा दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज समेत चार की मेडिकल जांच

- रियाज को यूरोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों का उपचार करवाया
- आरोपियों को हथियारबंद जवान, सिविल लाइन सहित और कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में हाई सिक्योरिटी जेल में शिफ्ट किया

अजमेर, (कासं)। उदयपुर में हुए टेलर कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज अत्तारी समेत 4 हार्डकोर आरोपियों को पुलिस मंगलवार को हाई सिक्योरिटी जेल से जवाहर लाल नेहरू अस्पताल लेकर पहुंची। रियाज को यूरोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों का ओपीडी में उपचार करवाया गया। आरोपियों को हथियारबंद जवान, सिविल लाइन सहित और कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में हाई सिक्योरिटी जेल में शिफ्ट किया गया।

गौरतलब है कि कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी गौस मोहम्मद, रियाज अत्तारी सहित अन्य आरोपी हाई सिक्योरिटी जेल में बंद है। रियाज अत्तारी को मंगलवार को बाथरूम में तकलीफ होने पर हाई सिक्योरिटी जेल से हथियारबंद जवानों और सिविल लाइन कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में यूरोलॉजी विभाग लेकर पहुंचे। रियाज की जांच करवाने के बाद संबंधित डॉक्टर को दिखाया गया। डॉक्टर द्वारा उसे प्राथमिक उपचार दिया। इसके बाद रियाज को वापस कड़ी सुरक्षा में हाई सिक्योरिटी जेल शिफ्ट किया गया। जानकारी अनुसार कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज अत्तारी के साथ अन्य 3 हार्डकोर अपराधियों को भी जेएलएन हॉस्पिटल लेकर पहुंचे थे। रियाज को सबसे पहले कार्डियोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों को जेएलएन अस्पताल की ओपीडी में लेकर पहुंचे। जहां हार्डकोर अपराधी सिकंदर ऑफ जीवण, दिलीप और अन्य हार्डकोर अपराधी को उपचार करवाने के बाद जेल में शिफ्ट कर दिया गया।

सड़क हादसे में महिला की मौत

हिण्डौन, (निसं)। लपावली मार्ग स्थित एक पेट्रोल पंप के पास अज्ञात बाइक की टक्कर से घायल हुई महिला की रविवार शाम को मौत हो गई। परिजन महिला को जिला अस्पताल से जयपुर ले जा रहे थे। मृतका हिण्डौन के भंडारण का पुरा निवासी शिमला सैनी के पति मोहन सैनी ने बताया कि भाई दूज पर उसकी पत्नी शिमला, बेटा रवि सैनी तीनों बाइक से टोडाभीम गए हुए थे। महिला शिमला देवी पीहर में भाईदूज मनाकर बाइक से गांव भंडारण का पुरा लौट रही थी। इस दौरान लपावली के पास वह उतरी।

पुष्कर में उमड़ रही आस्था की भीड़

पुष्कर, (निसं)। ब्रह्मा की नगरी पुष्कर में कार्तिक माह के धार्मिक मेले में आस्था का महाकुंभ लगने लगा है। पवित्र ब्रह्म सरोवर के तट पर बने घाटों पर स्नानार्थियों का तांता लगा हुआ है। वहीं ब्रह्मा मंदिर सहित अन्य मंदिरों में दर्शनार्थियों की लंबी कतारें देखी जा रही हैं। बाजारों, गलियों, मुख्य स्थानों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ लगी हुई है। मंदिरों में अन्नकूट महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं।

नगर के आश्रमों, मठों, मंदिरों, घाट किनारे साधु संतो ने डेरा जमाना शुरू कर दिया है। धर्मशालाएं, होटल, रिजॉर्ट की बुकिंग फुल हो चुकी है। धार्मिक मान्यता के अनुसार कार्तिक माह में पुष्कर सरोवर में स्नान पूजा अर्चना करने का महत्व है, लेकिन पुराणोक्त महत्व का पंचतीर्थ महास्नान का आगाज 12 नवंबर कार्तिक शुक्ल पक्ष की देव प्रबोधिनी एकादशी से होगा जिसकी पूर्णाहुति 15 नवंबर कार्तिक पूर्णिमा के महास्नान के साथ होगी। 9 नवंबर शनिवार को गोपाष्टमी, 10 नवंबर को आंवला नवमी का विशेष स्नान होगा। गोपाष्टमी 9 नवंबर को पुरोहित समुदाय की संस्था श्रीतीर्थ गुरु पुष्कर पुरोहित संघ ट्रस्ट के सानिध्य में सरोवर के मुख्य घाट पर धार्मिक ध्वजारोहण की रस्म अदायगी के साथ धार्मिक मेले का शुभारंभ होगा। इसी दिन हजारों किलो सामग्री का अन्नकूट व सरोवर के छप्पन भोग की झांकी सजाकर महाआरती की जाएगी।

सूने मकान से लाखों की चोरी

बिजयनगर, (निसं)। बीती रात बरल रोड स्थित महावीर कामेश कॉलोनी में स्थित हरीश पुत्र छोटू लाल सोनी के सूने आवास से अज्ञात चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम देते हुए लाखों के जेवरात व नकदी चुराकर ले गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार महावीर कामेश कॉलोनी निवासी हरीश सोनी दीपावली पर अपने परिवार के साथ ससुराल गए हुए थे। इसी बीच सोमवार रात्रि को अज्ञात चोरों ने सूने मकान के मुख्य द्वार का ताला तोड़कर भीतर प्रवेश किया और घर के कमरे में रखी अलमारी को खंगालते हुए उसमें रखी 4 किलो चांदी, 30 ग्राम सोना सहित दो लाख रुपये की नगदी चुराने में कामयाब हो गए। मंगलवार प्रात:पड़ोसियों ने घर के मुख्य द्वार को खुला हुआ देखकर मकान मालिक हरीश सोनी को चोरी की घटना की जानकारी दी। चोरी की वारदात की पुलिस को सूचना दी गई।

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग
प्रथम तल, स्वास्थ्य भवन, भीनमाल रोड, जालोर

क्रमांक-अ.अ./चि.वं स्वा./2024-25/2451-59 दिनांक-23.10.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 13/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से इस खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न चिकित्सालयों पर रू. 105 लाख का 1 सिविल कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्माण कार्य हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डिरिंग प्रक्रिया ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण डीआईपीआर की वैबसाईट WWW.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वैबसाईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

NIB NO. NRH2425A0347
1 NRH2425WSOB01359
DIPR/C/10828/2024

(रणवीर सिंह कछवाहा)
अधिशाषी अभियंता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जालोर

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (भ.सं.), भरतपुर
पावर हाउस के पास, मोतीझील, भरतपुर (ई-मेल -zcebz@jvvnl.org फोन नं.- 05644-236080)

ई-निविदा सूचना

टी.एन.-22, टी.एन.-23, टी.एन.-24 एवं टी.एन.-25 के लिए योग्य निविदादाताओं ऑनलाईन-निविदा दो भागों (तकनीकी-वाणिज्यिक), में श्रम दर पर आमंत्रित किऐ जाते है। टीएन-22:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, भरतपुर के अन्तर्गत भरतपुर वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन अटारी का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00671। टीएन-23:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, करौली के अन्तर्गत करौली वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन रॉउण्ड कलॉ का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00672। टीएन-24:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, डीग के अन्तर्गत डीग वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन रसिया का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00673। टीएन-25:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, डीग के अन्तर्गत डीग वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन जयश्री का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00674। योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा सम्बन्धित दस्तावेज ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 06.11.2024 से डाउनलोड कर सकते है। निविदाऐं ऑनलाईन ई-पोर्टल पर दिनांक 18.11.2024 (सायं 5:00 बजे) तक ही स्वीकार की जावेगी। निविदा सम्बन्धी जानकारी, कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://www.eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

जेपीआर-2908 (2024)
राज.संवाद/सी/24/7325

संभागीय मुख्य अभियंता (भरतपुर संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage and Infrastructure Corporation Ltd.
(A Government of Rajasthan Undertaking) Old Working Women Hostel, Behind Nehru Place, Lal Kothi, Tonk Road, Jaipur
Ph: 0141-2742240; E-mail: rudsico@rajasthan.gov.in, ruifdco@gmail.com; Web: urban.rajasthan.gov.in/rudsico

F18 (52) RUDSICO/AMRUT-2.0/2024-25/Tender/7635 Date :- 30/10/2024

NIB No. 04/2024-25

Notice inviting online bids for Rejuvenation of Water Body Project under AMRUT-2.0

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage & infrastructure Corporation Limited (RUDSICO),a Government of Rajasthan undertaking, invites online unconditional bids on behalf of the Governor of Rajasthan through e-procurement portal **http://eproc.rajasthan.gov.in** from eligible bidders in accordance with the RTPP Act 2012 and RTPP Rules 2013, amended up to date, and under Open Competitive Bidding (OCB) National with single stage-two envelope Bidding procedure for following works:

S. No.	Name of Work	Project Cost	Bid Security	Period of completion
1	Rejuvenation of Water Body projects at Karauli, Basedi, Rajakhera, Khirni & Gangapur City. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/02	15.54	0.311	12 months
2	Rejuvenation of Water Body projects at Sumerpur, Jalore, Ahore, Mt. Abu, Sirohi, Pindwara & Takhatgarh. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/04	20.88	0.418	12 months
3	Rejuvenation of Water Body projects at Pali. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/05	19.44	0.389	12 months
4	Rejuvenation of Water Body projects at Sri Madhopur, Suratgarh & Reengus. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/06	9.39	0.188	12 months
5	Rejuvenation of Water Body projects at Rajsamand & Kushalgar. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/07	7.73	0.155	12 months
6	Rejuvenation of Water Body projects at Chittorgarh, Nimbahera & Badi Sadri. Package AMRUT 2.0/RAJ/RWB/08	12.47	0.249	12 months

The details of NIB can be seen at e-procurement portal of state government sppp.rajasthan.gov.in and eproc.rajasthan.gov.in from date 07.11.2024 at 1700 Hours till the end date of online submission of bids i.e. 04.12.2024 up to 1800 Hours. Any subsequent addendum/corrigendum shall be published only at the e-procurement portal.

UBN No.: RDP2425WLOB0047 To RDP2425WLOB0052, NIB Code: RDP2425A0021

Executive Director
RUDSICO, Jaipur

Raj.Samwad/C/24/7326

राज्य सरकार की पहली वर्षगांठ पर किसानों को मिलेंगी बड़ी सौगातें

हमारी जनकल्याणकारी योजनाएं आमजन के सम्पूर्ण सशक्तिकरण की ओर महत्वपूर्ण कदम : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा के लिए बैठक आयोजित की गई। इसमें मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव अखिल अरोरा, शिखर अग्रवाल, कुलदीप रांका, श्रेया गुहा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राज्य सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रदेश के किसानों को कई बड़ी सौगातें देने जा रहे हैं। उन्होंने मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक में किसान कल्याण से जुड़ी योजनाओं की प्रगति और लाभ हस्तांतरण के बारे में जरूरी दिशा-निर्देश दिए। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं सिर्फ योजनाएं नहीं, बल्कि आमजन के सम्पूर्ण सशक्तीकरण की ओर बढ़ाया गया महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने कहा कि सभी हितधारकों से बराबर सम्पर्क रखते हुए विकास कार्यक्रमों एवं योजनाओं का लाभ और जानकारी जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में विकसित राजस्थान बनाने के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है।

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार अपनी प्रथम वर्षगांठ पर किसानों को बड़ी सौगातें देने की प्रभावी तैयारी कर रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के अंतर्गत 5 हजार 500 फार्मपौण्ड के लिए किसानों के खातों में सहायता राशि डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित की जाएगी है। इसी प्रकार 2 हजार किलोमीटर पाइपलाइन, 5 हजार किसानों को तारबंदी के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार नहरी क्षेत्र में 500 डिग्गियों, एक हजार किसानों को कृषि उपकरण सहायता और 2 हजार वर्मी कम्पोस्ट इकाइयों के लिए अनुदान सहायता प्रदान करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना के अंतर्गत 3 हजार किसानों को गोवंश से जैविक खाद उत्पादन के लिए सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने बताया कि नमो ड्रोन दीदी योजना में 50 क्लस्टर्स विकसित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की दूसरी किस्त भी किसानों को जारी की जाएगी। शर्मा ने कहा कि सरकार कुसुम योजना के माध्यम से सोलर पम्प की स्थापना के लिए 15 हजार किसानों को लाभान्वित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान में ड्रिप इरिगेशन ही सिंचाई हेतु एक दीर्घकालिक समाधान है। सरकार द्वारा 15 हजार किसानों को ड्रिप इरिगेशन के लिए वित्तीय सहायता डीबीटी के माध्यम से दी जाएगी। इसके साथ ही 1 हजार लाभार्थियों को कृषि एवं अकृषि ऋण ब्याज अनुदान पर प्रदान किए जाएंगे।

इस अवसर पर पशुपालकों को गोपाल क्रेडिट कार्ड वितरण के साथ-साथ एक हजार नए डेयरी बूथों का आवंटन, 200 नए बल्क मिल्क कूलर्स की स्थापना और एक हजार नए दूध संकलन केन्द्रों का उद्घाटन भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना के अंतर्गत 3.25 लाख से अधिक दुग्ध उत्पादकों को 5 रुपये प्रति लीटर की दर से अनुदान राशि देते हुए 183.22 करोड़ रुपये की राशि हस्तांतरित की जा चुकी है।

इस दौरान मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोरा, अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय शिखर अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता कुलदीप रांका, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रेया गुहा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

मिस फ्रांसिस का देहांत

जयपुर। सेंट जेवियर स्कूल की वरिष्ठतम पूर्व टीचर मिस एम.फ्रांसिस का मंगलवार को देहांत हो गया। वे संतोकबा दुर्लभजी अस्पताल जयपुर के अवेदना आश्रम में रहती थीं।

उनकी अंतिम यात्रा बुधवार को तीन बजे अवेदना आश्रम से रवाना होगी और घाटगेट स्थित चर्च पर साढ़े तीन बजे पहुंचेगी।

खाते से पैसे निकाले

जयपुर। मालवीय नगर थाना इलाके में बैंक कर्मचारी बनकर युवक को फोन कर किश्त की राशि जमा करने के नाम पर एटीएम की जानकारी लेकर उसके खाते से 75 हजार रुपए निकाल लिए।

जिंदा भ्रूण को मृत बताकर प्री-मैच्योर डिलीवरी की

एम.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल व कंट्रोलर और जनाना अस्पताल के अधीक्षक पर 5.20 लाख रुपए का हर्जाना

जयपुर। जयपुर महानगर प्रथम की स्थाई लोक अदालत ने गर्भ में पल रहे शिशु की मृत्यु बताकार प्री-मैच्योर डिलीवरी करने और बाद में शिशु की मौत को गंभीर लापरवाही माना है। इसके साथ ही अदालत ने विपक्षी एमएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल व कंट्रोलर और जनाना अस्पताल के अधीक्षक पर 5.20 लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। अदालत ने कहा कि विपक्षी हर्जाना राशि का भुगतान परिवादी को तीस दिन में करें। लोक अदालत के अध्यक्ष मनोज कुमार सहारिया व सदस्या सीमा शार्दुल ने यह आदेश बीना मीना के प्रार्थना पत्र पर दिए।

- अदालत ने इस मामले में शिशु की मौत को अस्पताल की गंभीर लापरवाही माना है

प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता विजी अग्रवाल ने बताया कि गर्भावस्था के दौरान प्रार्थिया ने जनाना अस्पताल की देखरेख में इलाज शुरू करवाया। उसकी एक नवंबर 2023 को अल्ट्रा सोनोग्राफी की, जिसमें 25 सप्ताह के भ्रूण की मृत्यु होना बताया। जबकि प्रार्थिया ने कहा कि उसे गर्भ में भ्रूण की हरकत महसूस हो रही है, लेकिन डॉक्टर्स ने उसे कहा कि तत्काल भ्रूण नहीं निकाला तो संक्रमण होने से उसकी जान जा सकती है। इसके बाद 9 नवंबर 2023 को इंजेक्शन देकर उसकी प्री मैच्योर डिलीवरी करवाई गई। इसमें उसने जीवित शिशु को जन्म दिया और उसे बच्चा वार्ड में भेजना बताया। प्रार्थना पत्र में कहा गया कि डिलीवरी के करीब तीन घंटे बाद उसे बताया कि प्री मैच्योर डिलीवरी के चलते शिशु की मृत्यु हो गई है। इस पर अदालत में प्रार्थना पत्र पेश कर क्षतिपूर्ति राशि देने की गुहार की। इसके जवाब में अस्पताल प्रशासन की ओर से कहा गया कि मरीजों की भीड और अधिक कार्य होने के कारण सोनोग्राफी बदलने से इनकार नहीं किया जा सकता। यूनिट के डॉक्टर ने सोनोग्राफी पर ही प्रसव का निर्णय लिया था। शिशु को बचाने का हर संभव प्रयास भी किया गया था और उसे पहले एनआईसीयू में भर्ती करने के बाद वेंटीलेटर पर भी रखा गया, लेकिन बाद में उसकी मृत्यु हो गई। ऐसे में उनकी ओर से लापरवाही नहीं बरती गई है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अस्पताल पर हर्जाना लगाया है।

महेश जोशी की मुश्किलें बढ़ेंगी, ए.सी.बी. ने मुकदमा दर्ज किया

जे.जे.एम. घोटाले में जोशी सहित 20 आरोपियों के नाम

जयपुर, (का.प्र.)। कांग्रेस सरकार में पीएचईडी मंत्री रहे महेश जोशी पर ईडी के बाद राजस्थान ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने भी जल जीवन मिशन में घोटाले में जोशी सहित 20 लोग और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया है। इनमें पीएचईडी के अधिकारियों, पीएचईडी के ठेकेदार और निजी व्यक्तियों के नाम भी शामिल हैं।

- इसी मामले में ई.डी.भी कर रही है जांच, जोशी के नजदीकी संजय बड़ाया और फर्म प्रोपराइटर की हो चुकी है गिरफ़्तारी

एसीबी के डीजी डॉ. रविप्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विशनाराम की रिपोर्ट के आधार पर जल जीवन मिशन में गड़बड़ियों के संबंध में 20 लोगों और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है। जिसकी जांच एसीबी की विशेष शाखा के एएसपी पुष्पेंद्र सिंह को सौंपी गई है। एसीबी में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार पूर्व मंत्री महेश जोशी, जल जीवन मिशन के वित्तीय सलाहकार सुशील शर्मा, पीएचईडी के तत्कालीन मुख्य अभियंता रामकरण मीणा, दिनेश गोयल, तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य अभियंता, रमेश चंद मीणा, अरुण श्रीवास्तव, परितोष गुप्ता, तत्कालीन अधीक्षण अभियंता अजय कुमार सिंघानी, विकास गुप्ता, महेश प्रकाश सोनी, भगवान सहाय जाजू, जितेंद्र शर्मा, विशाल सक्सेना, मैसर्स श्रीगणपति ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा के प्रोप्राइटर महेश मित्तल, फर्म श्री गणपति ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा, श्रीश्याम ट्रयूबवेल कंपनी के प्रोप्राइटर पदमचंद जैन, फर्म श्रीश्याम ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा, इरकॉन इंटरनेशनल के ऑफिस सहायक मुकेश पाठक, जोशी के नजदीकी संजय बड़ाया, किशन गुप्ता, तपन गुप्ता, नमन खंडेलवाल सहित अन्य के खिलाफ जल जीवन मिशन घोटाले को लेकर नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है।

इससे पहले जल जीवन मिशन घोटाले में अवैध रूप से धन के लेन-देन को लेकर प्रवर्तन निदेशालय ने भी केस दर्ज किया था। ईडी ने इस मामले में पदमचंद जैन, महेश मित्तल, पीयूष जैन सहित कई आरोपियों को गिरफ्तार कर पूछताछ भी की थी। इसी मामले में सीबीआई ने भी पीएचईडी के अधिकारियों व अन्य के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज किया था। अब एसीबी ने महेश जोशी सहित 20 लोगों और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया है।

यह मामला एसीबी ने खोला था। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पहले एसीबी ने जल जीवन मिशन के बिल पास करने की एवज में रिश्वत का लेन-देन करते ठेकेदार और पीएचईडी के अधिकारियों को गिरफ्तार किया था। जांच में सामने आया कि कई जगहों पर बिना पाइप लाइन बिछाए ही भुगतान कर दिया गया। इसके साथ ही हरियाणा से चोरी के पाइप बिछाने की बात भी सामने आई थी। अब एसीबी आरोपियों को कभी भी पूछताछ के लिए बुला सकती है।

प्रदेश के पूर्ण विकास के लिए भाजपा ही जरूरी : भजनलाल

- मुख्यमंत्री लगातार ले रहे पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से चुनावी फीडबैक
- उप चुनाव में कांग्रेस के जातिवाद पर भारी भाजपा का विकास का एजेण्डा
- 'कांग्रेस राज में घोटालेबाजों और माफियाओं ने मचा रखी थी लूट'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सात विधानसभा क्षेत्रों में उप चुनाव पर लगातार नज़र बनाए हुए हैं। वे दिन की शुरुआत उप चुनाव की तैयारियों के लिए बूथ, मंडल स्तर से लेकर जिला स्तर तक के सैकड़ों पदाधिकारियों से फोन पर बातचीत करके करते हैं। मुख्यमंत्री ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से मुलाकात कर उप चुनाव की तैयारियों का फीडबैक लिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान कहा कि विधानसभा उप चुनाव में कांग्रेस के जातिवाद के एजेण्डे पर हमारी सरकार का विकास का एजेण्डा भारी है। उन्होंने कहा कि दस महीने के छोटे समय में हमने रिकॉर्ड काम किए हैं जिससे कांग्रेस की नींव हिल चुकी है और जनता का हमारी सरकार पर विश्वास जमा है। जिन मुद्दों पर कांग्रेस वर्षों तक राजनीति करती रही, हमारी डबल इंजन सरकार उनसे संबंधित समझौते कर तेजी से उन्हें धरातल पर उतारने का कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि राइज़िंग राजस्थान से पहले ही हमारी सरकार ने 18 लाख करोड़ के निवेश एमओयू किए हैं और इन एमओयू को धरातल पर लाने के लिए सरकार पूरी तरह समर्पित होकर कार्य कर रही है, ये निवेश राजस्थान को विकसित राजस्थान बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। पेपर लीक जैसे मामलों में एसआईटी ने 190 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कांग्रेस राज में किस कदर माफियाओं और घोटालेबाजों ने लूट मचा रखी थी। उन्होंने कहा कि हम दिखावे के बिना निरंतर जन कल्याण के कार्य करते हैं, जबकि कांग्रेस काम का नाम करने में भी बेईमानी करती है। उप चुनाव में कांग्रेस के बागी ही अपने प्रत्याशियों को निपटाएंगे।

कालवाड़ महाविद्यालय में बढ़ी प्रवेश तिथि

जयपुर। कैबिनेट मंत्री झोटवाड़ा के विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ के अथक प्रयासों और समर्पण से युवाओं के लिए एक बड़ी खुशखबरी आई है। कालवाड़ महाविद्यालय में प्रवेश की तिथियों को बढ़ा दिया गया है, जिससे अब भी इच्छुक छात्र दाखिला ले सकते हैं। यह कदम युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने और उन्हें शिक्षा के नए अवसर प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार युवाओं की शिक्षा और विकास के लिए समर्पित है। यह महाविद्यालय झोटवाड़ा क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। कर्नल राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और विजन से राजस्थान की भाजपा सरकार सुनिश्चित कर रही है कि क्षेत्र के हर युवा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

पर्याप्त मानव संसाधन नहीं रखने वाले अस्पतालों पर कार्रवाई की सिफारिश

सरकारी योजनाओं से भी असम्बद्ध होंगे

जयपुर। राज्य मानवाधिकार आयोग ने राज्य सरकार को कहा है कि संपूर्ण प्रदेश में अभियान चलाकर सभी अस्पतालों की जांच की जाए और वर्ष 2010 के प्रावधानों के तहत उचित मानव संसाधन नहीं रखने पर उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाए। आयोग ने कहा कि संसाधनों की अनुपलब्धता के बावजूद मानव जीवन के साथ खिलवाड करने वाले अस्पतालें को चिरंजीवी योजना सहित अन्य सभी सरकारी योजनाओं से भी डी-लिस्ट किया जाए। आयोग ने भवानीमंडी के निजी अस्पताल में बच्चे की मौत के मामले में उसके पिता को पांच लाख रुपए की मुआवजा राशि देने को कहा है। अदालत ने राज्य सरकार को छूट दी है कि वह इसमें से ढाई लाख रुपए की राशि दोषी अस्पताल नवजीवन हॉस्पीटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रबंधन या दोषी चिकित्सकों से वसूल कर सकती है। आयोग सदस्य जस्टिस आरसी झाला ने यह आदेश आशीष पारेता के परिवाद पर दिए। आयोग ने कहा कि दोषी अस्पताल की शिशु रोग इकाई को बंद करने, अस्पताल प्रबंधन पर एक लाख रुपए का हर्जाना लगाने और चिरंजीवी योजना से डी-लिस्ट करने मात्र से परिवादी के आठ साल के बेटे की मौत से हुई क्षित की पूर्ति संभव नहीं है।

परिवाद में बताया गया कि 25 जनवरी, 2023 को उसके आठ साल के बेटे प्रहल पारेता के पेट दर्द होने पर उसे नवजीवन अस्पताल, भवानीमंडी लेकर गए। अस्पताल में पूछने पर पता चला कि यहां बच्चों के डॉक्टर शैलेन्द्र पाटीदार हैं। वहीं वहां मौजूद दूसरे चिकित्सक कुलदीप सिंह ने इलाज करना शुरू कर दिया। दो घंटे बाद कुलदीप सिंह के स्थान पर डॉ. हरिवल्लभ ने आकर इलाज किया और डॉ. शैलेन्द्र पाटीदार का थोडी देर में आना बताया। इसके बाद दोपहर में हरिवल्लभ ने बताया कि डॉ. पाटीदार के शादी में जाने के कारण वे अस्पताल नहीं आ सकते हैं। इस पर वे बच्चे को गंभीर हालत में दूसरे अस्पताल ले गए। इस दौरान रास्ते में उसने दम तोड दिया। परिवाद में बताया गया कि हरिवल्लभ एमबीबीएस चिकित्सक ही नहीं है। ऐसे में अयोग्य चिकित्सक के इलाज के कारण बच्चे की मौत हुई है। मामला आयोग में आने के बाद राज्य सरकार की ओर से अस्पताल प्रशासन पर कार्रवाई कर उसकी जानकारी आयोग को दी गई। इस पर आयोग ने राज्य सरकार को सभी अस्पतालों के संबंध में विस्तृत सिफारिशें की हैं।

शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर मांगा जवाब

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने 12 साल पहले शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर 16 बिन्दुओं पर दिए निर्देशों की पालना को लेकर राज्य सरकार से 11 नवंबर तक जवाब पेश करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश अधिवक्ता विमल चौधरी के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।

प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता विमल चौधरी और अधिवक्ता योगेश टेलर ने अदालत को बताया कि शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर हाईकोर्ट ने 21 मई 2012 को राज्य सरकार को 16 बिंदुओं पर विस्तृत दिशा-निर्देश दिए थे। इसके तहत हर वार्ड में सौ सफाई कर्मचारी लगाने, सप्ताह के हर दिन सफाई करने, सिंगल टियर सिस्टम से सफाई, कचरा पात्र लगाने, डोर टू डोर कचरा संग्रहण और चार मोबाइल मजिस्ट्रेट सहित अन्य निर्देश दिए थे। इसके साथ ही अदालत ने इन निर्देशों की पालना को लेकर हर तीन माह में रिपोर्ट पेश करने को कहा था।

परीक्षा स्थगित

जयपुर। जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा शास्त्री के प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष की सात नवंबर से चौदह नवंबर तक चलने वाली परीक्षा में आंशिक संशोधन किया है। परीक्षा नियंत्रक डॉ. शंभु कुमार झा ने बताया कि प्रदेश के 42 केंद्रों पर दो पारियों में होने वाली परीक्षा में 13 नवंबर को विधानसभा उपचुनाव के चलते स्थगित किया गया है। झा ने बताया कि अब यह परीक्षा संशोधित कार्यक्रम के अनुसार पूर्व निर्धारित समय और परीक्षा केंद्र पर 16 नवंबर को होगी। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार इंटीग्रेटेड शास्त्री-शिक्षा शास्त्री की 13 नवंबर को होने वाली परीक्षा 23 नवंबर को होगी।

जल जीवन मिशन के कार्यों के लिए 658.12 करोड़ रुपए स्वीकृत

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों एवं पहल पर प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 23 जिलों के 46 पंचायत समितियों के 507 गांवों में 181 कार्यादेश जारी करने के लिए 658.12 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। इससे न केवल प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्यों को गति मिलेगी बल्कि इन जिलों के 1.12 लाख घरों में घरेलू जल कनेक्शन उपलब्ध करवा कर लाभान्वित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने बताया कि जल जीवन मिशन योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। लेकिन पूर्ववर्ती सरकार सरकार ने इस योजना को गंभीरता से नहीं लिया, जिसकी वजह से निर्धारित समय अवधि में काम पूरे नहीं हो सके। अब राज्य सरकार हर घर नल से जल पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। योजना को गति देने के लिए 658.12 करोड रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

जलदाय मंत्री कन्हैया लाल ने बताया कि प्रदेश के अजमेर, बालोतरा, बारां, भरतपुर, चित्तौडगढ़, डीग, धौलपुर, गंगापुरसिटी, हनुमानगढ, जैसलमेर, झालावाड़, जोधपुर, करौली, केकड़ी, पाली, सवाईमाधोपुर, सिरोही, श्री गंगानगर एवं उदयपुर के 33 पंचायत समितियों के 413 गांवों के लिए 520.28 करोड़ रूपये की 137 कार्यादेश जारी किये जायेगे। इन स्वीकृतियों से ना केवल जल जीवन मिशन के कार्यों को गति मिलेगी बल्कि इन जिलों के गांवों में रहने वाले व्यक्तियों को योजना के तहत स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा जो कि हर घर जल के सपने को साकार करेगा।

भाजपा में परिवार भाव के साथ एकजुटता से किया जा रहा है कार्य : श्रवण सिंह बगडी

- केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी, मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ सहित 17 मंत्री, विधायक और भाजपा पदाधिकारी 6 नवम्बर को रहेंगे प्रवास पर

जयपुर। भाजपा प्रदेश के उपचुनावों को लेकर पूर्णरूप से सक्रिय नजर आ रही है। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ जहां हर उपचुनाव वाले विधानसभा क्षेत्रों का दौरा कर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर चुनावी रणनीति तय कर रहे है, वहीं भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में विकास के नाम पर आमजन से मतदान की अपील भी कर रहे है। इधर दूसरी ओर भाजपा पदाधिकारी, कैबिनेट के मंत्री सरकार के कार्यों को लेकर जनता के बीच पहुंच रहे है। संगठन स्तर पर भाजपा का एक-एक पदाधिकारी, कार्यकर्ता चुनावों में जुटा हुआ है। भाजपा प्रदेश कार्यालय से महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी और उनकी टीम लगातार उपचुनावों में प्रवास कार्यक्रमों के साथ क्षेत्र की राजनीति में सक्रिय जननेताओं को आमजन के बीच भेज रहे है। भाजपा प्रदेश कार्यालय पर नियमित रूप से चुनाव प्रबंधन के साथ प्रवास कार्यक्रम की रूपरेखा तय की जा रही है।

भाजपा प्रदेश महामंत्री ने कहा कि प्रदेश के उपचुनावों में भाजपा सभी सातों सीटों पर भारी बहुमत के साथ जीत दर्ज कराएगी। भाजपा में कार्यकर्ता से लेकर आमजन एकजुट होकर कमल के लिए कार्य कर रहे है। भाजपा में एकजुटता नजर आ रही है, वहीं कांग्रेस में भितरघात देखने को मिल रहा है। भाजपा सरकार के मंत्रीगण मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 10 माह में किए ऐतिहासिक कार्यों को जनता के बीच पहुंचा रहे है, फिर चाहे वो बजट घोषणाएं हो या फिर रोजगार सृजन के लिए राइजिंग राजस्थान 2024 की कार्य योजना। मुख्यमंत्री शर्मा विकसित राजस्थान के लिए लगातार प्रयासरत है और उनके विकास कार्यों के आधार पर भाजपा प्रदेश की सभी सातों सीट जीतेगी।

बगडी ने कहा कि भाजपा में परिवार भाव के साथ काम किया जाता है, भाजपा पदाधिकारियों के साथ कार्यकर्ता और आमजन मिलकर चुनाव लड़ रहे है। ऐसे में उपचुनावों के माहौल को देखते हुए कांग्रेस भाजपा के सामने कहीं भी नजर नहीं आ रही, माहौल भाजपा के पक्ष में है और निश्चित रूप से सभी प्रत्याशी जीतेंगे।

श्रवण सिंह बगडी ने बताया कि बुधवार 6 नवंबर को खींवसर विधानसभा क्षेत्र में केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राज्य सरकार के मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड और भाजपा प्रदेश महामंत्री जितेंद्र गोठवाल प्रवास पर रहेंगे। इसी तरह रामगढ में उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, गुजरात योग बोर्ड के चैयरमैन शीशपाल, विधायक भागचंद टांकडा, झुंझुनूं में पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां, सांसद राजेंद्र गहलोत, पूर्व सांसद सुमेधानंद सरस्वती और सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजौर, दौसा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रभूलाल सैनी, सलूंबर में मंत्री जोराराम कुमावत, विधायक सुरेंद्र सिंह, दीप्ति माहेश्वरी, समाराम गरासिया तथा चौरासी में मंत्री बाबूलाल खराडी प्रवास पर रहेंगे।

समृद्ध विरासत और परम्पराओं का प्रदेश है राजस्थान : देवनानी

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सिडनी में आयोजित भारत रीजन के 67वें राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ के सम्मेलन की डेलीगेट ब्रीफिंग में भाग लिया।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी चार देशों की यात्रा के दौरान मंगलवार को सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) पहुँचे। देवनानी का सिडनी पहुँचने पर अधिकारियों ने स्वागत किया। देवनानी ने सिडनी में आयोजित भारत रीजन के 67वें राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ के सम्मेलन की डेलीगेट ब्रीफिंग में भाग लिया। देवनानी ने सम्मेलन में मौजूद उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडू सहित भारत के विभिन्न प्रदेशों के विधान सभा अध्यक्षगण और सांसदगण से मुलाकात की।

- विधान सभा अध्यक्ष देवनानी पहुँचे सिडनी

इस मौके पर देवनानी ने कहा कि राजस्थान प्रदेश की अपनी समृद्ध विरासत, परम्पराओं और प्राकृतिक सुंदरता के लिए विशिष्ट पहचान है। जयपुर के महल, उदयपुर की झीले और जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर के भव्य दुर्ग देशी तथा विदेशी सैलानियों के लिए पंसदीदा स्थान है। राज्य के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने के लिए प्रति दिन हजारों की संख्या में पर्यटक आते है। देवनानी इस अध्ययन यात्रा के दौरान विभिन्न देशों के विधायी निकायों का अवलोकन करने के साथ संसदीय प्रतिनिधिगण से लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढीकरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं के अध्यक्षगण एक मंच पर एकत्रित होकर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए विभिन्न विषयों पर संवाद करते है। इस बार का राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ का सम्मेलन आस्ट्रेलिया में 5 से 8 नवम्बर तक हो रहा है। संसदीय संघ का यह 67वां सम्मेलन है। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए अध्यक्ष देवनानी के साथ विधान सभा के विशिष्ट सचिव भारत भूषण शर्मा भी गये है।

शिक्षक मनीष मीना की हत्या से आक्रोशित मीना समाज के लोगों ने जाम लगाया

आरोपियों को कड़ी सजा दिलाने की मांग, एक करोड़ की आर्थिक सहायता का ज्ञापन सौंपा

■ हिंडोली विधायक ने पुलिस प्रशासन पर लापरवाही बरतने के आरोप लगाए

बूंदी शहर के लंकागेट रोड पर कहासुनी के मामले में हुई शिक्षक मनीष मीना की हत्या से आक्रोशित मीना समाज व ग्रामीण रात को ही सड़क पर उतर गये।

बूंदी (निसं)। शहर के लंकागेट रोड पर सोमवार रात को एक ढाबे पर मामूली कहासुनी के मामले में हुई शिक्षक मनीष मीना की हत्या से आक्रोशित मीना समाज व ग्रामीण रात को ही सड़क पर उतर गये। उन्होंने कलेक्ट्रेट के बाहर पडाव डाल दिया और पूरी रात वहीं डटे रहे। मंगलवार सुबह जैसे जैसे लेगों को सूचना मिली वे प्रदर्शन में शामिल होते गए। प्रदर्शनकारियों ने कलेक्ट्रेट के बाहर रास्ता जाम कर दिया जिससे आवागमन पूरी तरह बाधित रहा।

बड़ी संख्या में शामिल प्रदर्शनकारी शिक्षक मनीष मीना को न्याय दो, हत्यारों को फांसी दी, पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद आदि के नारे लगा रहे थे। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिस जाप्ता तैनात रहा। जिसमें अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमा शर्मा, पुलिस उपाधीक्षक सहित थानाधिकारी व जवान बडी संख्या में मौजूद रहे। इस दौरान कई बार वार्ता के प्रयास भी हुए लेकिन बात नहीं बन सकी। प्रदर्शनकारी जिला कलेक्टर कोबाहर बुलाने की मांग पर अड़े रहे। इस दौरान शिक्षक मनीष मीना के शव का पोस्टमार्टम भी रूका रहा। पुलिस व आक्रोशित लोगों के बीच मामूली झड़पे भी हुई। दोपहर 2 बजे अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रदर्शनकारियों के बीच पहुंचे जहां समाज के गणमान्य नागरिकों ने उन्हें एक ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में गुतक शिक्षक के परिजनों को एक करोड़ रूपए की आर्थिक सहायता देने और हत्यारों को गिरफ्तार कर कड़ी सजा देने की मांग की गई। जिस पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने आश्वस्त किया कि आरोपी जल्द गिरफ्तार होंगे तथा आर्थिक सहायता के लिए सरकार को पत्र भेजा जाएगा। इसके बाद लोगों ने जाम हटा दिया। दूसरी और शिक्षक मनीष मीना का पोस्टमार्टम गठित बोर्ड द्वारा किया गया। पोल्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।इस अवसर पर मीना समाज के कार्यकारी जिलाध्यक्ष जोधराज मीना, पूर्व जिलाध्यक्ष आनंदीलाल मीना, रामेश्वर मीना लाडपुर, पूर्व जिला प्रमुख महावीर मीना, शिक्षक संघ पंचायत राज के जिला अध्यक्ष गोपाल मीणा सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

शिक्षक की शहर में सरेआम हत्या करने वालों के खिलाफ पुलिस कुछ नहीं कर पा रही है वहीं समाज के लोगों ने पुलिस पर मामले में लापरवाही बरतने का भी आरोप लगाया है परिवार का आरोप है कि पुलिस अगर समय पर पहुंच जाती तो शायद समाज का बेटा बच सकता था। अत्यधिक खून बह जाने के कारण उसकी मौत हुई है। उसे समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया गया न ही उसे समय पर इलाज मिला। समाज के लोगों का आरोप है की पूरा पुलिस प्रशासन लोकसभा अध्यक्ष के कार्यक्रम में व्यस्त था वहीं पीछे से आरोपी खुलेआम बेखोफ इस घटना को अंजाम दे रहे थे।

विधायक हरिमोहन शर्मा भी मौके पर पहुंचे और प्रशासन को आड़े हाथो लिगा। उन्होंने कहा कि जिले में कानून व्यवस्था पूरी तरह विफल हो चुकी है। यदि पुलिस सक्रिय रहती तो आरोपी रात को ही गिरफ्तार हो जाते। उन्होंने मृतक के आश्रितों को एक करोड़ रूपये की राज्य सरकार से आर्थिक सहायता दिलवाने और आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार करने की बात कही। शर्मा ने कहा कि जिले में असामाजिक तत्वों की गतिविधियां बढ़ रही है और पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी है।

हिंडोली विधायक पूर्व मंत्री अशोक चांदना ने भी मामले को लेकर दुख व्यक्त किया है तथा इसे पुलिस प्रशासन की विफलता माना है। विधायक चांदना ने कहा कि सरेआम एक शिक्षक की हत्या हो जाना बूंदी में कानून व्यवस्था की पोल खोल रही है।उन्होंने बूंदी पुलिस से आग्रह किया कि मामले में संज्ञान लेकर पीड़ित परिवार के साथ न्याय करें जिससे आमजन में विश्वाश कायम हो सके वहीं शिक्षक संघ ने भी शिक्षक की हत्या को लेकर आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग का जिला कलेक्टर और जिला पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सोपा है।

गुंजल ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा

कोटा, (निसं)। पूर्व विधायक व कांग्रेस नेता प्रहलाद गुंजल ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर नगरीय निकायों में निकायवार रिक्त सफाई कर्मचारियों के पदों की सीधी में अनुभव प्रमाण पत्र की शर्त को अव्यावहारिक बताया। गुंजल ने कहा कि भर्ती हेतु जारी परिपत्र में सफाई कर्मचारी हेतु नगर निगम, नगर परिषद, नगर पालिका में ही काम करने का जो अनुभव प्रमाण पत्र मांगा गया है वह अव्यावहारिक है। उन्होने कहा कि वाल्मीकि समाज के हजारों लोगों में कितने लोगों को नगरीय निकायों में संविदा, निविदा पर काम पर लिया जाता है। साथ ही झाड़ू लगाने जैसे काम के लिए यह कहां तक व्यवहारिक है की नगरीय निकायों का ही अनुभव प्रमाण पत्र मान्य होगा। गुंजल ने कहा कि वाल्मीकि समाज के गरीब लोग अन्य राजकीय विभागों में संविदा पर, निजी अस्पतालों, होटलो, दुकानों, मेसो यहां तक की गरीब अपनी आजीविका चलाने के लिए 20-20 घरों में 300 रुपए महीने में शौचालय साफ करने तक का काम करते हैं। गुंजल ने मांग की कि इस भर्ती में सफाई कर्मचारियों का नगरीय निकायों के अलावा अन्य राजकीय विभागों, अस्पतालों, होटलो, दुकानों, मेसो सहित निजी घरों का भी अनुभव प्रमाण पत्र मान्य होना चाहिऐं अथवा इस अनुभव प्रमाण पत्र की शर्त को अविलंभ हटाया जाना चाहिए साथ यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इसमें वाल्मीकि समाज के लोगों की ही अधिक से अधिक भर्ती हो। मुख्यमंत्री वाल्मीकि समाज की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए अनुभव प्रमाण पत्र की शर्त पर पुनः विचार करे व उचित निर्णय होने तक आवदेन की अंतिम तिथि को निर्णय होने के एक सप्ताह बाद तक आगे बढ़ाये।

सार-समाचार

तेजाजी महाराज की लीला का शुभारंभ

रावतभाटा, (निसं)। वीर तेजाजी महाराज की 6 दिवसीय लीला का शुभारंभ। तेजाजी कमेटी के फोरूलाल राठौर ने जानकारी देते हुए बताया कि बोराव के मालीपुर में सोमवार से 6 दिवसीय वीर तेजाजी के मारवाड़ी खेल का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जाट महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष प्रहलाद जाट एवं विशिष्ट अतिथि बालकिशन गुलाटी ने फीता काटकर किया। मारवाडी खेल का कार्यक्रम 6 दिन तक चलेगा, इस दौरान सत्यनारायण धाकड, रामलाल राव, कार्तिक तोमर, रमेश कुमार, जमनालाल, सुरेश कुमार, रतनलाल, सुरेश गुर्जर एवं मालीपुर गांव के ग्रामीण लोग मौजूद रहे।

दीपावली की रामा-श्यामी की

अंता (निसं)। दीपावली महापर्व को लेकर अंता मांगरोल विधानसभा विधायक डॉ कंवरलाल मीणा ने अंता कस्बे में पहुंच कर कार्यकर्ताओं के साथ कस्बे वासियों से रामा श्यामी की, साथ ही सभी को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं दी। रामा श्यामी के दौरान कस्बे में लोगों द्वारा विधायक डॉ कंवरलाल मीणा का जगह-जगह पर साफाबंदी के साथ मुंह मीठा करा कर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान विधायक डॉ कंवरलाल मीणा ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह अपनी विधानसभा के लोगो के प्रति हमेशा तत्पर रहते हैं। और जो भी समस्या हो वह बेझिझक कार्यालय पर पहुंच कर अवगत कराए निश्चित तौर पर उस समस्या का समाधान होगा। विधायक डा कंवरलाल मीणा के साथ भाजपा जिला अध्यक्ष नन्दलाल सुमन, जिला उपाध्यक्ष दिलीप शर्मा काचरी, देहात मंडल अध्यक्ष राहुल नागर, प्रधान प्रखर कौशल,अंता नगरपालिका अध्यक्ष रामेश्वर खण्डेलवाल, गोविन्द शर्मा, सतीश नागर, सुरेंद्र नागर, पार्षद रामराज बागड़ी, सरपंच राजसिंह चौधरी, धनराज चौरसिया, महेश पंवार, राधेश्याम सिंगोदिया, मनोज मीणा पलसावा, मोहित कालरा, भारत गालव, नंदकिशोर नायक, कीर्ति मालव, निर्मल श्रृंगी, घनश्याम मारन, नगर अध्यक्ष युवा मोर्चा चेतन नागर, हरि गुर्जर, ओम चौरसिया, क्षेमेंद्र मिश्रा, अशोक दाधीच, सरपंच जोधराज मीणा, हरिओम बंजारा, ब्रजेश दाधीच, प्रवीण गालव, महावीर नागर मौजूद रहे।

विधायक से मिले थर्मल कर्मी

छबड़ा (निसं)। निजीकरण के खिलाफ चल रहे विरोध प्रदर्शन के सातवे दिन थर्मल कर्मियों ने विधायक प्रताप सिंह सिंघवी से मुलाकात कर ज्ञापन दिया और अपनी पीडा बताई। थर्मल कर्मियों ने विधायक सिंघवी को निजीकरण से होने वाले नुकसान को बताया। निजीकरण से आम जनता को, युवाओं को, किसानों को, छबडा के मजदूरों ओर थर्मल कर्मियों का भविष्य अंधकारमय होने वाला है। ज्वाइंट वेंचर रुपी निजीकरण से आने वाले समय में बिजली जैसी अति आवश्यकता सेवा में कंपनी की मनमानी होने लगेगी, जिससे बिजली महंगी होगी। थर्मल में चल रहे विरोध प्रदर्शन का सरकार पर अभी तक कोई खास फर्क नहीं पडा रहा है, परंतु अगर इस विरोध प्रदर्शन से बिजली उत्पादन व्यवस्था चरमराई तो कौन जिम्मेदार होगा। सरकार को समझना होगा कि अपनी संपत्ति को किसी निजी हाथों में देना समस्या का समाधान नहीं है। इस तरह के निजीकरण से थर्मल का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। बिजली विभाग में नौकरी की आस लगाए बैठे राजस्थान के युवा आने वाले समय में रोजगार के लिए भटकते रहेंगे। विधायक सिंघवी ने आश्वाशन दिया कि वो सरकार से बात करेंगे और यथा संभव प्रयास करेंगे कि थर्मल कर्मियों का ओर आम जनता का नुकसान न हों।

जागरुकता सप्ताह कार्यक्रम आयोजित

रावतभाटा, (निसं)। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का राजस्थान परमाणु बिजलीघर, भारी पानी सयंत्र रावतभाटा में मंगलवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय रावतभाटा में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमे महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को अखंडता की प्रतिज्ञा दिलाई गई। इसके बाद छात्र-छात्राओं को भ्रष्टाचार के बारे में जागरूक रहने के बारे में बताया गया। सोशल मीडिया में चलचित्रों के माध्यम से जागरूकता के बारे बताया। इस बार की सतर्कता जागरूकता की थीम "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" को ध्यान में रखकर आने वाली नई पीढ़ी को जागरूक रहकर देश को उन्नति के पथ पर ले जाना है। कमांडेंट विवेक आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान पीढी और आने वाली नई पीढी जब ईमानदारी और लगन से काम करेगी तो देश उन्नति की कदम बढाएगा। इस कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय की प्राचार्या, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के अधिकारीगण एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं एवं अन्य स्टाफ मौजूद रहे।

स्नेह मिलन समारोह आयोजित

छीपाबड़ौद (निसं)। छीपाबड़ौद के सारथल में भाजपा कार्यकर्ताओं का स्नेह मिलन समारोह मंगलवार दोपहर आयोजित हुआ।इस दौरान विधायक प्रताप सिंह सिंघवी ने आम कार्यकर्ताओं को एकजुटता से आमजन की समस्याओं को हल करने हेतु जुटने का आव्हान किया। सिंघवी ने कहा कि सक्रिय सदस्य समस्या उन्हें बताएं वह उसका हल करने का भरसक प्रयास करेंगे।इस दौरान प्रधान नरेश मीणा, पंचायत समिति सदस्य मांगीलाल गांगटी, रामबिलास कालाटोल,महिला मोर्चा की ललिता लोधा, प्रेमचंद भानपुरा,मयंक गोत्तम मोखमपुरा, हरगोविंद गुर्जर, लीलाधर शर्मा,चंदू ठेकेदार ढोलम, चंचल शर्मा,पूर्व प्रधान उदालाल मीणा, पूर्व सरपंच अशोक गुप्ता समेत सैकडों सदस्य मोजूद रहे। मंच संचालन राजसिंह फोजदार ने किया।

ग्राम पंचायत गोलाना में जनसुनवाई कल

झालावाड़ (निसं)। त्रिस्तरीय जनसुनवाई कार्यक्रम के तहत आमजन की परिवेदनाओं की सुनवाई एवं उनके निस्तारण के लिए माह के प्रथम गुरूवार, 7 नवम्बर को प्रातः 11 बजे पंचायत समिति खानपुर की ग्राम पंचायत गोलाना में ग्राम पंचायत स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन जिला कलक्टर अजय सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में किया जाएगा। इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायत बनेठ व हेमड़ा भी जनसुनवाई के दौरान वीसी के माध्यम से जुडेंगी। जनसुनवाई की मॉनिटरिंग वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से मुख्य सचिव महोदय के कार्यालय से की जाएगी। इस दौरान जिला स्तरीय अधिकारी, संबंधित उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार एवं विकास अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे।

अज्ञात व्यक्ति का शव मिला

छबड़ा (निसं)। छबड़ा-भूलोन रेलवे स्टेशन के मध्य एक अज्ञात व्यक्ति का शव पड़ा मिला। बापचा पुलिस ने मृतक की शिनाख्ती के प्रयास शुरू कर दिए हैं। बापचा पुलिस के अनुसार अज्ञात व्यक्ति का शव छबडा व भूलोन रेल्वे स्टेशन के बीच डाउन ट्रैक लाइन विद्युत पोल 133/10 के पास पडा हुआ था। जो बीती रात्रि में ट्रेन से गिरना प्रतीत हो रहा है। मृतक व्यक्ति की उम्र लगभग 50-55 वर्श दिखाई दे रही हैं। पुलिस ने मृतक के षव को कब्जे में लेकर छबडा सीएचसी में रखवा दिया हैं। प्रथम दृष्टया अज्ञात व्यक्ति की मृत्यु ट्रेन से गिरने से होना प्रतीत हो रहा हैं।

प्रोत्साहन राशि प्रदान की

छबड़ा (निसं)। दीपावली पर्व पर शानदार सजावट एवं स्वच्छता मानकों के आधार पर कमेटी द्वारा आदर्श विद्या मंदिर (ग्यारह हजार रुपये) को प्रथम, धरनावदा चौराहा स्थित विजय ज्वैलर्स व पालीवाल नगर स्थित सोनू जेठवानी के मकान को संयुक्त रूप से द्वितीय (पांच हजार सौ रुपए) तथा ईदगाह चौराहा पर स्थित धन्नालाल पनवाल के मकान को तृतीय स्थान दिया गया था, जिन्हे मंगलवार को पुरूस्कार राशि सौंपकर सम्मानि किया गया। यह जानकारी एसडीएम रामसिंह गुर्जर ने दी हैं।

सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आज

झालावाड़ (निसं)। जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक जिला कलेक्टर अजय सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में बुधवार, 6 नवम्बर को दोपहर दो बजे मिनी सचिवालय के सभागार में आयोजित की जाएगी। यह जानकारी सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता मुकेश चन्द मीणा ने दी।

कोटा कोचिंग हब पर मंचन

कोटा, (निसं)। रोटरी क्लब, कोटा में शहर के प्रबुद्धजनों के द्वारा कोटा की बिगड़ती अर्थव्यवस्था पर मंगलवार को मीटिंग आयोजित की गई। जिसमें संस्थापक अध्यक्ष, एसएसआई एसोसियेशन, गोविंदराम मित्तल, अध्यक्ष व्यापार महासंघ क्रांति जैन, भामाशाहमण्डी अध्यक्ष अविनाश राठी, सचिव एसएसआई एसोसियेशन अनिष माहेश्वरी, रोटरी क्लब अध्यक्ष मुकेश व्यास, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आईएमए डॉ. अशोक शारदा, अध्यक्ष बार एसोसियेशन, एडवोकेट मनोज पुरी, संयोजक नागरिक मंच नरेश जैन उपस्थित हुये।

सभी प्रबुद्धजनों ने कोटा में कोचिंग के माहौल व अर्थव्यवस्था को सुधारने हेतु अपने अपने सुझाव दिये। 1990 से कोटा में कोचिंग का माहौल बना और धीरे-धीरे इसे 'एजुकेशन हब' के रूप में पहचान मिली। आईआईटी और मेडिकल कोचिंग में कोटा के संस्थानों ने राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। शिक्षा का बेहतर माहौल और गुणवत्तापूर्ण कोचिंग ने इसे छात्रों के लिए आकर्षक बनाया। संयोजक नागरिक मंच नरेश जैन ने बताया कि 1989 से कोचिंग प्रारम्भ हुई किस तरह सबका सहयोग मिला। अखबारों व सभी पब्लिकेशन, नागरिकों व कोचिंग के सहयोग से कोटा कोचिंग हब बना। प्रारम्भ में कोटा कोचिंग को हब बनाने में मेहनत की गई। उसी प्रकार वापस हमें कोटा कोचिंग को हब बनाने में मेहनत करनी पड़ेगी। जो माहौल, प्रतिस्पर्धा व सभी विषय की फैकल्टी एक शहर में है वह भारत के किसी अन्य शहर में नहीं मिलेगी। हमें वापस उसी प्रकार मेहनत करनी पड़ेगी।

मीटिंग में गोविंदराम मित्तल ने कहा कि कोटा की तारीफ हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भी की गई है और कहा कि कोटा से जो इंजिनियर व मेडिकल के बनाने वाले शहर से हमारे लोकसभा अध्यक्ष आये है। इनका अनुभव देश के काम आयेगा। अध्यक्ष व्यापार महासंघ क्रांति जैन ने कहा कि जब जब कोटा पर संकट आया है हमने समस्या का समाधान किया है। अविनाश राठी ने कहा कि जो भी बच्चे कोचिंग में आते है उनको मेहमान के रूप में हम सब माने ऐसा हमारा कर्तव्य है जिससे कोटा में उनको बेहतर माहौल मिले। अनुज माहेश्वरी ने कहा कि कोटा जैसा माहौल रहने खाने पीने का किसी और शहर में नहीं है। यहां पर आराम से रात में भी घूमा जा सकता है। डॉ.अशोक शारदा ने कहा कि मे अभी सीकर जाकर आया था मेने वहां पर बच्चों से बात की अगर तुलना की जाये तो हर तरह से कोटा कोचिंग के लिये बहुत ही बेहतरीन स्थान है।

'समस्या समाधान की मंशा से कार्य करें अधिकारी'

■ कृषकों की समस्याओं और बुनियादी सेवाओं पर जोर दिया

कोटा, (निसं)। जिला परिषद सभागार में मंगलवार को आयोजित सामान्य बैठक में जिला प्रमुख मुकेश मेघवाल की अध्यक्षता में विभिन्न बुनियादी समस्याओं पर गहन मंथन किया गया। बैठक में सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, और चिकित्सा जैसी मुख्य आवश्यकताओं को लेकर विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

बैठक में उपस्थित जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने ग्रामीणों की समस्याओं और उनके समाधान के लिए गंभीरता दिखाई। सड़क निर्माण और किसानों के हित संरक्षण पर चर्चा सार्वजनिक निर्माण विभाग को निर्देश दिए कि सड़क निर्माण के दौरान किसानों के खेतों से मिट्टी न ली जाए और सड़क किनारे खोदे गए गड्ढों से होने वाले किसानों के नुकसान पर भी चर्चा की गई। बैठक में निर्देश दिए कि विभाग सुनिश्चित करे कि सड़क निर्माण के दौरान किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए। इसके अलावा, सड़क निर्माण में काली मिट्टी का उपयोग न करने की सलाह दी गई ताकि सड़क की गुणवत्ता बनाए रखी जा सकें। उप जिला प्रमुख कृष्ण गोपाल अहीर ने विशेष रूप से कहा कि कृषकों के हितों को प्राथमिकता दी जाए और सड़क निर्माण में किसानों का नुकसान न हो।

लाड़पुरा विधायक कल्पना देवी ने सार्वजनिक निर्माण विभाग को सड़क एवं पुलिया निर्माण कार्य में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सुझाव दिया कि निर्माण के दौरान तकनीकी विशेषताओं जैसे पुलिया की ऊंचाई, मिट्टी के प्रकार आदि की पूरी तरह से जांच हो। साथ ही, सड़क से अतिक्रमण हटाने और क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत के लिए भी निर्देश दिए गए।

कृषि विभाग को निर्देश दिए कि किसानों को सही समय पर यूरिया उपलब्ध हो एवं उनका उचित मार्गदर्शन किया जाए। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन के लिए बनाए जाने वाले पोंड के कारण प्रवासी पक्षियों पर भी प्रभाव पड़ता है इसके लिए विशेषज्ञों की टीम बनाकर आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए।

बैठक में विद्युत विभाग को निर्देश दिया गया कि विभाग यह सुनिश्चित करें कि किसानों से ठेकेदारों किसी तरह के पैसे की मांग न करे और उनके खेतों में ट्रांसफार्मर एवं विद्युत पोल बिना परेशानी के स्थापित किए जाएं। ट्रांसफार्मर की संख्या और मांग के बैकअप की जानकारी भी ली गई और आवश्यकता पड़ने पर निर्धारित समय के भीतर ट्रांसफार्मर बदलने के निर्देश दिए गए।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्ट्रीट लाईट और पेयजल व्यवस्था में सुधार पर जोरः- ग्रामीण क्षेत्रों में स्ट्रीट लाइट की सुविधा को मजबूत करने के निर्देश दिए गए ताकि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विधायक कल्पना देवी ने जल जीवन मिशन के तहत केबलनगर और कसार क्षेत्रों में पानी की कम सप्लाई एवं दबाव की समस्या पर चिंता व्यक्त की और विभाग को जल सप्लाई के समय निश्चित इलाके में जाकर समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए। साथ ही, सिमलिया में जल भराव की समस्या के समाधान के लिए अधिकारियों को मौके पर जाकर कार्रवाई करने के लिए पाबंद किया गया।

लाड़पुरा विधायक कल्पना देवी ने चिकित्सा विभाग से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.जगदीश सोनी को विधायक कोष से मिली एंबुलेंस के सुचारू उपयोग के लिए ड्राईवर की नियुक्ति की दिशा में कदम उठाने के निर्देश दिए। बैठक में ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसव सेवाओं और स्टाफ की कमी को लेकर भी चर्चा की गई, जिस पर डॉ. सोनी बताया कि राज्य स्तर से भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से जल्द ही समाधान किया जाएगा।

शिक्षा विभाग को निर्देश दिए गए कि यह सुनिश्चित किया जाए कि शिक्षा परिसरों की 200 मीटर परिधि में किसी भी प्रकार की नशीले पदार्थ वितरण की दुकान न हो, ताकि छात्र सुरक्षित वातावरण में पढ़ाई कर सकें। बैठक में नरेगा के अंतर्गत हो रहे कार्यों का अनुमोदन किया गया और अधिकारियों को समय पर इन कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। स्वच्छ भारत मिशन के तहत सिमलिया में जलभराव की समस्या का मौके पर निरीक्षण कर समाधान करने के निर्देश भी दिए गऐं। बैठक में सभी विभागों और अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वे जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनें और निष्पक्ष रूप से समाधान के लिए कार्य करें। अंत में, जिला प्रमुख मुकेश मेघवाल ने उपस्थित सभी सदस्यों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं दी।

बैठक में इटावा विधायक चेतन पटेल, जिला परिषद सदस्य, जनप्रतिनिधि, अतिरिक्त जिला कलेक्टर मुकेश कुमार चौधरी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजपाल सिंह, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी हर्षित वर्मा एवं मजहर इमाम उपस्थित रहे।

राजराजेश्वर सहस्त्रबाहु अर्जुन जयंती पर परिचय सम्मेलन आठ को

कोटा, (निसं)। हैहय क्षत्रिय कलाल संस्थान (सभा), कोटा की ओर से राजराजेश्वर सहस्त्रबाहु अर्जुन जयंती व बालिका छात्रावास उद्घाटन समारोह एवं युवक-युवती परिचय सम्मेलन 8 नवम्बर 2024, शुक्रवार को कलाल समाज बालिका छात्रावास, विनोबा भावे नगर, कोटा में आयोजित किया जा रहा है।

हैहय क्षत्रिय कलाल संस्थान (सभा) के अध्यक्ष राहुल पारेता ने बताया कि राजराजेश्वर सहस्त्रबाहु अर्जुन जयंती धूमधाम के साथ मनाई जाएगी। इस उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मदन लाल जायसवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व) महासभा होंगे। उन्होंने कहा कि इस दौरान विशाल कलशयात्रा का आयोजन प्रातः 10.30 बजे रामजानकी मंदिर केशपुरा से किया जाएगा, जिसमें समाज की महिलाएं बड़ी संख्या में शामिल होंगी।

राहुल पारेता ने बताया कि कलशयात्रा विनोबा भावे नगर स्थिति छात्रावास स्थल पर पहुंचेगी। इससे पूर्व कलशयात्रा का जगह-जगह स्वागत द्वार लगाकर व पुष्पवर्षा कर स्वागत किया जाएगा। इस दौरान घोडी, बग्गी और झांकियां आकर्षण का केन्द्र होगी। इससे पूर्व प्रातः 8 बजे सहस्त्रबाहु सर्किल, नान्ता तिराहा पर सहस्त्रबाहु अर्जुन की प्रतिमा पर माल्यार्पण होगा। दोपहर एक बजे कलाल समाज बालिका छात्रावास उद्घाटन समारोह विनोबा भावे नगर में होगा।

दोपहर 2 बजे भामाशाह सम्मान समारोह होगा, जिसमें समाज के भामाशाहों का सम्मान किया जाएगा। दोपहर 3 बजे युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। शाम को 7.30 बजे दीपदान का कार्यक्रम होगा।

मेधावी छात्रों को सम्मानित किया

छबड़ा (निसं)। आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय के सभागार में पूर्व छात्र परिषद के तत्वावधान में सोमवार को दीपावली स्नेह मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजेंद्र कुमार शर्मा जिला सचिव रहे तथा अध्यक्षता अशोक कुमार भार्गव व्याख्याता द्वारा की गई। यहां 10वीं बोर्ड में श्रेष्ठ परिणाम देने वाले भैया-बहिनों का सम्मान किया गया। पूर्व छात्र परिषद के संयोजक रवि गुप्ता एवं प्रधानाचार्य अमृतलाल मीणा ने बताया कि मुख्य वक्ता शर्मा ने कहा कि विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के बाद सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षा संस्थान है, जो संपूर्ण देश भर में देशभक्ति एवं सनातन संस्कृति की शिक्षा देकर भावी पीढ़ी का निर्माण कर रही है। संस्थान से निकलने वाले छात्र समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने दायित्व का निर्माण करते हुए समाज हित में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विद्या भारती विद्यालय की शिक्षा व संस्कार भावी जीवन के लिए नींव है। मुख्य वक्ता ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी वर्ष पर सामाजिक परिवर्तन के पंच परिवर्तन सामाजिक समरसता, पर्यावरण, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य स्व का बोध स्वयं के परिवार से प्रारंभ करने का आग्रह किया।

भर्ती की तिथि बढ़ाने एवं अनुभव में संशोधन की मांग को लेकर प्रदर्शन

कोटा, (निसं)। वाल्मीकि समाज ने सफाई कर्मचारी भर्ती की तिथि बढ़ाने एवं अनुभव में संशोधन की मांग को लेकर जयपुर स्वास्थ्य शासन भवन डीएलपी पर प्रदर्शन कर घेराव किया।

वाल्मीकि समाज के युवा नेता विकास नरवार ने बताया कि वाल्मीकि समाज भर्ती की तिथि बढाई जानी चाहिए ताकी हर वंचित को मौका मिल सकें। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही अनुभव प्रमाण पत्र मांगा जा रहा है जो पूरी तरह से गलत है। इसमें सरलता व संशोधन किया जाना चाहिए।

विकास नरवार ने बताया कि प्रदर्शन के दौरान प्रदेश के समाज के वरिष्ठजन उपस्थित रहे।

इसके साथ ही मनोज चांवरिया, सरपंच पंच कमेट अध्यक्ष राजकुमार सहित समाज के कई लोग उपस्थित रहे।

कोटा से भी बड़ी संख्या में लोग प्रदर्शन में शामिल हुए और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया।

'बूंदी उद्योग एवं हस्तशिल्प मेला' कला एवं कौशल संवर्धन का मंच बनें : जिला कलेक्टर

बूंदी (निसं)। बूंदी महोत्सव-2024 के तहत बूंदी के कुंभा स्टेडियम में 19 से 28 नवंबर तक बूंदी उद्योग एवं हस्तशिल्प मेले का आयोजन होगा। मेला आयोजन को लेकर की गई तैयारियों की मंगलवार को जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा ने समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक में जिला कलेक्टर ने निर्देश दिए कि बूंदी महोत्सव के तहत आयोजित बूंदी उद्योग एवं हस्तशिल्प मेला कला एवं कौशल संवर्धन का मंच बने। इस मंच पर प्रदेश एवं अन्य प्रांतों के दस्तकार व शिल्पकार अपने उत्पादों को प्रदर्शित कर सके। उन्होंने कहा कि मेला आयोजन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जावे। मेले में आने वाले दस्तकारों एवं शिल्पकारों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो। उन्होंने निर्देश दिए कि मेला स्थल की अच्छे से सफाई करवाई जावे। चिकित्सा विभाग द्वारा लगाई जाने वाली मेडिकल स्टॉल पर प्राथमिक उपचार की सुविधा उपलब्ध रहे।

जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा ने बूंदी उद्योग एवं हस्तशिल्प मेले के आयोजन को लेकर की गई तैयारियों की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने निर्देश दिए कि मेला आयोजन स्थल कुंभा स्टेडियम पर सुविधाएं रखी जावे। मेले के दौरान परिसर की नियमित सफाई हेतु स्टाफ लगाया जावे। साथ ही मेला समाप्ति तक फायर ब्रिगेड की व्यवस्था रखी जावे। उन्होंने निर्देश दिए कि मेले में प्लास्टिक उपयोग पूरी तरह प्रतिबंधित रखा जावे। साथ ही बूंदी महोत्सव के अधिकाधिक प्रचार प्रसार किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि मेला स्थल पर पार्किंग व्यवस्था रहे। साथ ही सुरक्षा को देखते हुए सीसीटीवी के इंतजाम रहे।

उन्होंने निर्देश दिए कि मेला स्थल की चिकित्सा, उद्योग, पर्यटन व नगर परिषद द्वारा संयुक्त निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी जाए। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ बेटी पढाओ के तहत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आमजन में संदेश प्रसारित किए जाएं।

शिल्पग्राम में दिखे ग्रामीण परिवेश की झलकः- जिला कलेक्टर ने निर्देश दिए कि बूंदी उद्योग एवं हस्तशिल्प मेले में स्थापित किए जाने वाले शिल्पग्राम में ग्रामीण परिवेश की झलक दिखे। इसके अनुरूप ही शिल्पग्राम तैयार किया जावे। ग्रामीण अंचल की सभी झलकियां शिल्पग्राम में आमजन एवं पर्यटकों को देखने को मिले। इसके अलावा मेला मंच पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की कड़ी में टैलेंट शो का आयोजन करवाया जावे। बैठक में पुलिस उपअधीक्षक बाबूलाल, जिला उद्योग केंद्र महाप्रबंधक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ओपी सामर, सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेम शंकर सैनी, इंटेक संयोजक राजकुमार दाधीच, संस्कृति संस्था अध्यक्ष शालिनी विजय, आदि मौजूद रहे।

विराट कोहली आप हर बार की तरह इस बार भी दमदार वापसी करो। क्योंकि आपने पहले भी ऐसा किया है।

- युवराज सिंह

पूर्व भारतीय बल्लेबाज, विराट कोहली के जन्मदिन पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

विनेश फोगाट

भारतीय रेसलर विनेश फोगाट विधायक बन चुकी हैं। रेसलिंग में अपनी विरोधियों को पटखनी देने वाली विनेश बीते महीने चुनाव मैदान में प्रचार करती नजर आईं। लोगों से वोट मांगती नजर आईं। इसके बदले में जनता ने उन्हें काफी प्यार दिया और उन्हें जीत भी मिली। इस दौरान उनके अंदर का खिलाड़ी अभी भी जिंदा है, बीते सात दिन में तीन बार इशारा दिया है कि जिससे लगता है कि ये विधायक फिर से रेसलर बन सकती है।सोमवार को विनेश ने पेरिस ओलंपिक की अपनी तस्वीर शेयर की। वह इस तस्वीर में बहुत जोश में नजर आ रही हैं।

क्या आप जानते हैं ?... वर्तमान में 80 से अधिक देश पोलो खेलते है। पोलो 1900 से 1936 तक ओलम्पिक खेल था और इसे अब एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने मान्यता प्रदान की है।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले रोहित शर्मा को गावस्कर की दो टूक

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। दिग्गज सुनील गावस्कर का मानना है कि अगर ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रोहित शर्मा एक से अधिक टेस्ट मैच मिस करते हैं तो पूरी सीरीज में उन्हें कप्तानी नहीं करनी चाहिए। बतौर खिलाड़ी दौरे पर होना चाहिए। गावस्कर ने दो टूक भारतीय क्रिकेट टीम के प्रबंधन से स्पष्टता की मांग की। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय कप्तान का पहला मैच खेलना अहम है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा निजी कारणों के चलते ऑस्ट्रेलिया सीरीज के पहले टेस्ट मैच से टूक सकते हैं। रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में जसप्रीत बुमराह कप्तानी कर सकते हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में वह उपकप्तान थे।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, देखिए कप्तान को पहला टेस्ट खेलना जरूरी होता है। अगर इंजर्ड हो गया तो बात अलग है, पर जब आपका जो लीजर है पहले ही बैटल में मौजूद नहीं है तो डिप्टी लीडर पर जो प्रेसर बनता है वो अलग सा प्रेसर होता है। उसको फिर

जिम्मेदारी लेना कप्तानी की वो आसान नहीं होगा।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, मुझे पता नहीं हम भी पढ़ते आए हैं कि पहले टेस्ट में नहीं खेलेंगे रोहित शर्मा। शायद आप कह रहे हैं कि दूसरे में भी नहीं खेलेंगे। तो अगर ऐसी बात है तो मैं ये कहता हूं अभी-अभी भारतीय सेलेक्शन कमिटी को ये बोलना चाहिए, अजीत अगरकर को ये बोलना चाहिए भाई आपको जो करना है रेस्ट करना रेस्ट कर लो, जो भई आपकी पर्सनल रीजन है।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, अगर आप 2/3 मिस कर रहे हैं तो आप इस टूर के लिए प्लेयर के नाते जाइए। दूसरे टेस्ट तीसरे टेस्ट आपको जब चाहिए जाइए। पर हम इस टूर का कप्तान बदलकर जो वाइस कैप्टन है उसको हम कप्तान बनाएंगे क्योंकि क्लैरिटी होनी चाहिए। कप्तानी की जिम्मेदारी है। खासकर हम यहां 3-0 हार गए हैं तो लीडर को होना जरूरी है। बिल्कुल जरूरी है।

भारतीय मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने डब्ल्यूबीएफ का विश्व खिताब जीता

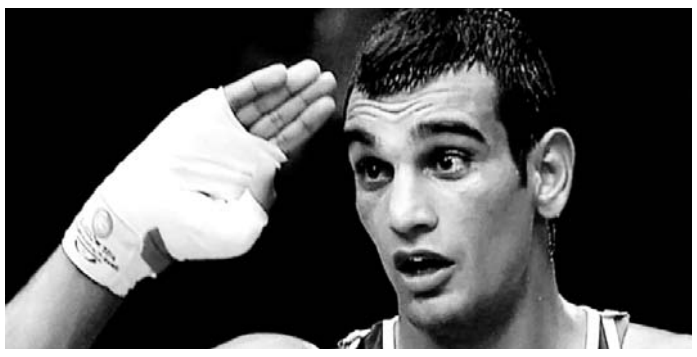

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। भारतीय पेशेवर मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने केमैन आइलैंड में ब्रिटेन के कोनोर मैकिन्टोश को हराकर विश्व मुक्केबाजी महासंघ (डब्ल्यूबीएफ) का सुपर फेदरवेट विश्व खिताब जीता। पूर्व ओलंपिक रजत पदक विजेता रॉय जोन्स जूनियर से प्रशिक्षण लेने वाले 31 वर्षीय जांगड़ा ने अपने पेशेवर करियर में अब तक केवल एक हार का सामना किया है। ब्रिटिश मुक्केबाज के खिलाफ मुकाबले में अधिकतर राउंड में उनका पलड़ा भारी रहा। जांगड़ा ने शुरू से ही दमदार मुक्के जमाए और पूरे 10 राउंड में अपना दमखम बरकरार रखा। दूसरी तरफ ब्रिटिश मुक्केबाज को गति बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। कॉनर ने वापसी की कोशिश की, लेकिन जांगड़ा ने अधिकतर राउंड में बढ़त बनाए रखी।

जांगड़ा ने मीडिया विज्ञिप्त में कहा, "यह मेरे करियर की सबसे बड़ी जीत में से एक है। मैंने इसे हासिल करने के लिए वर्षों तक कड़ी मेहनत की। यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं देश का नाम रोशन कर सका।" हरियाणा के रहने वाले जांगड़ा ने 2021 में पेशेवर मुक्केबाजी में पदार्पण किया। उन्हें उम्मीद है कि यह खिताब अधिक भारतीय मुक्केबाजों को पेशेवर बनने के लिए प्रेरित करेगा।

उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि यह खिताब देश के अन्य मुक्केबाजों के लिए रास्ता खोलेगा और वे पेशेवर मुक्केबाजी में अपना करियर बनाने का फैसला भी करेंगे। हमारे मुक्केबाज अच्छे हैं और उनमें प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। अगर उन्हें अच्छे प्रमोटर और मैनेजर मिलें तो वे विश्व चैंपियन भी बन सकते हैं।"

जांगड़ा ने अपने पेशेवर करियर में अभी तक 12 मुकाबलों में से 11 जीते हैं, जिनमें सात नॉकआउट जीत शामिल हैं। उन्होंने एमेच्योर मुक्केबाज के रूप में 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता था।

शाकिब अल हसन के एक्शन की होगी जांच

लंदन, 5 नवंबर। काउंटी चैंपियनशिप में सरी के लिए खेलने के दौरान अंपायर्स ने शाकिब अल हसन के गेंदबाजी एक्शन को लेकर दी गई रिपोर्ट के बाद इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने बंगलादेश के ऑलराउंडर शाकिब से अपने गेंदबाजी एक्शन की जांच करवाने के लिए कहा है। हालांकि शाकिब को खेलने से नहीं रोका गया है लेकिन यह पता चला है कि शाकिब के एक्शन की जांच कराने के लिए बातचीत चल रही है। यह जांच अगले कुछ सप्ताह में हो सकती हैं। शाकिब के दो दशक लंबे करियर में यह पहली बार है जब उनका गेंदबाजी एक्शन किसी तरह की जांच का विषय बना है। इस दौरान शाकिब ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 447 मैचों में 712 विकेट लिए हैं, जिसमें 71 टेस्ट में 246 विकेट शामिल हैं। सितंबर में टॉन्टन में सोमरसेट के खिलाफ खिताबी मुकाबले में 37 वर्षीय शाकिब ने नौ विकेट चटकाए थे। 2010-11 के बाद शाकिब पहली बार काउंटी चैंपियनशिप में खेल रहे थे। इंग्लैंड के आठ खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीम में होने के कारण, विल जैक्स और डैन लॉरेंस जैसे दो प्रमुख स्पिनरों की अनुपस्थिति में शाकिब ने सरी के साथ कम समय का करार किया था। शाकिब सोमरसेट को 111 रनों से जीत हासिल करने से नहीं रोक सके और सरी लगातार अपना तीसरा चैंपियनशिप खिताब जीतने में सफल नहीं हो पाया। उस मैच में शाकिब ने 63 ओवर से अधिक की गेंदबाजी की थी लेकिन एक बार भी उनकी गेंदबाजी के दौरान थ्रो करने का हवाला देकर किसी गेंद को नो बॉल करार नहीं दिया गया था। अब यह बात निकलकर सामने आई है कि मैदानी अंपायर्स ने उनके गेंदबाजी एक्शन को संदिग्ध पाया था।

गोल्ड मेडलिस्ट की लैंगिक पहचान पर बवाल, ट्रंप ने मुद्दे को दी हवा

पेरिस, 5 नवम्बर। पेरिस 2024 ओलंपिक में काफी विवाद देखने को मिले। इन्हीं में से एक विवाद जो काफी सुर्खियों में रहा, अल्जीरिया की इमान खलीफ अपनी लैंगिक पहचान को लेकर विवादों में रही। वहीं ये मुद्दा एक बार फिर उठा है और अल्जीरियाई मुक्केबाज फिर जांच का सामना कर रही हैं। इस मामले में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और 2024 के रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प समेत दुनिया भर की जानी-मानी हस्तियों की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं।खलीफ को अपने जेंडर को लेकर नए सवालों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि एक लीग हुई मेडिकल रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 25 वर्षीय मुक्केबाज में गर्भाशय नहीं है, अंडकोष हैं और एक बढ़े हुए क्लिटरिस जैसा दिखने वाला माइक्रोपेनिस है। खलीफ ने पेरिस ओलंपिक में महिलाओं के 66 किग्रा वर्ग में गोल्ड मेडल जीता था। इस दौरान उन्होंने इटली की मुक्केबाज को हराया था। ओलंपिक खेलों में उनकी हिस्सेदारी ने बड़े पैमाने पर विवाद पैदा कर दिया था उन्हें कथित तौर पर गुणसूत्र परीक्षण में फेल होने के बाद नई दिल्ली में 2023 विश्व चैंपियनशिप के गोल्ड मेडल मैच से पहले अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ ने निलंबित कर दिया था। हालांकि, खलीफ ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने खलीफ को पेरिस ओलंपिक 2024 में हिस्सा लेने की मंजूरी दे दी थी। बहरहाल लीक हुई मेडिकल रिपोर्ट खलीफ की और अधिक जांच को बढ़ावा देने वाली है। खलीफ को अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के अंतिम कैंपेन वीडियो में भी दिखाया गया है। वीडिटो में उन चीजों के बारे में बात की गई है जो वर्तमान बिडेन प्रशासन के तहत गलत हो गई हैं। वीडियो में खलीफ की तस्वीर को

2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत ने बढ़ाया पहला कदम

आईओए ने आईओसी को लिखा पत्र

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। भारत ने 2036 ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों की मेजबानी करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा दिया है। भारतीय ओलंपिक संघ ने इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति को पत्र भेजा है। केंद्रीय खेल मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, आईओए ने एक अक्टूबर को आईओसी को आधिकारिक रूप से भविष्य में ओलंपिक की मेजबानी करने की इच्छा जताई और पत्र लिखा। भारत लंबे समय से 2036 ओलंपिक की मेजबानी करने की इच्छा जता चुका है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कई मौकों

पर इस बारे में राय रखी और अपने इरादे जाहिर किए हैं। हालांकि, अब भारत ने इस दिशा में बड़े कदम उठाए हैं।

पीएम मोदी सितंबर में अमेरिका दौरे पर थे उस दौरान उन्होंने वहां न्यूयॉर्क के इनडोर स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में कहा था कि, अभी कुछ दिन पहले पेरिस ओलंपिक खत्म हुआ है। अगले ओलंपिक का मेजबान अमेरिका है। बहुत जल्द आप भारत में भी ओलंपिक देखेंगे। हम 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। इससे पहले पीएम मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले से देश को संबोधित करते हुए ओलंपिक 2036 की मेजबानी पर बड़ी बात कही थी।

उन्होंने कहा था कि भारत ने ओलंपिक 2036 की मेजबानी के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। पीएम ने जानकारी देते हुए बताया था कि आईओए ने इस आयोजन को भारत में लाने के लिए आईओसी के भावी मेजबान आयोग के साथ बातचीत शुरू कर दी है।

राठी ने लॉन टेनिस चैम्पियनशिप में जीता स्वर्ण

सोनीपत, 5 नवंबर। केन्या में आयोजित इंटरनेशनल लॉन टेनिस चैंपियनशिप में लिटल एंजल्स स्कूल सोनीपत के होनहार खिलाड़ी अर्जुन राठी ने प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में अर्जुन पंडित को 6-0, 6-3 के सेट स्कोर से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस प्रतियोगिता में देश-विदेश से 32 खिलाड़ियों ने भाग लिया। अर्जुन राठी की इंटरनेशनल स्तर पर यह तीसरी जीत है। अर्जुन राठी के अभिभावक इससे बहुत खुश थे। उन्होंने इस जीत का श्रेय विद्यालय प्रशासन को देते हुये कहा कि विद्यालय द्वारा प्रदान की गई खेल सुविधाओं के कारण आज अर्जुन इन ऊंचाइयों पर पहुंचा है। विद्यालय के अध्यक्ष तरसेम कुमार गर्ग, सचिव डॉ विशाल गर्ग और विद्यालय की प्रधानाचार्य आशा गोयल ने अर्जुन राठी को बधाई दी और उनको भविष्य में भी बेहतर खेल प्रदर्शन के लिये प्रेरित किया।

आईपीएल की मेगा नीलामी सऊदी अरब में 24 और 25 को होगी

नई दिल्ली, 5 नवंबर। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 की मेगा नीलामी सऊदी अरब के जेद्दाह में 24-25 नवंबर को आयोजित की जायेगी। यह दूसरी बार है जब आईपीएल की नीलामी विदेश में हो रही है।

हाल ही में सभी फ्रैंचाइजी ने कुल मिलाकर 46 खिलाड़ियों को रिटेन किया था, जिसमें दक्षिण अफ्रीका के विकेटकीपर- ऑलराउंडर हेनरिक क्लासेन को सनराइजर्स हैदराबाद ने 23 करोड़ रूपये सबसे महंगे खिलाड़ी के रूप में रिटेन किया है। भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली (रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर) और वेस्टइंडीज के विकेटकीपर-बल्लेबाज निकोलस पूरन (लखनऊ सुपर जायंट्स) 21करोड़ रुपये की राशि के साथ संयुक्त रूप से दूसरे सबसे महंगे रिटेंशन रहे।

दो दिवसीय नीलामी में राजस्थान रॉयल्स के पास 41करोड़ का सबसे छोटा बजट होगा क्योंकि राजस्थान की टीम उन दो टीमों में से एक थी जिन्होंने अधिकतम छह खिलाड़ियों को रिटेन किया है। मौजूदा चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स ने भी अपने मुख्य समूह के छह खिलाड़ियों को रिटेन किया है, लेकिन उनके पास 51करोड़ का बजट होगा क्योंकि उनके रिटेंशनों में दो अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं। दोनों टीमों के पास नीलामी में राइट-टू-मैच (आरटीएम) कार्ड नहीं होंगे।

पंजाब किंग्स के पास सबसे मजबूत बजट होगा, जो 110.5 करोड़ रुपये है, क्योंकि उन्होंने कुल 120 करोड़ के बजट में से केवल 9.5 करोड़ रुपये अनकैप्ड जोड़ी शशांक सिंह और प्रभसिमरन सिंह को रिटेन करने में खर्च किए हैं। पंजाब के पास नीलामी में अधिकतम चार आरटीएम कार्ड होंगे। मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स, गुजरात टाइटन्स, सनराइजर्स और सुपर जायंट्स ने पांच खिलाड़ियों को रिटेन किया है, जिससे उनके पास नीलामी में केवल एक आरटीएम कार्ड होगा।

राजस्थान - हैदराबाद रणजी मैच आज से एसएमएस स्टेडियम पर

जयपुर 5 नवम्बर , आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणी के अनुसार बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट सत्र 2024 -25 की राष्ट्रियक्रिकेट प्रतियोगिता रणजी ट्रॉफी के अपने पहले तीन रणजी मुकाबलों में राजस्थान रणजी टीम ने शानदार शुरुआत करते हुए जयपुर में खेले गए पहले मैच मेंपॉन्डिचेरी के विरुदपहली पारी की बढ़त व अपने दूसरे मैच धर्मशाला में हिमाचल के विरूद मिली शानदार जीत तथा जयपुर मे गुजरात के विरुद खेला गया तीसरा रणजी मैच ड्रा रहा। कल दिनांक 6 नवम्बर 2024 से जयपुर के सवाई मान सिंह स्टेडियम पर राजस्थान रणजी टीम का चौथा रणजी मुकाबला हैदराबाद के साथ खेला जायेगा।पहले तीन रणजी मुकाबलों में राजस्थान टीम ने बल्लेबाजी व गेंदबाजी दोनों के क्षेत्रों में शानदार प्रदर्शन किया था । आज मैच से पूर्व राजस्थान टीम ने कप्तान दीपक हुड्डा व मुख्य कोच राजेश बिश्नोई व अन्य स्पोर्ट स्टाफ के साथ आरसीए अकादमी पर जमकर अभ्यास किया।राजस्थान के विरुदरणजी मैच के लिए हैदराबाद टीम ने भी जयपुर पहुंचकर आज सुबह आरसीए अकादमी पर अभ्यास किया।

आरसीए स्टैटिशनओ पी शर्मा के अनुसार रणजी ट्रॉफी में पूर्व में राजस्थान - हैदराबाद टीमों में मध्य कुल 11 रणजी मैच खेले गए हैं जिनमे राजस्थान ने 4 मैच में जीत दर्ज की है , गुजरात ने 2 मैचों में जीत दर्ज की व 5 मैच ड्रा समाप्त हुए हैं।

एचआईएल के लिए नई वेबसाइट लांच और कार्यक्रम की घोषणा

नई दिल्ली, 5 नवंबर। हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) के 2024-2025 संस्करण के लिए मंगलवार को एक समर्पित लीग वेबसाइट का शुभारंभ किया गया तथा बहुप्रतीक्षित सीजन के कार्यक्रम की घोषणा की गई। एचआईएल की नई वेबसाइट 'हॉकीइंडियालीगडॉटकॉम' के जरिए दुनिया भर के प्रशंसकों तक लीग की ताजा खबरे, मैचों के कार्यक्रम, पूरी टीम की सूची और एक्सक्लूसिव वीडियो कंटेंट की पहुंच आसान होगी। इस वेबसाइट को एक आकर्षक और इमर्सिव अनुभव देने के लिए तैयार किया गया है। वेबसाइट एचआईएल से जुड़ी सभी चीजें उपलब्ध होगी जो कि प्रशंसकों और खिलाड़ियों को पहले से कहीं अधिक हॉकी के करीब लायेंगी। खिलाड़ियों की व्यापक नीलामी के बाद, आठ पुरुष और चार महिला टीमें इस प्रतियोगिता के लिए तैयार हैं। यह अब तक का सबसे बड़ा और सबसे बेहतरीन एचआईएल सीजन होने वाला है। पुरुषों की लीग 28 दिसंबर को राउरकेला में शुरू होगी, इसके मैच दो चरणों में होंगे और एक फरवरी 2025 को अंतिम मुकाबला होगा।

// अन्डर-15 एवं अन्डर-17 नेशनल रैंकिंग बैडमिन्टन प्रतियोगिता //

राजस्थान के कृष मीणा और भानू प्रताप, शिवम हाड़ा, वेदान्त जोशी ने दूसरा दौर भी जीता

जयपुर, 5 नवम्बर। राजस्थान के कृष मीणा और भानू प्रताप जाटोलिया यहां सवाई इण्डोर स्टेडियम में चल रही अन्डर-15 एवं अन्डर-17 नेशनल रैंकिंग बैडमिन्टन प्रतियोगिता के क्वालिफाइंग राउण्ड के दूसरे दौर में भी जीत दर्ज करन में सफल रहें। कृष मीणा ने लड़को के अन्डर-17 आयु वर्ग में दिल्ली के समित सूद को 15-9, 15-10 से हराया। भानू प्रताप जाटोलिया ने आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा कार्तिक को 15-8, 15-13 से शिकस्त दी। अन्य मुकाबलों में राजस्थान के शिवम हाडा ने तेलंगाना के राहुल साई को 15-5, 15-11 से, वेदान्त जोशी ने दिल्ली के भव्य दुहान को 15-12, 155 से, रोहन बिश्नोई ने तमिलनाडु के मोनिश राजाराम को संघर्षपूर्ण मुकाबले में 15-13, 3-15, 16-14 से पराजित किया। लड़कियों के अन्डर-17 आयु वर्ग में राजस्थान की अदविता शर्मा ने हरियाणा की अलिशा गोस्वामी को 8-15, 15-4, 15-12 से पराजित किया। राजस्थान के हेमांक जाखड़, कृष मीणा, खुशी पूनिया, शेरिल चौधरी और

सानिया राव को वॉक ओवर मिला।

लड़को के अन्य मुकाबलों में हर्षवर्धन मान्झु ने पंजाब के तुषार नन्दा को 15-5, 11-15, 15-9 से, हर्ष स्वामी ने दिल्ली के आदित्य अग्रवाल को 15-12, 15-12 से हराया। लड़कियों के अन्य मुकाबलों में देशना जैन ने सिद्धिमा साहू को 15-8, 15-7 से शिकस्त दी। लड़कों के मुकाबलों में सन्यम कोठारी ने गुजरात के प्रज्ञान को 15-5, 15-5 से, आयुष यादव ने गुजरात के श्लोक भालोदिया को 15-8, 15-3 से हराया। लड़कियों के मुकाबलों में रितिका झमनानी ने आन्ध्र प्रदेश की स्टुई ग्रेस रेड्डी को 15-10. 15-8 से तथा अन्वी राठौड़ ने दिल्ली की मिताली बिष्ट को 15-2, 15-6 से पराजित कर तीसरे दौर में प्रवेश किया।

लड़कों के मुकाबलें में सचिन चौधरी ने असम के फलोरिस बरूआ को 15-10, 16-18, 16-14 से, सात्विक अग्रवाल ने राजस्थान के ही सफी खान को 15-8, 15-9 से, अर्थव माहेश्वरी ने मध्य प्रदेश के सिदक सिंह को 15-8, 16-14 से, नेहिल सिंह मेहरा ने हिमचाल प्रदेश के अस्तित्व को 15-7, 15-10 से, निधिश ने महाराष्ट्र अनवीत नेने को 15-7, 15-6 से, जयवर्धन सिंह ने चंडीगढ़ के तेजस देवाली को 15-5, 15-8 से, यश सोनी ने तुस्या को 15-8, 15-5 से, सोनू मीणा ने नील को 15-10, 15-8 से शिकस्त दी।

राजस्थान बैडमिन्टन संघ के उपाध्यक्ष मनोज दासोत के अनुसार बुधवार को 400 से अधिक मुकाबले खेले जायेंगे। मैच सुबह 9 बजे से शुरू होंगे। उन्होंने बताया कि डिप्टी रेफरी लोकेश सोनी, डिप्टी रेफरी चन्द्रकान्त शर्मा और तकनीकी अधिकारी व आरबीए ऑफिस इन्चार्ज विनीत शर्मा बखुबी अपने कार्य निभा रहे है।

जयपुर के टर्फ फुटबॉल ग्राउंड में लगी आग, बेल्जियम से आई करोड़ों की घास खाक

जयपुर 5 नवंबर। कहावत है कि जब रोम जल रहा था, तो नीरो सुख और चैन की बाँसुरी बजा रहा था। ये कहावत साबित होती है राजस्थान की राजधानी जयपुर के विद्याधर नगर स्थित इंटरनेशनल फुटबॉल स्टेडियम में हाल ही में आग लगने की घटना को लेकर। करोडों रुपयों से बने स्टेडियम का फुटबॉल मैदान आग से जल रहा था और जिम्मेदार अधिकारियों को इसकी खबर तक नही लगी, वो दिवाली की छुट्टी मनाने में व्यस्त थे। दिवाली के समय आतिशबाजी के कारण ये आग लगी है, ये कहना मुश्किल है। इस घटना का कोई गवाह नही है। स्टेडियम के एक गोल पोस्ट की तरफ लगी सिंथेटिक घास जलकर राख हो गई।

फीफा द्वारा मान्यता प्राप्त भारत के इस दूसरे फुटबॉल ग्राउंड में राजस्थान सरकार ने करोड़ों रुपए खर्च करके बेल्जियम से आर्टिफिशियल ग्रीन घास मंगवाई, लेकिन उसको अच्छे से संभाल नहीं सकी। बेल्जियम से लाई गई घास में दिवाली के दिन आग लग गई और फीफा ने इस ग्राउंड को इंटरनेशनल सर्टिफिकेट जारी किया है, जो 12 जुलाई 2027 तक मान्य है। इस ग्राउंड पर लगभग 3000 दर्शक मैच का आनंद ले सकते हैं और लगभग 20 हजार दर्शकों के खड़े रहने की व्यवस्था की गई।

राज्य सरकार की ओर से इस फुटबॉल ग्राउंड को तैयार किया गया।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा अक्टूबर में फुटबॉल लीग का उद्घाटन किया गया था। इस फुटबॉल ग्राउंड को 13 करोड़ की लागत से तैयार किया गया है। फीफा मानकों से एप्रूव्ड है। उद्घाटन के बाद से स्टेडियम में कई टूर्नामेंट का आयोजन हो चुका है। फुटबॉल ग्राउंड के चारों तरफ सिंथेटिक ट्रैक भी बिछाए गए हैं, जिससे खिलाड़ी अच्छी तरह से प्रैक्टिस कर सकें और ताज्जुब की बात यह है कि इंडियन फुटबॉल लीग का कैम्प और खिलाड़ियों की प्रैक्टिस इस जली हुई घास में करवाना फुटबॉल फैंस के लिए चिंता का विषय बताया जा रहा है।

राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव दिलीप सिंह ने बताया कि इस बारे में उन्हें जानकारी मिली है और जल्द ही इस ग्राउंड को फिर से दुरुस्त करवाया जाएगा। यह फुटबॉल ग्राउंड यूनाइटेड फुटबॉल क्लब का होम ग्राउंड है। इतनी महंगी घास की सुरक्षा और रखरखाव में इतनी बड़ी लापरवाही नहीं होनी चाहिए थी।

अब देखना ये है कि क्या राज्य सरकार, राजस्थान फुटबॉल संघ, राजस्थान यूनाइटेड फुटबाल क्लब जल्द से जल्द मैदान को ठीक करवा कर संतोष ट्रॉफी जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में करवा सकती है या हैदराबाद के फुटबाल मैदान पर जाने देगी?

संतोष ट्रॉफी का आयोजन वैशाली नगर स्थित रॉयल फुटबाल क्लब मैदान पर कराने का विचार

जयपुर 5 नवंबर। आरएफए सचिव दिलीप सिंह ने बताया कि इस मैदान पर राजमाता जीजाबाई राष्ट्रीय महिला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। भारतीय

महासंघ की ओर से इस ट्रॉफी का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान फुटबाल संघ, राजस्थान खेल परिषद और राजस्थान यूनाइटेड फुटबाल क्लब की संयुक्त मेजबानी थी। इसके बाद राजस्थान को संतोष ट्रॉफी और आई लीग फुटबॉल चैंपियनशिप की मेजबानी भी मिली है। अब मैदान पर आग लगने के कारण मैच के आयोजन पर संकट खड़ा हो गया। लंबे समय बाद कोई बड़ी प्रतियोगिता की मेजबानी राजस्थान को मिली थी, लेकिन ग्राउंड पर आग लग जाने के कारण अब मैचों के आयोजन को लेकर संकट खड़ा होता नजर आ रहा था लेकिन जयपुर में ही संतोष ट्रॉफी टूर्नामेंट कराने का प्रयास कर रहे है। राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने साफ किया कि अगर हम किसी कारण संतोष ट्रॉफी जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में नही करवा पाए तो वैशाली नगर स्थित रॉयल फुटबाल क्लब मैदान पर करवा सकते है। जिसके मालिक डॉ. दिलीप चुण्डावत है, उनसे बातचीत हो गई है साथ ही मैदान को संतोष ट्रॉफी टूर्नामेंट कराने के लिए तैयारियां जोर-शोर से चल रही है। कुछ दिनों बाद ऑल इंडिया फेडरेशन की तरफ से रॉयल फुटबाल मैदान को जांचने के लिये टेक्निकल अधिकारी अमित जयपुर आने वाले है।

'ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मजबूत वापसी कर सकता है भारत'

सिडनी, 5 नवम्बर। आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड का मानना है कि न्यूजीलैंड से श्रृंखला में करारी हार से भारत का आत्मविश्वास डगमगा गया होगा, लेकिन

उन्होंने अपनी टीम को आगाह करते हुए कहा कि भारतीय टीम अधिक आक्रामक होकर 22 नवंबर से शुरू होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में जोरदार वापसी कर सकती है। भारत को न्यूजीलैंड से तीनों मैच में हार का सामना करना पड़ा। यह पहला अवसर है जबकि घरेलू धरती पर तीन या इससे अधिक टेस्ट मैच की श्रृंखला में उसका सूपड़ा साफ हुआ। हेज़लवुड ने सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड से कहा, "वह (भारत) घायल शेर की तरह वापसी करने के लिए प्रतिबद्ध होगा। श्रृंखला शुरू होने पर ही हमें पता चलेगा की चीजें कैसे आगे बढ़ रही हैं।" घरेलू धरती पर हार न केवल भारत के टेस्ट क्रिकेट इतिहास के सबसे बुरे दौर में से एक है, बल्कि इससे रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम की अगले साल के विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिए क्वालीफाई करने की संभावनाओं को भी करारा झटका लगा है। लगातार तीन हार का मतलब है कि भारत ने डब्ल्यूटीसी तालिका में ऑस्ट्रेलिया से अपना शीर्ष स्थान गंवा दिया है।

अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के वोटर्स ट्रम्प के समर्थन में

हालांकि हैरिस भारतीय मूल की हैं पर इण्डो अमेरिकन वोटर्स को वे पसंद नहीं हैं

-अंजन राय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवंबर। अमेरिका की जनता मतदान करने जा रही है, ऐसे में एक स्पष्ट निर्णय यह सामने आया है कि अमेरिका के लोग डॉनल्ड ट्रम्प तथा कमला हैरिस के बीच आधे-आधे बंटे हुए हैं।

राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान कुछ आश्चर्यजनक बातें भी हुई हैं- पारंपरिक जनाधार बदल रहे हैं और नई वफादारियाँ उभर रही हैं। उदाहरण के लिए, अश्वेत मतदाताओं को लें, वे पारंपरिक रूप से हैरिस की डैमोक्रैटिक पार्टी के उम्मीदवारों के लिए मतदान करते थे।

लेकिन, इस बार मतदान ट्रम्प व हैरिस के बीच विभाजित है। इस बार कई अश्वेत मतदाता, डैमोक्रैटिक उम्मीदवार के लिए अपनी पारंपरिक पसंद के बजाय ट्रम्प के पक्ष में हैं।

दूसरी स्पष्ट बात यह है, बुद्धिजीवियों का समर्थन, हैरिस की तरफ इकट्ठा हो गया है और डॉनल्ड ट्रम्प का डटकर विरोध कर रहा है। इन लोगों को हैरिस का समर्थन करने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन ऐसा लगता है कि इन्होंने मुख्य रूप से ट्रम्प के प्रति नफरत के कारण ऐसा किया है। इस बार सभी बुद्धिजीवी हैरिस के झण्डे के पीछे एकजुट हो गए हैं।

- **इसका कारण यह भी है, कि कमला हैरिस अपने भारतीय मूल के होने का जिक्र करने से प्रायः कतराती हैं और भारतीय मूल के अमेरिकन वोटर्स पर भी प्रायः मौन ही रहती हैं। शायद उन पर, खुद को अमेरिका के प्रति पूर्ण निष्ठावान साबित करने का दबाव है।**
- **चुनावों में जहां बुद्धिजीवी वर्ग पूरी तरह से हैरिस के पक्ष में एक जुट है, वहीं, अश्वेत मतदाता, जो अब तक डैमोक्रेट्स का वोट बैंक था, ट्रम्प के पक्ष में दिख रहा है।**

भय यह है कि यदि ट्रम्प सत्ता में आ गए तो अमेरिकी लोगों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगेगा। वहीं, हैरिस स्वतंत्रता को बढ़ावा देंगी, जिससे हर क्षेत्र में मतभेद की गुंजाइश बढ़ सकती है।

भारतीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो, आश्चर्य की बात यह है कि भारतीय मूल के अमरीकी ट्रम्प के पीछे एकजुट हो रहे हैं। भारतीय अमरीकी जनता अब डैमोक्रैटिक पार्टी के मापदंडों के पीछे इकट्ठी नहीं हो रही है। कई भारतीय ट्रम्प के साथ हैं और उनका समर्थन कर रहे हैं।

भारतीय प्रवासियों को लुभाने के लिए ट्रम्प काफी समय से भारत समर्थक लाइन आगे कर रहे हैं। कुछ ही हफ्ते पहले ट्रम्प ने भारतीयों की कड़ी मेहनत करने की संस्कृति, शिक्षा में विश्वास तथा जन्मजात उद्यम को अमेरिका के लिए "ऐसेट" (संपत्ति) बताया था।

दूसरी तरफ, हैरिस ने हिन्दुओं और उनके उद्यमी गुणों के बारे में चुप्पी साध रखी है। हो सकता है कि हैरिस खुद को एक सच्ची अमेरिकी नागरिक के रूप में प्रोजैक्ट करने की उत्सुक रही हों। उन्होंने बार-बार कैलिफोर्निया में अपने स्कूल के दिनों का जिक्र किया और बताया कि कैसे वो नियमित रूप से बस से स्कूल ट्रिप्स पर जाया करती थीं।

उनकी कहानी मध्यम वर्ग के अमेरिका की है, जो बाद में बड़ी सफलता हासिल कर लेता है। दूसरी तरफ डॉनल्ड ट्रम्प को अपने पिता से हज़ारों-करोड़ों की संपत्ति विरासत में मिली थी और वे "वाइट सुप्रिमेसी" (श्वेत वर्चस्व) जैसे आंदोलनों में सबसे आगे रहे थे।

अपने कठोर रूढ़िवादी रूख के साथ, डॉनल्ड ट्रम्प एम.ए.जी.ए. (मेक अमेरिका ग्रेट अगेन) मूल्यों की बात कर रहे हैं और इन मूल्यों को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं। उधर हैरिस, यूरोप में अमेरिका के पारंपरिक मित्रों के प्रति अधिक उदार है।

माना जाता है कि हैरिस का चीन के साथ व्यवहार अधिक नरम है, जबकि ट्रम्प चीन को अमेरिका का "नम्बर वन" दुश्मन मानते हैं।

वे चीन के खिलाफ, हैरिस की तुलना में कहीं अधिक कठोर उपायों की बात कर रहे हैं, जैसे कि चीनी वस्तुओं और सेवाओं पर इतना अधिक उच्च स्तर का टैरिफ (शुल्क), जितना कि हैरिस सोच नहीं पातीं।

भारतीय मूल की होने के कारण, हैरिस को अपने अडॉप्टेड होम (दत्तक घर) के प्रति अपनी निष्ठा साबित करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती। अमेरिका के प्रति निष्ठा साबित करना हैरिस के लिए अधिक मुश्किल होगा।

इमिग्रेशन (अप्रवासन) के मुद्दे पर, हैरिस की तुलना में ट्रम्प अधिक सख्त होंगे। हैरिस, संसाधनों को जुटाने तथा अपमानता को कम करने के लिए उच्च आयात की बात करती हैं।

आर्थिक नीति में 'हैरिस, डॉनल्ड ट्रम्प की तुलना में, अमेरिकी अर्थव्यवस्था एवं एक्शन प्रोग्रामों की अधिक सकारात्मक तस्वीर पेश करती हैं।

संसद सत्र 25 नवम्बर को शुरू होगा

नयी दिल्ली, 05 नवंबर। सरकार ने संसद का शीतकालीन सत्र 25 नवंबर से 20 दिसंबर तक आयोजित कराने की मंगलवार को घोषणा की। इस दौरान 26 नवंबर को संविधान दिवस पर संसद के केन्द्रीय कक्ष में संविधान दिवस समारोह का आयोजन किया जायेगा।

- **शीतकालीन सत्र 20 दिसम्बर तक चलेगा।**

संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में यह जानकारी देते हुये कहा, भारत सरकार की सिफारिश पर माननीय राष्ट्रपति ने संसद के दोनों सदनों के शीतकालीन सत्र 25 नवंबर से 20 दिसंबर 2024 तक आहूत करने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है।

संसद की कार्यसूची के अनुसार, शीतकालीन सत्र की अवधि में संशोधन भी किया जा सकता है।

रिजिजू ने बताया कि 26 नवंबर को संविधान दिवस पर संविधान को अंगीकार किये जाने की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में एक समारोह संसद के केन्द्रीय कक्ष में आयोजित किया जायेगा।

फिर से भाजपा के हिंदुत्व आइकन बने योगी आदित्यनाथ

योगी का "बटेंगे तो कटेंगे" नारा काफी चर्चित हो रहा है

- श्रीनन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में भाजपा के खराब प्रदर्शन के बाद, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रतिष्ठा में भले ही कमी आ गई थी, लेकिन उन्होंने फिर से वापसी करते हुए, भाजपा में हिन्दुत्व के प्रतीक के रूप, अपना पूर्व कद फिर से हासिल कर लिया है।

- **योगी ने हरियाणा की एक चुनावी सभा में यह नारा दिया था, समझा जाता है कि इससे भाजपा को भारी लाभ हुआ हरियाणा में और अब महाराष्ट्र व झारखंड में भी योगी व उनका यह नारा काफी लोकप्रिय हो रहा है।**
- **संघ प्रमुख मोहन भागवत, महासचिव दत्तात्रेय होसबाले और प्रधानमंत्री मोदी तक योगी के इस नारे के प्रशंसक हैं तथा उन्होंने इसका समर्थन किया है।**

झारखण्ड और महाराष्ट्र विधान सभा चुनावों के प्रचार में योगी की जबरदस्त मांग हो रही है तथा उनका "बंटेंगे तो कटेंगे" नारा भाजपा के हल्कों में जबरदस्त हिट हो रहा है। मथुरा में 22 अक्टूबर को आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत के साथ हुई उनकी मीटिंग के दो दिन बाद, आर.एस.एस. के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले योगी की इस टिप्पणी को, उनके इस नारे को दोहराया था, जो योगी ने हरियाणा चुनावों में काम लिया था और काफी असरदार रहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी योगी के इस नारे का समर्थन किया बताते हैं।

रोचक बात यह है कि लोकसभा के चुनाव परिणामों के बाद, योगी 3 नवम्बर को प्रधानमंत्री से पहली बार मिले थे। इससे पूर्व, गत माह हरियाणा के मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के बाद, प्रधानमंत्री द्वारा बुलाई गई एन.डी.ए. के मुख्यमंत्रियों की मीटिंग में, वे प्रधानमंत्री के श्रोता के रूप में शामिल जरूर हुए थे। उस दिन, योगी ने गृहमंत्री अमित शाह तथा भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा के साथ लम्बी मीटिंग भी की थीं।

लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में हुई भाजपा की घोर पराजय के बाद के महीनों में, योगी कटघरे में खड़े कर दिये गये थे तथा पार्टी के खोजी लोग यह कहने लगे थे कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा उन्हें पार्टी के चेहरे के रूप में प्रोजेक्ट नहीं करेगी। हाल ही में, आर.एस.एस. और भाजपा के शीर्ष नेताओं के साथ हुई मुख्यमंत्री योगी की मीटिंग ऐसे संकेत दे रही हैं कि उन्होंने, कम से कम फिलहाल तो, अपने अस्तित्व के संकट पर विजय पा ली है।

योगी ने आज झारखंड में अपना प्रचार-अभियान कर दिया। उन्होंने एक दिन में तीन जनसभाएं संबोधित कीं। हजारी बाग की सभा में उन्होंने अपना नारा दोहराया : "ये समय बंटने का नहीं है। कांग्रेस ने 1947 से देश को बांटा है।" योगी का "बंटेंगे तो कटेंगे" नारे के महाराष्ट्र में भी गूंजने की संभावना है। महाराष्ट्र में योगी की सभाओं की तिथियों एवं स्थानों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

23 नवम्बर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लायेंगी। इसके परिणामस्वरूप, राहुल और प्रियंका की टीमों में टकराव की स्थिति भी बन सकती है।

संगठन में बदलाव अपेक्षित भी है तथा जब भी यह बदलाव होगा, उस समय यह देखना बड़ा रुचिकर होगा कि कौनसा नेता किस खेमे से जुड़ा हुआ है।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के बाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हासिल करना होगा। वर्तमान में 50 स्टेट्स हैं इसलिए जीतने के लिए 26 वोटों की जरूरत होगी। बारहवे संशोधन के इस प्रावधान का अमेरिका के इतिहास में सिर्फ एक बार सन् 1800 के चुनावों में इस्तेमाल हुआ था। यह एक दुर्लभ असाधारण घटना है। लेकिन समान मत मिलने की स्थिति से निपटने के लिए यह व्यवस्था की गई है।

ए.आई. ने चुनाव नतीजे आने के दौरान असंतोष बढ़ने की संभावना बताई। और चेतावनी दी है कि विरोध प्रदर्शन, मार्च, रैली जैसी घटनाएं हो सकती है। ए.आई. ने तनाव बढ़ने, हिंसा होने की चेतावनी दी। हाल ही में आए ए.बी.सी. न्यूज/इप्सॉस सर्वे के अनुसार सिर्फ 29 प्रतिशत अमेरिकन मानते हैं कि ट्रम्प हार स्वीकार कर लेंगे, इससे आशंका है कि चुनाव नतीजों के बाद हिंसा होगी। इसी के चलते वॉशिंगटन डी.सी. में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है। चुनाव देश को एकजुट करने की बजाय देश को बांट रहे हैं और अनिश्चितता बढ़ा रहे हैं। रॉयटर्स ने बताया कि जिन राज्यों में कडा मुकाबला है वहां के अधिकारी अफवाहों, साजिशों की खबरों, धमकियों व हिंसा की आशंका वाली खबरों पर भरोसा कर रहे हैं। फिलाडेल्फिया डैट्रॉयट और एटलांटा राज्य जिनके लिए ट्रम्प अक्सर फर्जी वोटिंग के दावे करते हैं, वहां अधिकारियों ने मतगणना प्रक्रिया की सुरक्षा के उपाय किए हैं। फिलाडेल्धिका में जहां मतगणना होनी है उस जगह की सुरक्षा के लिए कांटेदार बाड लगाई गई है। डैट्रॉयर और एटलांटा में मतदान केन्द्रों के खिड़की, दरवाजों पर बुलेटप्रूफ कांच लगाए हैं। विस्कोन्सिन में चुनाव कर्मियों को डीएस्केलेशन टैक्नीकस का प्रशिक्षण दिया गया है तथा मतदान केन्द्रों में बच निकलने का रास्ता बनाया। माहौल खराब होने की स्थिति को देखते हुए। एरिजोना, जहां 2020 में चुनाव में फर्जीवाडे के दावे किए गए थे, में प्रशासन झूठी अफवाहों से निपटने के लिए विशेष प्रयास कर रहा है, खासकर फर्जी वोटर्स की काल्पनिक तस्वीरों से। अन्य राज्यों को भी सुरक्षा को लेकर भारी चिंता है। रॉयटर्स ने बताया कि वॉशिंगटन के गवर्नर ने नैशनल गार्ड यूनिट्स को अलर्ट कर दिया है। यहां कमला हैरिस के भारी अंतर से जीतने की उम्मीद है। यह गत दिनों बैलेट बॉक्स जलाने की खबर आई थी। सी.एन.एन. ने बताया कि नेवाडा और ओरैगॉन में नैशनल गार्ड यूनिट्स को तैयार रखा गया है।

गार्जियन ने ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख किया जिसमें चुनाव प्रक्रिया को बाधित करने की कोशिश की गई थी, जिसमें ओरैगॉन व वॉशिंगटन की बैलेट बॉक्स जलाने, पैनसिल्वेनिया में बम की धमकी दिए जाने, सैन एंटोनियों में चुनाव कर्मी व वोटर के बीच हाथा पाई, और एरिज़ोना शेयर में हथियार बन्द आदमी की गिरफ्तारी घटनाएं प्रमुख हैं। उक्त व्यक्ति की साजिश बडे पैमाने पर हिंसा करने की थी।

इन्टरनैशनल क्राईसिस ग्रुप (आई.सी.जी.) ने चेतावनी दी है कि चुनाव सम्बन्धी हिंसा की संभावना बहुत ज्यादा है। बडे पैमाने पर दलगत ध्रुवीकरण होने से नतीजों को अस्तित्व से जोड़ कर देखा जा रहा है। राजनैतिक हिंसा के प्रति समर्थन बढ़ता जा रहा है। अप्रैल में हुए एन.पी.आर./पी.बी.एस. पोल के अनुसार 20 प्रतिशत अमेरिकन मानते है कि देश को ठीक करने के लिए हिंसा जरूरी है।

एजुकेशन प्री-समिट में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाग लेंगे

जयपुर, 5 नवंबर। राइज़िंग राजस्थान से पूर्व, उच्च शिक्षा, स्कूल शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कौशल एवं उद्यिमता विभाग तथा खेल एवं युवा मामलात के संयुक्त तत्वावधान में 6 नवंबर को "एजुकेशन प्री-समिट 2024" का आयोजन होगा।

होटल इंटरकॉन्टिनेंटल, टोंक रोड, जयपुर में होने वाले इस शिक्षा सम्मेलन में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मुख्य अतिथि होंगे तथा उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, उद्योग एवं वाणिज्य, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, युवा मामले एवं खेल, कौशल, योजना एवं उद्यिमता विभाग और शिक्षा मंत्री मदन दिलावर भी शिरकत करेंगे।

समिट का मुख्य उद्देश्य, शिक्षा क्षेत्र में नवाचार, डिजिटल तकनीकों का उपयोग और निवेश की संभावनाओं पर गहन चर्चा करना है। प्री-समिट की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। तैयारियों के मद्देनज़र, कृष्ण कुणाल, स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय, पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग, नीरज के. पवन, शासन सचिव खेल एवं युवा मामले विभाग, डॉ.आरुषी ए. मलिक शासन सचिव, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, अविचल चतुर्वेदी, राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त स्कूल शिक्षा परिषद सहित विभाग के उच्चाधिकारियों ने आयोजन स्थल पर पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

- **आज हो रहे इस प्री-समिट में शिक्षा के क्षेत्र के नवाचार, डिजिटल तकनीकों का उपयोग तथा निवेश की सम्भावनाओं पर गहन चिन्तन होगा।**

'यूपी मदरसा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हुए, इससे संबंधित इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द कर दिया।

शीर्ष अदालत ने कहा कि मदरसा एक्ट मदरसा शिक्षा के लिए वैध ढ़ांचा उपलब्ध करा रहा है, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम के अलावा, धार्मिक शिक्षा का भी प्रावधान किया गया है।

अदालत ने कहा कि मदरसों द्वारा उच्च शिक्षा की डिग्री देना गैर कानूनी है क्योंकि यह यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन (यू.जी.सी.) एक्ट, 1956 के प्रावधानों के अनुकूल नहीं है।

मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला तथा मनोज मिश्रा की बैंच ने कहा कि जहां "मदरसा एक्ट राज्य विधायिका की वैधानिक क्षमता के अन्दर है", वहीं अधिनियम में "फाजिल" और "कामिल" के तेहत उच्च शिक्षा की डिग्री देना राज्य के दायरे में नहीं है यह यू. जी. सी. एक्ट की धारा 22 के प्रतिकूल है। यू.जी.सी. एक्ट उच्च शिक्षा के मानक एवं स्तर निर्धारित करता है तथा राज्य की विधायिका यू.जी.सी. एक्ट के प्रतिकूल उच्च शिक्षा को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं कर सकती।"

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, "राज्य सरकार के अनुमोदन के साथ, बोर्ड ऐसे नियम बना सकता है, जो यह सुनिश्चित करें कि धार्मिक अल्पसंख्यक संस्थाएं, अपने अल्पसंख्यक चरित्र को नष्ट किए बिना, अपेक्षित स्तर की धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करेंगी।"

सी.बी.आई. ने छापों में 50 लाख रुपए बरामद किये

रांची, 05 नवंबर। झारखंड में विधानसभा चुनाव से आठ दिन पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के करीबी और उनके विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। सी.बी.आई. ने पंकज मिश्रा के करीबियों के 20 ठिकानों पर छापेमारी कर 50 लाख रुपये कैश जब्त किया है। सीबीआई सूत्रों ने बताया कि अवैध खनन मामले में झारखंड, पश्चिम बंगाल और बिहार सहित 3 राज्यों में 20 स्थानों पर छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान 50 लाख रुपये नकद, एक किलो सोना और चांदी के कुछ आभूषण बरामद किए गए हैं। जानकारी के अनुसार, साहिबगंज के 11 जगहों पर छापेमारी हुई तो रांची में 3 और कोलकाता और पटना में एक-एक जगह पर रेड किया गया।

- **जिन पर छापे पड़े वे सभी हेमन्त सोरेन के करीबी, पंकज मिश्रा के नज़दीकी सहयोगी हैं।**

पंकज मिश्रा बरहट विधानसभा के विधायक हेमंत सोरेन के प्रतिनिधि हैं। पंकज मिश्रा और कई लोगों के खिलाफ अवैध खनन मामले में सी.बी.आई. ने 2023 में एफ.आई.आर. दर्ज की थी।

योगेन्द्र पवार को नेतृत्व सौंपने का संकेत दिया शरद पवार ने

उन्होंने कहा, 30 साल मैंने जिम्मेवारी निभाई, 30 साल अजित को सौंपी, अब 30 साल योगेन्द्र को देने का समय आ गया

मुबंई, 05 नवंबर। महाराष्ट्र में एक तरफ 20 नवंबर को मतदान होना है। वहीं दूसरी तरफ एन.सी.पी. (एस.पी.) के नेता शरद पवार ने अपने भाषण के माध्यम से अलग ही संकेत दिया है। बारामती जिले के सुपा गांव में चुनाव प्रचार के दौरान अपने संबोधन में शरद पवार ने स्पष्ट संकेत दिया कि अब बारामती, के लिए विकास के लिए अगले 30 साल की व्यवस्था करनी होगी। इसलिए अब यूगेंद्र पवार जैसे नए नेतृत्व की जरूरत है। बातों ही बातों में उन्होंने संकेत देते हुए कहा कि जिस तरह 30 साल पहले मैंने अजित पवार पर बारामती की जिम्मेदारी सौंपी थी, अब एक बार फिर वक्त आ गया है कि यूगेंद्र पवार अगले 30 साल बारामती का प्रतिनिधित्व करें।

- **शरद पवार ने कहा कि मैं 14 बार चुनाव लड़ चुका हूँ, और कितनी बार लडूंगा, कहीं न कहीं तो रूकना ही पड़ेगा।**

अपने भाषण में शरद पवार ने कहा, मैं लोकसभा में आप लोगों के दम पर चुनकर गया हूं। लेकिन मैंने तय किया अब लोकसभा चुनाव में नहीं लडूंगा, 25-30 साल लगातार चुनाव जीतने के बाद नई पीढ़ ी को जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए। इसलिए 30 साल पहले मैंने यह फैसला किया कि अब मैं लोकसभा का चुनाव नहीं लडूंगा और यहां की राजनीति पर अब मैं ध्यान नहीं दूंगा और मैंने सारी जिम्मेदारी अजित दादा पवार को सौंप दी थी। बीते 25-30 साल से यह जिम्मेदारी अजित दादा पर है। यानी कि पहले के 30 साल यह जिम्मेदारी मुझपर थी और उसके बाद अगले 30 साल अजित दादा पर थी।

उन्होंने कहा, यही कारण है कि अब अगले 30 साल की व्यवस्था करने की जरूरत है। अगर यह व्यवस्था करनी है तो फिर लोगों के बीच जाकर लोगों की समस्या को समझने और नज़रिया होने की जरूरत है। शरद पवार ने कहा कि वह 14 बार चुनाव लड़ चुके हैं, और कितनी बार चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि कहीं न कहीं जाकर तो उन्हें रुकना ही पड़ेगा।

शरद पवार ने कहा कि मैं सत्ता में नहीं हूं, लेकिन राज्यसभा में जरूर हूं। अभी डेढ़ साल और बाकी हैं। लेकिन इस डेढ़ साल के बाद अब राज्यसभा में जाना है या नहीं, इसका विचार करना पड़ेगा। मैं लोकसभा चुनाव तो नहीं लडूंगा और ना ही कोई अन्य इलेक्शन लडूंगा। कितनी बार चुनाव लड़ेंगे?

"जे.एम.एम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

डागा की जनसभाओं में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, सत्तारूढ़ झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, जे.एम.एम. का वास्तव में अर्थ "जमकर मलाई मारो" है, अन्यथा जे.एम.एम. के नेताओं और उनके पी.ए. ने करोड़ों रुपए कैसे जमा किए होते।

उन्होंने कहा, नया राज्य बनने के बाद से अब तक झारखण्ड में 13 मुख्यमंत्री बन चुके हैं और उनमें से कई जेल गए, जबकि, भाजपा का एक भी मुख्यमंत्री जेल नहीं गया। उन्होंने कहा, जे.एम.एम. की डूबती नाव पर कोई नहीं चढ़ना चाहता, और इसीलिए नई सरकार भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. की होगी।

राजनाथ सिंह ने पिछड़े आदिवासियों के लिए बनाई गई प्रधानमंत्री जनमन योजना की बात की। उन्होंने कहा, साठ हजार आदिवासी गांवों को विकसित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम लॉन्च किया गया है। उन्होंने कहा, इस बात की जांच होनी चाहिए कि आदिवासी, जो राज्य में सबसे ज्यादा थे, उनकी आबादी घटकर 28 प्रतिशत ही कैसे रह गई है।

उन्होंने यह भी खुलासा किया कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने लंदन के बैंक में 102 टन सोना "गिरवी" रखा था, जिसे मोदी सरकार धनतेरस के बाद वापस ले आई है।

रक्षा मंत्री ने यह घोषणा भी की कि गोगो दीदी योजना से हर महिला को हर महीने ग्यारह तारीख को 2100 रूपए मिलेंगे। इसके अलावा महिलाओं को 500 रूपए में रसोई गैस सिलैण्डर तथा 2 सिलैण्डर मुफ्त मिलेंगे।

धारीवाल पर फिर से चलेगा एकल पट्टे का मुकदमा

जयपुर, 5 नवंबर। प्रदेश के चर्चित एकल पट्टा प्रकरण में पूर्व मंत्री शांति धारीवाल की मुश्किलें एक बार फिर बढ़ गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में राजस्थान हाईकोर्ट के उन आदेशों को रद्द कर दिया है, जिनके तहत तत्कालीन यू.डी.एच. मंत्री शांति धारीवाल के खिलाफ दर्ज एफ.आई.आर. और अदालती कार्रवाई को निरस्त करने के साथ ही. पूर्व आई.ए.एस. जी.एस. संधू सहित अन्य अधिकारियों के खिलाफ मुकदमा वापस लेने को हरी झंडी दी गई थी। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की खंडपीठ ने यह आदेश अशोक पाठक की स्पैशल लीव पिटीशन (एस.एल.पी.) पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने हाईकोर्ट को कहा है कि वह प्रकरण की पुन: सुनवाई कर छह माह में उचित आदेश पारित करे।

- **सुप्रीम कोर्ट ने शांति धारीवाल व अधिकारियों को राहत देने वाले राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश को निरस्त कर हाईकोर्ट को पुनः सुनवाई कर 6 माह में उचित आदेश पारित करने को कहा।**

सुप्रीम कोर्ट में राज्य सरकार की ओर से पक्ष रखने वाले अतिरिक्त महाधिवक्ता शिव मंगल शर्मा ने बताया कि गत अप्रैल माह में राज्य सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश शपथ पत्र में प्रकरण में कोई आपराधिक मामला नहीं बनने की बात कही थी, लेकिन इस दौरान उनसे सलाह नहीं ली गई। वहीं, अब नया शपथ पत्र पेश कर हाईकोर्ट के आदेशों को रद्द करने की गुहार की गई थी। अति. महाधिवक्ता शर्मा ने बताया कि मामले में ए.सी.बी. ने तीन क्लोजर रिपोर्ट अदालत में पेश की थीं, वे धारीवाल सहित अन्य अधिकारियों से प्रभावित थीं। इन रिपोर्ट में सभी तथ्यों को शामिल नहीं किया गया था। ऐसे में ए.सी.बी. कोर्ट ने दो क्लोजर रिपोर्ट को खारिज कर दिया था और तीसरी पर कोई निर्णय नहीं हुआ था। इस दौरान मामला हाईकोर्ट चला गया। हाईकोर्ट ने गत जनवरी माह में पूर्व आई.ए.एस. जी.एस. संधू, निष्काम दिवाकर और ओंकार मल सैनी के खिलाफ मुकदमा वापस लेने को सही माना और धारीवाल के खिलाफ प्रकरण खारिज कर दिया। हाईकोर्ट के इस आदेश के खिलाफ आर.टी.आई. कार्यकर्ता अशोक पाठक ने सुप्रीम कोर्ट में एस.एल.पी. दायर की थी, जिसमें कहा था कि शिकायतकर्ता से राजीनामे के आधार पर केस को रद्द नहीं किया जा सकता।

मामले के अनुसार, साल 2014 में रामशरण सिंह की ओर से गणपति कंस्ट्रक्शन कंपनी को एकल पट्टा जारी करने में धांधली का आरोप लगाते हुए ए.सी.बी. में शिकायत दी गई थी। ए.सी.बी. ने यू.डी.एच. के तत्कालीन सचिव जी.एस. संधू, जे.डी.ए. ज़ोन-10 के तत्कालीन उपायुक्त ओंकारमल सैनी और निष्काम दिवाकर सहित अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया था। हाईकोर्ट ने 15 नवंबर, 2022 को आदेश जारी कर ए.सी.बी. में दर्ज एफ.आई.आर. और ए.सी.बी. कोर्ट में चल रही कार्रवाई तक को रद्द कर दिया था। इसके बाद हाईकोर्ट ने संधू सहित अन्य अधिकारियों के खिलाफ लंबित मुकदमा वापस लेने को हरी झंडी दे दी थी। इन दोनों आदेशों को अशोक पाठक ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

सी.बी.आई. ने छापों में 50 लाख रुपए बरामद किये

रांची, 05 नवंबर। झारखंड में विधानसभा चुनाव से आठ दिन पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के करीबी और उनके विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। सी.बी.आई. ने पंकज मिश्रा के करीबियों के 20 ठिकानों पर छापेमारी कर 50 लाख रुपये कैश जब्त किया है। सीबीआई सूत्रों ने बताया कि अवैध खनन मामले में झारखंड, पश्चिम बंगाल और बिहार सहित 3 राज्यों में 20 स्थानों पर छापेमारी की गई।

छापेमारी के दौरान 50 लाख रुपये नकद, एक किलो सोना और चांदी के कुछ आभूषण बरामद किए गए हैं।

- जिन पर छापे पड़े वे सभी हेमन्त सोरेन के करीबी, पंकज मिश्रा के नज़दीकी सहयोगी हैं।

जानकारी के अनुसार, साहिबगंज के 11 जगहों पर छापेमारी हुई तो रांची में 3 और कोलकाता और पटना में एक-एक जगह पर रेड किया गया।

पंकज मिश्रा बरहट विधानसभा के विधायक हेमंत सोरेन के प्रतिनिधि हैं। पंकज मिश्रा और कई लोगों के खिलाफ अवैध खनन मामले में सी.बी.आई. ने 2023 में एफ.आई.आर. दर्ज की थी।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908